पवित्र आत्मा का कार्य

लेखक
जे. सी. चोट

अनुवादक
फ्रांसिस डेविड

Published by

CHURCH OF CHRIST
Box 4398
New Delhi-110019

The Work of the HOLY SPIRIT

By
J.C. Choate

Hindi Translation By
Francis David

Published by

CHURCH OF CHRIST
Box 4398
New Delhi-110019
E-mail: vinay_david2002@yahoo.co.in
davidfrancis53@rediffmail.com

प्रकाशक:
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 4398
नई दिल्ली-110019

Published by
Church of Christ
Box 4398
New Delhi-110019
E-mail: vinay_david2002@yahoo.co.in
davidfrancis53@rediffmail.com

Printed at
Simran Print House, New Delhi.

परिचय

धार्मिक संसार में आज पवित्र आत्मा के विषय में बहुत सारी गलतफहमियां फैली हुई हैं। और इसका मुख्य कारण यह है कि लोग अपनी बाइबल को पढ़ते नहीं हैं और यदि पढ़ते भी हैं, तो उन्होंने पहले से ही अपने मन में इसके बारे में अनुचित धारणाएं बना रखी हैं। यह विषय इतना जटिल है कि लोग इसका अध्ययन करते समय बड़े भावुक हो जाते हैं और कई बार ऐसा होता है कि इसके विषय में जो वास्तविक्ताएं हैं उन्हें वे सुनना ही नहीं चाहते।

एक और बात जो अक्सर देखने में आती है कि लोग स्वयं इसका अध्ययन करने के बजाय बाइबल टीचरों तथा चर्च के लीडरों से पूछते हैं तथा उन पर अधिक निर्भर रहते हैं। क्योंकि हमारा विचार ऐसा है कि यह बाइबल सिखाने वाले तो गलती कर ही नही सकते। परन्तु हमें यह देखना चाहिए कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है?

पवित्र आत्मा के विषय में यदि हम उचित रूप से जानना चाहते हैं तब हमें बड़ी ईमानदारी से अपनी बाइबल की ओर जाना पड़ेगा। तमाम पूर्वद्वेष विचारों को अपने मन से निकाल दें। परमेश्वर का वचन पवित्रात्मा के विषय में आपको सब कुछ सफ़ाई से बतायेगा। हमारे पास समस्या तब आती है जब हम वचन की ओर न जाकर मनुष्य के पास जाते हैं तथा उनके द्वारा बताई गई बातों पर हमें अधिक भरोसा होता है।

प्रस्तुत पुस्तक ''पवित्र आत्मा का कार्य'' भाई जे.सी. चोट द्वारा लिखी गई है तथा मुझे इसे अनुवाद करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। भाई चोट ने इस विषय पर गलतफहमियों को दूर करने का भरसक प्रयास किया है। प्रत्येक बात को उन्होंने बाइबल की आयतों से सपोर्ट

किया है, क्योंकि अन्त में हमारा न्याय केवल बाइबल पर आधारित होगा। यीशु ने कहा था, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है : अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।'' (यूहन्ना 12:48)।

न्याय के दिन अपनी ग़लती हम शैतान पर नहीं थोपेगें; बल्कि हम इस बात के स्वयं जिम्मेवार होंगे। क्योंकि हमने परमेश्वर के वचन की बातों को वैसे नहीं माना जैसे वह चाहता है।

भाई फ्रांसिस डेविड
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली-110019

अनुक्रम

	परिचय	5
1	पवित्र आत्मा से परिचय	9
2	पवित्र आत्मा का कार्य	14
3	पवित्र आत्मा के नाम	18
4	वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा	23
5	सहायक भेजने की प्रतिज्ञा	27
6	पवित्र आत्मा का बपतिस्मा	31
7	पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसे मिला?	36
8	कुरनेलियुस तथा उसके परिवार ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था	41
9	हाथ रखने के द्वारा पवित्र आत्मा को देना	47
10	शमौन जादू-टोना करने वाले को पवित्र आत्मा की सामर्थ क्यों नहीं दी गई?	52
11	पवित्र आत्मा का दान	57
12	क्या पवित्र आत्मा का दान आश्चर्यकर्म करने के लिये था?	62
13	आत्मिक वरदान	67
14	दुष्टात्माओं को निकालना	72
15	ईश्वरीय चंगाई	77

16	अन्य भाषाओं में बात करना	82
17	आज परमेश्वर मनुष्य से किसके द्वारा बात करता है?	87
18	प्रचार के लिये बुलाहट	92
19	मन परिवर्तन में पवित्र आत्मा का कार्य	97
20	''और विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे''	102
21	ईश्वरीय चंगाई	107
22	आत्मा की एकता	112
23	आत्मा के फल	117
24	पवित्र आत्मा के विरोध में पाप	122
25	तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो?	127
26	''परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा''	132

पाठ-1
पवित्र आत्मा से परिचय

पवित्र आत्मा के विषय में हम कुछ पाठों को इस श्रृंखला में देखेंगे। हमारा उद्देश्य यह होगा कि हम उसके विषय में तथा उसके कार्य के विषय में देखें तथा एक विशेष उद्देश्य हमारा यह भी होगा कि पवित्र आत्मा के विषय में जो झूठी शिक्षायें तथा अनुचित गलतफहमियां या धारणाएं हैं उन्हें लोगों को बता सकें।

हमारे इस अध्ययन में लगभग दो दर्जन पाठों को हम देखेंगे तथा प्रत्येक अध्ययन में हम कुछ सत्यों को देखेंगे जो पवित्र बाइबल पर आधारित हैं। इस विशेष अध्ययन को हम दो तीन पाठों में अच्छी तरह से नहीं देख सकेंगे इसलिये हम चाहते हैं कि इसका अध्ययन विस्तार से करें।

अपने इस अध्ययन में हम सबसे पहिले पवित्र आत्मा का परिचय देंगे। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि वह कौन है, वह कहां से आया? इस संसार में उसका कार्य क्या है तथा और भी अन्य बातों को हम देखेंगे।

सबसे पहिले हमें यह समझना चाहिए कि ईश्वरत्व (godhead) में पवित्र आत्मा तीसरा व्यक्ति है। पहिले परमेश्वर है, और फिर प्रभु यीशु तथा पवित्रात्मा। प्रभु यीशु ने जब अपने चेलों से प्रचार के लिये सारे जगत में जाने के लिये कहा था, तब उसने अपने चेलों को यह आज्ञा दी थी, ''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।'' (मत्ती 28:19)। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि, ''एक ही परमेश्वर है, एक ही आत्मा है तथा एक ही प्रभु है।'' (इफिसियों 4:4-6)।

रोम में मसीहीयों को लिखते हुए वह कहता है, ''और हे भाईयों, मैं यीशु मसीह का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के प्रेम का

स्मरण दिला कर तुम से बिनती करता हूं, कि मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो।'' (रोमियों 15:30)। फिर 2 कुरि. 13:14 में वह इनके विषय में लिखते हुए कहता है, ''प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम ओर पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे। कई लोग परमेश्वर, यीशु तथा पवित्र आत्मा को ''ट्रिनटी'' (trinity) भी कहते हैं। क्योंकि यह तीन व्यक्तित्व हैं। यद्यपि इसमें तीन व्यक्ति हैं पर यह तीनों एक हैं। कई लोगों को यह समझना बड़ा कठिन सा लगता है। और कुछ यह विश्वास करते हैं कि यह तीन परमेश्वर हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यीशु परमेश्वर है, पिता है तथा पवित्र आत्मा है। इस शिक्षा को ''जीसस ऑनली'' जैसी शिक्षा के नाम से जाना जाता है जो कि एक झूठी शिक्षा है। यद्यपि हमारे लिये यह समझना कठिन है कि किस प्रकार से यह एक परमेश्वर है। एक मसीह है तथा एक पवित्र आत्मा है, जबकि तीन व्यक्ति है, परन्तु बाइबल हमें सिखाती है कि यह तीनों एक हैं।

परमेश्वर, यीशु तथा पवित्र आत्मा को समझाने के लिये ट्रिनटी शब्द का इस्तेमाल बाईबल में नहीं हुआ है, परन्तु यह बताया गया है, कि यह ''ईश्वरत्व'' है। प्रेरित पौलूस अथेने नामक स्थान पर लोगों को बताता है, ''सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व, सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हो। (प्रेरितों 17:29)। जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते उनसे बोलते हुए पौलूस कहता है, ''क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरूत्तर हैं।'' (रोमियों 1:20)। यीशु के विषय में बोलते हुए वह कहता है, ''क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। (कुलु. 1:9)। ईश्वरत्व जो इस पद में हम देखते हैं वह है पिता परमेश्वर, प्रभु यीशु तथा पवित्र आत्मा।

परन्तु प्रश्न यह है कि ईश्वरत्व कब से विद्यमान है? इसके विषय में हम जगत की उत्पत्ति के समय से देखते हैं अर्थात यह जगत की उत्पत्ति से पहिले विद्यमान थे, और यह स्वभाव में अनन्त हैं। हम बाइबल के पहिले पद में पढ़ते हैं, ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।'' (उत्पत्ति 1:1)। परमेश्वर को इब्रानी भाषा में जिस प्रकार से इस्तेमाल किया गया है वो है, परमेश्वर पिता, यीशु पुत्र तथा पवित्र आत्मा। हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने कहा था, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाए।'' (उत्पत्ति 1:26)।

दाऊद ने इस प्रकार से लिखा था, ''फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं, और तू धरती को नया कर देता है।'' (भजन 104:30)। अय्यूब कहता है, ''मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।'' (अय्यूब 33:4)। यूहन्ना कहता है, ''आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। (यूहन्ना 1:1-3)। मैं सोचता हूं कि इन पदों से हम ईश्वरतत्व के विषय में जान सकते हैं कि वे आरम्भ से थे। यदि हम ईश्वरत्व के प्रत्येक सदस्य को देखें तो हमें पता चलेगा कि प्रत्येक के पास एक कार्य करने को है। इस बात को हम पुराने तथा नये नियम में देखते हैं। पवित्र आत्मा ने पवित्र जनों की पवित्रशास्त्र को लिखने में अगुवाई की थी। पतरस ने लिखा था, ''कि उसने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं। और जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी। और हमारे पास जो भविष्यदूक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा और तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक

दिया है, जो अन्धियारे स्थान में, उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भौर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (2 पतरस 1:17-21)। आप इन सारी आयतों में देख सकते हैं कि ईश्वरत्व के सारे सदस्यों का इसमें वर्णन है परन्तु विशेषकर इनमें पवित्र आत्मा का वर्णन है जिसने वचन को देने में अगुवाई की थी। पौलूस ने यह बात लिखकर कहा था, ''हर एक पवित्रशास्त्र, परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' (2 तीमु. 3:16-17)।

ऐसा कहा जाता है कि पुराने नियम में पवित्र आत्मा का वर्णन 88 बार हुआ है तथा 18 नामों से उसके विषय में बताया गया है। और नये नियम में 264 बार वर्णन हुआ है तथा 39 विभिन्न नामों से जाना जाता है। तथा यह भी कहा जाता है कि 5 नाम इन नामों में दोनों पुराने तथा नियम में अक्सर इस्तेमाल हुए हैं। और 52 विभिन्न नाम पवित्र आत्मा के लिए इस्तेमाल हुए हैं।

पवित्र आत्मा को अक्सर अजीब सी शक्ति करके दिखाया जाता है, परन्तु बाइबल उसे एक ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में दिखाती है। वह शोकित या दु:खी हो सकता है। (इफिसियों 4:30), वह मनों का जांचने वाला है, (रोमियों 8:27), वह बोलता या बातें करता है। (1 तीमु. 4:1), वह दुर्बलता में हमारी सहायता करता है। (रोमियों 8:26)।

जैसा कि आपने देखा कि पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कुछ सीखा जा सकता है। परन्तु यह एक शुरूआत है। इसके विषय में आगे हम और बहुत कुछ देखेंगे।

यदि आप एक मसीही नहीं हैं तो हम आपको इस बात के लिये उत्साहित करेंगे कि इसके विषय में आप विचार कीजिये। अपने वचन में पवित्र आत्मा ने यह प्रगट किया है कि मसीही बनने के लिये आपको क्या करना है। यानि परमेश्वर की इच्छा को सुनना है (रोमियों 10:17), परमेश्वर तथा यीशु में विश्वास करना है (यूहन्ना 14:1-3), अपने पापों से मन फिराना है। (प्रेरितों 17:30), यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर सबके सामने यह अंगीकार करना है (मत्ती 10:32) तथा पानी में डूब का बपतिस्मा लेना है (मरकुस 16:16)। जब आप ऐसा करेंगे तब प्रभु आपका उद्धार करेगा तथा अपनी मण्डली में आपको मिला देगा, जो उसका परिवार है अर्थात मसीह की कलीसिया। (प्रेरितों 2:47)।

पाठ–2
पवित्र आत्मा का कार्य

''पवित्र आत्मा का कार्य'' के अध्ययन को हम जारी रखेंगे। इस सबंध में विस्तृत अध्ययन इसलिये भी आवश्यक है क्योंकि अधिकतर, लोग पवित्र आत्मा तथा उसके कार्य के विषय में कई ग़लत धारणाएं रखते हैं। दुनिया में कई लोग तो ऐसे भी है जो पवित्र आत्मा में विश्वास ही नहीं करते तथा उसके कार्य को स्वीकार नहीं करते। कुछ लोग इतने आगे बढ़ जाते हैं कि वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा आज बहुत सारे आश्चर्यकर्म करता है। परन्तु बाइबल इसके विषय में क्या कहती है?

अपने पिछले पाठ में हमने यह दिखाया था कि किस प्रकार से पवित्र आत्मा एक व्यक्तित्व है, जो कि ईश्वरत्व में तीसरा व्यक्ति है। परमेश्वर तथा यीशु की तरह वह है और सदा रहेगा। जब सृष्टि की रचना हुई थी तब भी पवित्र आत्मा उसमें शामिल था। इसलिये अब हम इस अध्ययन को जारी रखेंगे कि यीशु के समय में उसका आना, तथा प्रेरितों के समय में उसका कार्य क्या था?

यीशु के जन्म के विषय में हम पढ़ते हैं, ''अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इक्ट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की। जब वह इन बातों के विषय में सोच ही रहा था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, हे युसूफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। यह सब कुछ इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यदूक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो कि, देखो

एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिसका अर्थ है, ''परमेश्वर हमारे साथ'' सो यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया। और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया और उस ने उसका नाम यीशु रखा।'' (मत्ती 1:18-25)। इसमें पवित्र आत्मा के कार्य को ध्यान से देखिये क्योंकि पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यदूक्ता को अपनी प्रेरणा से यह बताया था कि, ''एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल होगा।'' बाद में हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से मरियम एक बच्चे को जन्म देती है। लूका रचित सुसमाचार में हम पढ़ते हैं कि जकरयाह तथा इलीशिबा के यहां भी पवित्र आत्मा की सामर्थ से एक बच्चे का जन्म हुआ था, जिसका नाम यूहन्ना था और बाद में जिसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के नाम से जाना गया। क्योंकि जो लोग परमेश्वर की इच्छा का पालन करना चाहते थे वह उन्हें बपतिस्मा देता था। वह यीशु मसीह से पहिले आकर प्रभु का मार्ग तैयार कर रहा था। उसने कहा था, ''कि मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूं, परन्तु वह आने वाला है, जो मुझ से शक्तिमान है, मैं तो इस योग्य भी नहीं, कि उसके जूतों का बन्ध खोल सकूं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप, उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा और गेहूं को अपने खेत में इक्ट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा। (लूका. 3:16-17) फिर हम आगे पढ़ते हैं, ''उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उसने उसकी बात मान ली। ''और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया;

और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।'' (मत्ती 3:11-17)। जैसे कि हमने पहिले देखा था कि मरियम पवित्र आत्मा की सामर्थ से गर्भवती हुई और उसने यीशु को जन्म दिया। यीशु ने बपतिस्मा लेकर एक उदाहरण रखा तथा परमेश्वर उससे बहुत प्रसन्न था और इसीलिये उसने कहा कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।

मत्ती के चार अध्याय में यीशु के विषय में लिखा है, ''तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इबलीस या शैतान से उसकी परीक्षा हो'' (मत्ती 4:1)।

यूहन्ना 3:34 में यीशु को आत्मा नाप नापकर नहीं मिला था। इसका अर्थ यह हुआ कि जब यीशु को आत्मा बिना किसी नाप के मिला, तब परमेश्वर के आत्मा के लिये उसके लिये कोई सीमा नहीं थीं। परन्तु इसे हम ऐसे भी देखते हैं कि जब यीशु को आत्मा बिना नाप के मिला तब दूसरों को यह नाप कर प्राप्त होता है अर्थात उनके लिये इसकी सीमा है कि वे पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ क्या कर सकते हैं।

यीशु ने अपने 12 चेलों को चुना था ताकि उसके जाने के पश्चात वे उसके कार्य को आगे बढ़ा सकें। इन चेलों को प्रेरित भी कहा गया था। अर्थात् वे यीशु के साथ रहे थे और उसके जी उठने के गवाह भी थे। उसने उनसे कहा था, ''तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि, मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा परन्तु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।'' (यूहन्ना 16:7)। तथा आगे वह कहता है, ''परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।'' (यूहन्ना 16:13)।

फिर वह कहता है, ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब बातें तुम्हें स्मरण कराएगा (यूहन्ना 14:26)

यूहन्ना के अनुसार सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा बहुत से कार्य करेगा, और वे कार्य करेगा जिनके विषय में हम प्रेरितों 2 अध्याय में पढ़ते हैं। जब प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया तब वे अन्य भाषा बोलने लगे तथा लोगों के बीच आश्चर्यकर्म करने लगे ताकि लोग यीशु में विश्वास करके उसके पास आयें और लोग यह जान सकें कि उन्हें परमेश्वर ने भेजा है।

प्रेरितों ने कुछ लोगों पर हाथ रखें थे ताकि वे भी आश्चर्यकर्मों को कर सकें तथा पवित्र आत्मा ने उन लोगों को सामर्थ दी थी ताकि वे आश्चर्यकर्मों को कर सकें। जबकि प्रेरितों को पवित्र आत्मा की सामर्थ बपतिस्मे द्वारा मिली थी परन्तु जिन लोगों पर उन्होंने हाथ रखे थे उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ सीधे हाथ रखने से मिली थी। यद्यपि प्रेरित कुछ चुने हुए लोगों पर ही हाथ रख सके ताकि उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। परन्तु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जिनके उपर हाथ रखे गये थे वे इस सामर्थ को दूसरों को नहीं दे सकते थे। प्रेरितों 2:38 में जो पवित्र आत्मा का दान मिला था वह सबको मिला था लेकिन उसका उद्देश्य आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देना नहीं था।

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के द्वारा तथा उनके द्वारा कार्य किया जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे। इसीलिये वे आश्चर्यकर्म करने योग्य हो सके। नया नियम आने के पश्चात आत्मा ने वचन की शिक्षा के द्वारा कार्य करना शुरू कर दिया था। जबकि हम पवित्र आत्मा के विषय में अध्ययन कर रहें हैं हम इन बातों के विषय और देखेंगे।

हम आपको प्रोत्साहित करेंगे कि आप वचन की बातों को सुनें। परमेश्वर में विश्वास करें, अपने पापों से पश्चाताप करें, यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर अंगीकार करें तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। जब आप ऐसा करेंगे तब प्रभु आपको अपनी कलीसिया या मण्डली में मिलाएगा तथा आपका उद्धार होगा और आपको पवित्र आत्मा का दान प्राप्त होगा।

पाठ-3
पवित्र आत्मा के नाम

हम पवित्र आत्मा के विषय में अध्ययन कर रहे हैं तथा यह देख रहें कि उसका कार्य क्या है? और अब हम यह देखेंगे कि पवित्र आत्मा के नाम क्या हैं।

प्रेरित यूहन्ना ने यीशु के विषय में कहा था, ''क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि वह आत्मा नाप-नाप कर नहीं देता।'' (यूहन्ना 3:34)। यीशु को आत्मा बिना नाप के दिया गया था, इस बात से यहून्ना का क्या अर्थ था? नाप कर देने में एक सीमा वाली बात आती है और दूसरे शब्दों में कहना चाहिए कि यदि यीशु को आत्मा सीमित रूप में दिया जाता तो उसके आश्चर्यकर्म भी सीमित ही होते। परन्तु परमेश्वर ने उसे आत्मा नापकर नहीं दिया, परन्तु बिना नापकर दिया। अर्थात परमेश्वर तथा आत्मा ने उस पर कोई सीमा नहीं रखी।

अब हम यह देखना चाहेंगे कि जब यीशु को आत्मा बिना नाप के दिया गया तब दूसरों को नाप कर देने की क्या आवश्यकता थी? और यही हुआ भी। प्रेरितों के ऊपर आत्मा दिया गया तथा जिन मसीहीयों पर उन्होंने हाथ रखे थे उन्हें भी आत्मा मिला।

यीशु ने आत्मा बिना नाप के पाया था, इसीलिये वह बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म कर सका, जिसमें कि दुष्ट आत्माओं को निकालना तथा मृतकों को जीवित करना भी शामिल था। उसने तूफ़ान को डांटा और वो थम गया, पानी को दाखरस में बदल दिया, वह पानी के ऊपर भी चला। इसके विषय में यूहन्ना ने लिखा, ''यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाएं, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए, परन्तु यह इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। (यूहन्ना 20:30-31)

परन्तु सबसे बढ़कर विशेष बात यह है कि यीशु के पास पवित्र आत्मा की इतनी सामर्थ थी कि वह दूसरों को यह सामर्थ देता था। प्रेरितों को यह सामर्थ दी गई थी ताकि वह कुछ अन्य चेलों पर हाथ-रखकर उन्हें यह सामर्थ दे सकें, परन्तु वे किसी को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं दे सकते थे। एक और खास बात हम यह देखते हैं कि जिनके ऊपर हाथ रखे गये थे वे चेले इस सामर्थ को दूसरों को नहीं दे सकते थे।

आईये अब उनके विषय में देखें जिन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिली थी। अनेकों लोगों का आज यह विश्वास है कि तमाम वे लोग जो बपतिस्मा लेते हैं उन सब को आश्चर्यकर्म करने की पवित्र आत्मा की सामर्थ मिलती है, हम यह देखेंगे कि यह बात सही नहीं है। सबसे पहिले हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रभु ने केवल प्रेरितों से प्रतिज्ञा की थी कि उन पर वह पवित्र आत्मा भेजेगा इसलिये पवित्र आत्मा प्रेरितों पर भेजा गया था। उसने यह प्रतिज्ञा उन सब से नहीं की थी जो भविष्य में उसकी आज्ञा को मानेंगे। जब हम यूहन्ना की पुस्तक को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि प्रभु किस प्रकार से प्रेरितों से बोल रहा है कि वह किस प्रकार से वापस चला जायेगा, परन्तु वह उनके लिये एक सहायक भेजेगा और वो सहायक है पवित्र आत्मा। (यूहन्ना 14:26)। यीशु कहता है, ''परन्तु जब वह सहायक आएगा जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो। (यूहन्ना 15:26-27)। फिर वह कहता है, ''तौ भी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। (यूहन्ना 16:7) और आगे वह कहता है, ''परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा,

वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। (यूहन्ना 16:13)। अब ज़रा यह ध्यान से देखिये कि प्रभु यहां किससे बात कर रहा था? यदि संदर्भ को देखा जाए, और ध्यान दिया जाये तो हमें पता चलेगा कि यीशु क्या कह रहा है, तब बड़ी सफ़ाई से आप समझ जाएंगे कि वह यहां अपने 12 प्रेरितों से बात कर रहा है, जो उसके साथ आरम्भ से रह रहे थे। (यूहन्ना 15:27)। परन्तु फिर भी प्रश्न यह उठता है, कि प्रभु ने जो प्रेरितों से वायदा किया था, उसे क्या उसने पूरा किया?

परन्तु इससे पहिले कि हम यह देखें कि ऐसा वास्तव में हुआ था, आईये देखें कि प्रभु ने प्रेरितों से क्या कहा था? इससे पहिले कि वह स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाता उसने कहा था, ''और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।'' (यूहन्ना 24:49) लूका ने यह भी लिखा था, ''हे थियुफिलुस मैं ने पहिली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी, जो यीशु ने आरम्भ में किया और करता और सिखाता रहा। उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया। और दु:ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। और उन से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। (प्रेरितों 1:1-5)। फिर यीशु ने कहा, ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाआगे, और यरूशलेम और सारे यहुदिया और सामारिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे (प्रेरितों 1:8)। इस बात में हम यह पक्की तरह से देखते हैं कि यीशु ने अपने चेलों से प्रतिज्ञा की थी कि वह उन पर पवित्र आत्मा भेजेगा। अब

इसका अर्थ यह हुआ कि केवल प्रेरितों ने पवित्र आत्मा की सामर्थ प्राप्त की थी। हमें यह समझना चाहिए कि सारे विश्वासियों को यह सामर्थ नहीं मिली थी।

अब आप प्रेरितों 2 अध्याय को देखें तथा इसे ध्यान से पढ़ें, यहां हम पढ़ते हैं, ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे (प्रेरित लोग) सब एक जगह इक्ट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं, और उन में से हर एक पर आ ठहरीं और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे अन्य भाषा बोलने लगे। (प्रेरितों 2:1-4)। जब हम, इस अध्याय को पूरा पढ़ते हैं तो हम देखते है कि प्रेरित एक बहुत बड़े जन समूह को यीशु का प्रचार कर रहे थे और उस दिन लगभग 3000 लोग सु-समाचार की आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लेते हैं तथा प्रभु उन्हें अपनी मण्डली या कलीसिया में मिला देता है। (प्रेरितों 2:46-47)। और फिर 43 पद में हम पढ़ते हैं कि, ''सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भभुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। अद्भभुत काम और चिन्ह किसके द्वारा प्रगट होते थे? इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह कार्य प्रेरितों के द्वारा होते थे, सब विश्वासियों के द्वारा नहीं।

इस बात का निचोड़ यही है कि प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। अब यह प्रेरित केवल 12 थे परन्तु कार्य बहुत था, इसलिये प्रेरितों 6 में हम पढ़ते हैं कि प्रेरितों ने चेलों से कहा कि अपने में से सात सुनाम ईमानदार पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हो, चुन लो, और उन्होंने इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया तथा उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे। अब देखें कि यह लोग पहिले से ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे परन्तु जो उन्हें पहिले मिला था तथा जो हाथ रखने से मिला था उसमें क्या भिन्नता थी? इसका उत्तर यह है कि इन सात पुरुषों को प्रेरितों की तरह पवित्र

आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला था। उनका बपतिस्मा वैसा था जैसा 3000 लोगों ने लिया था अर्थात वे आश्चर्यकर्म नहीं कर सकते थे। लेकिन जिन चेलों पर प्रेरित अपना हाथ रखते थे उन्हें आश्चर्यकर्म या अद्‌भुत कार्य करने की सामर्थ प्राप्त होती थी।

आईये हम इस बात को भली-भांति समझ लें कि पवित्र आत्मा का दान हमें बपतिस्मा लेने पर मिलता है परन्तु यह अद्‌भुत कार्य या आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं है। इन बातों के विषय में हम और भी बहुत कुछ अपने अगले पाठों में देखेंगे।

पाठ-4
वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा

हम पवित्र आत्मा कीश्रृंखला में कुछ पाठों को देख रहे हैं और हमारा उद्देश्य है कि हम उसके कार्य को भली-भांति समझ सकें और यह देख सकें कि उसने क्या कार्य किया है और आज वह क्या कर रहा है। समय निकालकर इन बातों का अध्ययन कीजिये, क्योंकि इसके विषय में आज बहुत सी ग़लतफहमियां लोगों में फैली हुई है।

अपने इस अध्ययन में हम यह देखेंगे कि यीशु ने अपने चेलों से पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने तथा आग से बपतिस्मा देने की बात की थी। और यह बात उसने उनसे बड़े अधिकार से कही थी।

बाइबल हमें बताती है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला प्रभु का मार्ग तैयार करने आया था। दूसरे शब्दों में वह मन फिराव तथा बपतिस्में का प्रचार करता रहा। यद्यपि यीशु परमेश्वर की दृष्टि में बिलकुल सिद्ध था परन्तु फिर भी परमेश्वर की धार्मिकता को पूरा करने के लिये वह यूहन्ना से बपतिस्मा लेने आया। बाद में हम देखते हैं कि यीशु ने अपने प्रेरितों को भेजा ताकि वे सुसमाचार का प्रचार करें तथा उद्धार पाने के लिये लोगों को बपतिस्मा दें। (मत्ती 28:18-19)

यीशु तथा अपने बीच में एक अन्तर को समझते हुए यूहन्ना ने इस प्रकार से कहा था, ''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है वह मुझसे शक्तिशाली हैं, मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'' (मत्ती 3:10-11)। अब यूहन्ना यहां क्या कह रहा है? आईये बड़े ध्यान से इसे देखें और यह जानें कि इन बातों का क्या अर्थ है? वह चाहता है कि हम अवश्य इन बातों को जानें, और इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन बातों को हम जान सकते हैं।

इस बात को आरंभ करते हुए वह कहता है तथा यह दिखाता है कि यीशु उससे बहुत महान है। उसने कहा कि वह तो पानी में बपतिस्मा देता है परन्तु यीशु पवित्र आत्मा तथा आग से बपतिस्मा देगा।

अक्सर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे तथा आग के बपतिस्मे के विषय में बहुत कुछ कहा जाता है। कहा जाता है, कि दोनों बपतिस्मे आज के युग के लिये हैं। पवित्र आत्मा के बपतिस्में का प्रचार किया जाता है तथा कहा जाता है कि जो विश्वासी इसे लेते हैं उनके पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ होती है। आग का बपतिस्मा वो है जिसके द्वारा लोग अपने जीवन में मुसीबतों से गुजरते हुए आगे बढ़ते हैं तथा आगे चलकर उसकी सेवा कें लिये तैयार होते हैं। प्रश्न यह है, कि बाइबल क्या ऐसा सिखाती है या इसका कुछ और अर्थ है?

पवित्र आत्मा के बपतिस्में तथा आग के बपतिस्में को समझने के लिये, हमें इसके संदर्भ को देखना आवश्यक है। इसके संदर्भ को हम मत्ती 3:12 में देखते हैं जहां इस प्रकार से लिखा है, ''उसका सूप उसके हाथ में हैं, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ़ करेगा, और अपने गेहूं को खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं। संदर्भ के अनुसार, यूहन्ना दिखाता है कि एक किसान है जो गेहूं से भूसी को अलग कर रहा है तथा अच्छे गेहूं को बचा कर रख रहा है और भूसी को गेहूं से इसलिये अलग कर रहा है ताकि वो जलाई जाए। यहां हम यह देखते हैं कि प्रभु यीशु लोगों के साथ किस प्रकार से न्याय करेगा। जो उसकी अज्ञाओं को मानेंगे उनके पास उन्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने का अधिकार है तथा पवित्र आत्मा के बपतिस्मे, द्वारा आशीषित करने का अधिकार है। परन्तु जो लोग उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते वे भूसी के समान जल जाएंगे। दूसरे शब्दों में उनका बपतिस्मा आग से होगा। यूहन्ना यहां दो बपतिस्मों की बात कर रहा है। यानि एक धार्मिक लोगों के लिये और दूसरा दुष्ट लोगों के लिये।

इसके विषय में जब हम बाइबल से पढ़ते हैं, तब हम देखते हैं कि यीशु ने प्रेरितों से एक सहायक भेजने की प्रतिज्ञा की थी, अर्थात पवित्र

आत्मा की। (यूहन्ना 14:26)। केवल यीशु के पास यह अधिकार था कि वह इस बपतिस्में को दे तथा केवल प्रेरितों से इस बपतिस्में की प्रतिज्ञा करे। पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा वे सब बातों को याद कर सकते थे जो यीशु ने उनके साथ रह कर उन्हें सिखाई थीं अर्थात वे सत्य को सिखायेंगे और आने वाली बातों के विषय में बतायेंगे तथा अन्य भाषा बोलेंगे तथा आश्चर्यकर्म करेंगे। उन्हें विशेष रूप से यह सामर्थ दी गई थी ताकि वे लोगों को यह निश्चय दिला सकें कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा बताने के लिये, उन्हें भेजा है। हमें बताया गया है कि जब उन्हें सामर्थ मिली तब, ''उन्होंने निकल कर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उन के साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे वचन को दृढ़ करता रहा।'' (मरकुस 16:20)। परन्तु यह सब कब तक होता रहा? जब तक प्रेरित इस पृथ्वी पर जीवित रहे, क्योंकि केवल वे ही थे जिन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ दी गई थी या जिनसे पवित्र आत्मा के बपतिस्में की प्रतिज्ञा की गई थी। अब जबकि नया नियम हमारे पास लिखित रूप में आ गया है इसलिये आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वचन दृढ़ हो चुका है। आज अनेक लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हमने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया है, परन्तु वे अपनी बात का खुद ही विरोध करते हैं क्योंकि वे ऐसी कलीसियाओं के अंग है जिनके विषय में हम बाइबल में नहीं पढ़ते तथा ऐसी-ऐसी शिक्षाओं को मानते तथा सिखाते हैं जो बाइबल के विपरित हैं। तब वे यह कैसे कह सकते हैं कि उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया है? वास्तविकता यह है कि उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया ही नहीं है। ऐसे लोग धोखे में हैं तथा दूसरों के साथ भी धोखा कर रहे हैं।

यद्यपि केवल प्रेरितों ने ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था तौभी हम पढ़ते हैं कि कुरनेलियुस तथा उसका परिवार जो कि गैर-यहुदी थे उन्हें भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था, यह दिखाने के लिये कि गैर यहूदी भी परमेश्वर को वैसे ही स्वीकार्य हैं जैसे यहूदी लोग (प्रेरितों 10, 11) क्योंकि प्रेरितों ने पवित्र आत्मा का

बपतिस्मा लिया था, इसलिये इसके द्वारा सब आशीषित हैं, क्योंकि प्रेरितों की पवित्र आत्मा द्वारा अगुवाई हुई थी ताकि वे लोगों को प्रचार कर सकें और वचन को लिख सकें।

परन्तु दूसरे बपतिस्में का क्या अर्थ है, अर्थात् आग का बपतिस्मा? यीशु के पास इस बपतिस्मे को देने का भी अधिकार है, परन्तु यह धार्मिक लोगों के लिये नहीं है, बल्कि दुष्टों के लिये है। बाइबल हमें यह सिखाती है कि अन्त में न्याय के दिन दुष्ट लोग आग की झील में डाले जायेंगे। (प्रकाशित वाक्य 19:20; 20:10) हम फिर यह भी पढ़ते हैं कि, ''डरपोकों और अविश्वासियों और घिनौनों और हत्यारों और व्यभिचारियों और टोन्हों और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है, यह दूसरी मृत्यु है।'' (प्रकाशित 21:8)। इसलिये हम देखते हैं कि यूहन्ना ने कहा था कि आग का बपतिस्मा यीशु द्वारा दिया जायेगा। प्रार्थना करें और प्रभु यीशु की आज्ञा अनुसार चलें ताकि हमारा आग से बपतिस्मा न हो।

बपतिस्में का अर्थ गाड़े जाना है। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे में प्रेरितों के ऊपर पवित्र आत्मा उंडेला गया था तथा वे पवित्र आत्मा में डूब गये थे। (प्रेरितों 2:1-4)। जब दुष्ट लोगों का आग में बपतिस्मा होगा तब वे आग में बिल्कुल समा जाएंगे। मित्रों, आज आपको पापों से मन फिराकर पानी में बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है ताकि आपको आपके पापों से उद्धार मिल सके। (प्रेरितों के काम 2:38)।

मैं जानता हूं कि बाइबल अनुसार आपका पवित्र आत्मा से बपतिस्मा नहीं हुआ है और मैं यह भी जानता हूं आपका आग से भी बपतिस्मा नहीं हुआ है क्योंकि यह अन्त में दुष्ट लोगों के लिये है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या आपने बाइबल अनुसार बपतिस्मा लिया है? यदि नहीं तो परमेश्वर में विश्वास कीजिये, यीशु में विश्वास करूं कि वह परमेश्वर का पुत्र है, अपने पापों से मन फिराईये तथा पानी में अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लीजिए, तब प्रभु आपका उद्धार करेगा तथा आपको अपनी कलीसियां या मण्डली में मिलायेगा उस कलासिया में जिसका वह उद्धारकर्ता है। (प्रेरितों 2:38, 47; इफ़िसियों 5:23)।

पाठ-5
सहायक भेजने की प्रतिज्ञा

जैसा कि मैंने अपने पिछले पाठ में भी बताया था कि पवित्र आत्मा के विषय में बहुत सारी अनुचित धारणाएं हैं। इसलिये हम बाइबल से यह देखने का प्रयत्न कर रहे हैं कि पवित्र आत्मा के विषय में इसकी क्या शिक्षा है? पवित्र आत्मा को बाइबल में सहायक भी कहा गया है, और हमारा यह अध्ययन भी सहायक भेजने की प्रतिज्ञा पर आधारित होगा।

यीशु इस संसार में पापियों को बचाने आया था। (1 तीमु. 1:15) हमें वचन में यह भी बताया गया है कि वह पापियों को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है। (लूका. 19:10)। इस सब के बावजूद वास्तविकता यह है कि यीशु ने एक पापरहित जीवन बिताया था तथा वह हमेशा अच्छाई करता रहा, परन्तु उसके शत्रु भी कम नहीं थे तथा बाद में यही लोग उसे क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे। वह इस बात को भली-भांति जानता था कि उसके साथ ऐसा होगा और यह भी जानता था कि उसका कार्य चलता रहेगा। फिर उसने 12 प्रेरितों को चुना और उन्हें ट्रेनिंग दी ताकि इस संसार से उसके वापस चले जाने के पश्चात वे उसके कार्य को आगे बढ़ाते रहें। परन्तु यीशु यह भी जानता था कि उसके चेले मनुष्य हैं, और गलतियां भी कर सकते हैं, और बहुत सी बातें जो उसने उन्हें सिखाई है, वे भूल भी सकते हैं तथा बहुत सी बातों को वे समझ भी नहीं पाते थे। इसीलिए अच्छी तरह से उनकी अगुवाई करने के लिये उसने उनसे प्रतिज्ञा की थी कि वह उनके लिये एक सहायक भेजेगा।

अब मेरे साथ यूहन्ना की किताब को देखें, और यहां हम कुछ ऐसी बातों के विषय में देखेगें जो सहायक के विषय में लिखी हैं। प्रेरितों से बात करते हुए यीशु ने कहा था, ''और मैं पिता से बिनती

करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है, तुम उसे जानते हो, क्योंकि तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा और मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूगां, मैं तुम्हारे पास आता हूं। और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में और मैं तुम में। जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम करता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूंगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा (यूहन्ना 14:16-21)।

यीशु अपने प्रेरितों से यह भी कहता है, ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं, जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता, तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। तुमने सुना, कि मैंने तुम से कहा, कि मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आता हूं, यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनिन्दत होते कि मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है।'' (यूहन्ना 14:26-28)।

प्रभु यीशु फिर इस बात को समझाते हुए कहता है, ''परन्तु जब वह सहायक आयेगा जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है तो वह मेरी गवाही देगा। और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो। (यहून्ना 15:26-27)।

आगे पढ़ते हुए हम देखते हैं, ''तौ भी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे

पास भेज दूंगा। और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे, न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी है, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे (यहून्ना 16:7-16)।

अब, इन सब पदों में हम कुछ वास्तविक्ताओं को देखते हैं :

1. यीशु यहां पर अपने प्रेरितों से बात कर रहा है।

2. इसलिये वह उनसे प्रतिज्ञा कर रहा है कि वह उनके लिये सहायक भेजेगा, सबके लिये नहीं, तथा और दूसरे चेलों के लिए नहीं।

3. सहायक जो है वो है, पवित्र आत्मा।

4. प्रभु यीशु के जाने के पश्चात सहायक को प्रेरितों पर भेजा जाना था।

5. सहायक या पवित्रआत्मा, प्रेरितों के साथ होगा, उनकी अगुवाई करेगा, उन्हें सब बातें याद दिलाएगा, सारे सत्य को उन्हें सिखाएगा उन्हें अन्य भाषाएं बोलने की सामर्थ देगा तथा वे आश्चर्यकर्म करने के योग्य होंगे।

6. केवल यीशु ही उनके लिये सहायक को भेजेगा।

7. सहायक के साथ, प्रेरित जो कि प्रभु के साथ रहते थे उसके गवाह होगें।

लूका ने भी प्रभु की प्रतिज्ञा की बात की है कि वह प्रेरितों पर

पवित्र आत्मा भेजेगा। प्रभु की मृत्यु के पश्चात, जी उठने पर वह अपने प्रेरितों के सामने प्रगट हुआ, ''फिर उसने उनसे कहा, यह मेरी वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यदूक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों। तब उस ने पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उन की समझ खोल दी। और उनसे कहा, यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूगां और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो। (लूका 24:44-49)।

लूका ने फिर इसी बात को प्रेरितों एक अध्याय में बताया था, जहां पर वह बड़ी स्पष्टता से बताता है कि प्रेरितों से पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा की गई थी। फिर दूसरे अध्याय में हम यह पढ़ते हैं कि सहायक या पवित्र आत्मा प्रेरितों के ऊपर आया तथा वे बड़े-बड़े अद्भभुत कार्य पवित्र आत्मा की सामर्थ से करने लगे।

अब यहां यह देखें कि सहायक को भेजने की प्रतिज्ञा किनसे की गई थी? क्या केवल प्रेरितों से? पवित्र आत्मा किसे प्राप्त हुआ? हम फिर देखते हैं कि केवल प्रेरितों को। उन 120 लोगों के विषय में क्या है जो वहां एकत्रित हुए थे? उनमें से किसी को भी आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं मिली थी। अद्भभुत कार्य करने की सामर्थ केवल प्रेरितों को मिली थी। कई लोग इन बातों की शिक्षा बाइबल के विपरीत देते हैं।

पाठ-6
पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

पवित्र आत्मा के विषय में हमारा बाइबल अध्ययन जारी है। अपने इस अध्ययन में हम अपना ध्यान पवित्र आत्मा के बपतिस्में के ऊपर लगाएंगे।

बाइबल के बहुत से विषयों में पवित्र आत्मा के विषय में बहुत अधिक कहा जाता है। पैन्टीकॉस्टल ग्रुप के लोग, विशेषकर वे जो अद्भभुत कार्य करने का दावा करते हैं, इस विषय पर बहुत ज़ोर देते हैं। परन्तु हमें यह जानना चाहिए कि वे आपस में ही बहुत भागों में बँटे हुए है तथा ऐसी कलीसियाओं के सदस्य हैं जिनके विषय में हम बाइबल में नहीं पढ़ते, तथा वे ऐसी ऐसी बातों की शिक्षा देते हैं जो बाइबल की शिक्षा के विरुद्ध है। वास्तव में पवित्र आत्मा उनकी इन ग़लत शिक्षाओं में अगुवाई नहीं करता। इसीलिये हम पवित्र आत्मा के विषय में अध्ययन करना चाहते हैं ताकि सत्य को जानें कि पवित्र आत्मा का कार्य क्या है।

जैसा कि हमने अपने पिछले पाठों में देखा था, कि यीशु की क्रूस पर मृत्यु से पहिले, उसने अपने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की थी कि वह उनके लिये एक सहायक भेजेगा। एक बात हमें ध्यान में रखनी चाहिए कि यह प्रतिज्ञा सबके लिये नहीं थी बल्कि प्रेरितों से इसकी प्रतिज्ञा की गई थी। यीशु की मृत्यु के पश्चात मृतकों में से ज़ी उठने के बाद उसने अपने प्रेरितों से कहा था कि जब तक उन्हें सामर्थ न मिले वे यरुशलेम में ही ठहरें रहें। (लूका 24:49; प्रेरितों 1:8)। उन्होंने ऐसा ही किया और हम पढ़ते हैं, ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दी; और उन में से हर एक

पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य भाषा बोलने लगे। (प्रेरितों 2:1-4)।

अब हम यह देखना चाहेंगे कि यह लोग कौन थे जो पवित्र आत्मा से भर गए थे? प्रभु ने सहायक भेजने की प्रतिज्ञा किस से की थी? प्रभु ने किससे कहा था कि वे यरुशलेम में ठहरे रहें जब तक वे पवित्र आत्मा को ऊपर से आता न देख लें या स्वर्ग से सामर्थ न पा लें। इन सब घटनाओं में हम यह देखते हैं कि यह प्रतिज्ञा प्रेरितों से की गई थी। परन्तु तब किसके पास अन्य भाषा बोलने की सामर्थ थी? तथा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ किसे मिली? हम देखते है कि यह सामर्थ प्रेरितों को मिली थी (प्रेरितों 2:4; 2:43)।

पवित्र आत्मा की सामर्थ की प्रतिज्ञा प्रेरितों से की गई थी, और जिस प्रकार से योएल भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की थी प्रेरितों पर पवित्र आत्मा उतरा था। (योएल 2:28) और जिस प्रकार से लूका ने भी कहा था कि यह बात किस प्रकार से यरुशलेम में पूरी होनी थी। (प्रेरितों 2:16,17)। यह पवित्र आत्मा का बपमिस्मा था, जिसके विषय में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने कहा था कि प्रभु को यह बपतिस्मा देने का अधिकार है। (मत्ती 3:11)।

बपतिस्में का अर्थ है, गाड़े जाना, डूबोना यानि एक ऐसी बात जिसमें कुछ करने की आवश्यकता है। बपतिस्में में जल तथा अधिक जल की आवश्यकता होती है। तथा इसमें पवित्र आत्मा भी शामिल होता है। इसलिये पवित्रशास्त्र कहता है कि उस समय प्रेरित पिन्तेकुस्त के दिन यरुशलेम में इक्कट्ठे हुए थे और वहां इस प्रकार से लिखा है, ''और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया''। (प्रेरितों 2:2)। जब ऐसा हुआ तो हम देखते हैं कि प्रेरित पवित्र आत्मा से बिल्कुल ढक गये या उसमें डूब गये तथा इसका परिणाम यह हुआ कि वे अन्य भाषाओं में बात करने लगे अर्थात ऐसी भाषाएँ जो उन्होंने

कभी सीखी नहीं थीं। (प्रेरितों 2:3,4)। यह भाषाएं ऐसी थी जिन्हें लोग समझ सकते थे तथा जब लोगों ने उन्हें सुना तो वे चकित हो गये। (प्रेरितों 2:6)।

क्योंकि प्रेरितों के पास परमेश्वर का वचन लिखित रुप में नहीं था इसलिये वे पवित्र आत्मा से भरकर लोगों को अद्भभुत कार्यों द्वारा वचन का प्रचार कर रहे थे और इसके द्वारा हज़ारों लोग बपतिस्मा ले रहे थे।

पवित्र आत्मा के बपतिस्में का केवल एक उदाहरण है जिसमें हम देखते हैं कि कुरनेलियुस और उसके घराने ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था। यह लोग ग़ैर यहुदी थे और प्रेरित लोग यहुदी धर्म से आये थे। इस बात को प्रमाणित करने के लिये कि प्रभु किसी का पक्षपात नहीं करता, कुरनेलियुस तथा उसके परिवार ने यह बपतिस्मा इसलिये लिया था ताकि यह प्रमाणित हो सके कि जैसे यहुदी लोग प्रभु को स्वीकार्य हैं वैसे ही गैर यहुदी भी उसे स्वीकार्य हैं।

प्रेरितों के 10 तथा 11 अध्यायों में हम इस परिवार के विषय में पढ़ते हैं। हम पढ़ते हैं कि, ''कैसरिया में कुरनेलियुस नाम एक मनुष्य था, जो इतालियानी नाम पलटन का सूबेदार था। वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहुदी लोगों को बहुत दान देता और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रुप से देखा, कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मेरे पास भीतर आकर कहता है, कि हे कुरनेलियुस, उसने उसे ध्यान से देखा; और डरकर कहा, हे प्रभु क्या है? उसने उससे कहा, तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं। और अब याफ़ा में मनुष्य भेजकर शमोन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह शमौन चमड़े का धन्धा करने वाले के यहां पाहुन है, जिस का घर समुद्र के किनारे है। (प्रेरितों 10:1-6)।

यह सब इसलिये किया गया था क्योंकि प्रभु पतरस को कुछ पाठ

सिखाना चाहता था। वह चाहता था कि पतरस यह जाने कि प्रभु किसी का पक्षपात नहीं करता। पतरस तथा दूसरे लोग कुरनेलियुस के घर पर पहुंचे तथा उसके परिवार से मिले। तब हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''तब पतरस ने मुंह खोलकर कहा, अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नही करता, बरन हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।'' (प्रेरितों 10:34,35)। पतरस वहां प्रचार करते हुए कहता है, हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''पतरस यह बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे वे सब चकित हुए कि अन्य जातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्हें भांति-भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा, क्या कोई जल को रोक सकता है, कि यह बपतिस्मा न पाए, जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है? और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए: तब उन्होंने उससे बिनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह।'' (प्रेरितों 10:44-48)।

प्रेरितों 11 अध्याय में पतरस यरुशलैम में बताता है कि कैसरिया में किस प्रकार से कुरनेलियूस और उसके परिवार ने प्रभु की आज्ञा को माना था। वह कहता है, ''जब मैं बातें करने लगा तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया, जो उसने कहा, कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। सो जबकि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था, तो मैं कौन था, जो परमेश्वर को रोक सकता? यह सुनकर वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्य जातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया।'' (प्रेरितों 11:15-18)।

पतरस यहां बड़ी स्पष्टता से बताता है कि कुरनेलियुस तथा उसके

घराने ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था, जैसे कि उसने तथा दूसरे प्रेरितों ने आरम्भ में किया था जब वे यरुशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन इकट्ठे हुए थे। इस बात का ध्यान रखिये कि यह एक विशेष दान था और ऐसा दान नहीं था जो साधारण रुप से सबको मिला था। पतरस ने इस बात को बताने के लिये आरम्भ की घटना बताई कि किस प्रकार से उनके साथ क्या हुआ था।

परन्तु हो सकता है कि कोई कहे, ''कि अवश्य ही कुछ ऐसे मसीही होंगे जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला होगा'' परन्तु ऐसा नहीं है, आज कोई ऐसा व्यक्ति नही है जिसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला है। यदि है तो इसका उद्देश्य क्या होगा? मेरे मित्र आज हमारे पास परमेश्वर का वचन यानि बाइबल लिखित रुप में है, जो हमारी अगुवाई करता है, और जब हम इसकी आज्ञा को मानते हैं तब प्रभु हमारा उद्धार करता है तथा हमें आशीषित करता है। जो लोग कहते हैं कि हमने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया है वे खुद भी धोखे में हैं तथा दूसरों को भी धोखा दे रहे हैं। याद रखिये पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रेरितों को तथा कुरनेलियुस और उसके घराने को मिला था।

पाठ-7
पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसे मिला?

अपनी इस श्रृंखला में हम पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में देख रहें हैं तथा इस पाठ में हम यह देखेंगे कि पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसे मिला था? यह प्रश्न ही बहुत आवश्यक है क्योंकि बहुत से विश्वासी यह विश्वास करते हैं कि 120 लोग जिनका वर्णन प्रेरितों 1:15 में हुआ है उन्हें भी आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिली थी जैसे कि प्रेरितों को मिली थी।

जैसे कि हमने अपने पिछले पाठों में देखा था कि यीशु ने एक सहायक भेजने की प्रतिज्ञा अपने प्रेरितों से की थी (यूहन्ना 14:26) और यह प्रतिज्ञा सबसे नहीं की गई थी परन्तु केवल प्रेरितों से की गई थी। फिर हमने देखा था कि यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि जब तक उन्हें ऊपर से सामर्थ न मिलें वे यरूशलेम में ही ठहरे रहे। (लूका 24:49) तथा प्रेरितों को जब पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल जाएगी तब वे पृथ्वी के छोर तक उसके गवाह होंगे। वे यरूशलेम में यहूदा तथा सामरिया में उसके गवाह होंगे। (प्रेरितों 1:8)। फिर हम यह देखते हैं कि उसने इन शब्दों को केवल अपने प्रेरितों से बोला था तथा तमाम लोगों से नहीं बोला था। जब हम प्रेरितों के काम के एक और दो अध्यायों को देखते हैं और यह देखते हैं कि इन अध्यायों में क्या-क्या बातें घटित हुईं थीं। प्रेरितों एक अध्याय के शुरू में हम देखते हैं लूका बताता है कि यीशु किस प्रकार से स्वर्ग पर उठा लिया गया, ''उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उस ने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया। और उसने दु:ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा; और

परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे (प्रेरितों 1:2-5)। अब इसे पढ़ते हुए हम यह देखते हैं कि प्रभु अपने प्रेरितों से बात कर रहा था, जिन्हें उसने स्वयं चुना था, तथा उसने उनसे कहा कि वे यरूशलेम में ठहरे रहें जहां उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिलेगी। क्या इस बात में कोई सन्देह है कि प्रभु किससे बात कर रहा था? तथा किससे उसने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा की थी? पक्की तरह से हम यह जान सकते हैं कि प्रभु प्रेरितों से बात कर रहा था तथा उसने उनसे पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु यदि हम फिर से इस बात को बड़े ध्यान से देखें तो हम देखेंगे कि प्रभु प्रेरितों से बात कर रहा है तथा कई बार उसने उनसे इसी तरह से बात की थी। ''उसने उन्हें आज्ञा दी कि यरूशलेम को न छोड़ें'' फिर उसने उनसे कहा, ''तुम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाओगे।'' इसलिये यहां ''उनसे'' शब्द प्रेरितों के लिये इस्तेमाल हुआ है। इस भाषा का इस्तेमाल हम प्रेरितो 1 और 2 अध्यायों में पढ़ते हैं।

बाद में प्रेरितों के काम के एक अध्याय के अन्त में हम यह देखते भी हैं कि वे एक चेला या प्रेरित यहुदा के स्थान पर चुनना चाहते हैं, क्योंकि यहूदा ने प्रभु को धोखा देकर 30 चांदी के सिक्कों में शत्रु के हाथों उसे पकड़वा दिया था। वहां लगभग 120 लोग इकट्ठे थे। इन लोगों की योग्यता यह होनी थी कि यह प्रेरितों के साथ थे तथा यूहन्ना के बपतिस्में से लेकर जब तक यीशु उपर उठा लिया गया था वो सब उन्होंने देखा था। दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि प्रेरितों के साथ उन्होंने भी यीशु को मृतकों में से जी उठते देखा हो।

इसलिये ''उन्होंने दो को खड़ा किया, एक यूसुफ को, जो बरसबा कहलाता है, जिसका उपनाम यूसतुस है दूसरा मत्तिय्याह को। और यह

कहकर प्रार्थना की, कि हे प्रभु, तू जो सब के मन जानता है, यह प्रगट कर कि इन दोनों में से तूने किस को चुना है। कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले जिसे यहुदा छोड़ कर अपने स्थान को गया। तब उन्होंने उनके बारे में चिट्ठियां डाली, और चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर निकली, सो वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया। (प्रेरितों 1:23-26)। कौन से चेलों में से अब हम यह देखते हैं कि दो को चुना गया ताकि एक को प्रेरितों के साथ मिलाकर गिना जाये? यहां हम देखते हैं कि प्रेरितों ने ऐसा किया। प्रभु से किसने प्रार्थना की? और किसने चिट्ठियां डाली ताकि उनमें से एक को प्रेरित चुना जाये? यह प्रेरितों ने ही किया था, और जब मत्तिय्याह चुन लिया गया तब उसे किनके साथ गिना गया? जैसे कि लिखा है कि ग्यारह प्रेरित अब बारह प्रेरित हो गये थे। सो यहां पर विशेष बात प्रेरितों की हो रही है। अर्थात् अब इन ग्यारह में एक और प्रेरित शामिल हो गया था।

अब ध्यान दीजिये कि हम इस अध्ययन के अन्त में आने के पश्चात्, दूसरे अध्याय की ओर आते हैं। यह दोनों अध्याय साथ-साथ चलते हैं। क्योंकि ऑरिजनल हस्तलिखित बाइबल में पद तथा अध्याय नहीं होते थे। यह अध्याय एक चेन की तरह जुड़े हुए हैं। क्योंकि यहां प्रेरितों की बात हो रही है इसलिये हम यहां इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इक्ट्ठे थे'' (प्रेरितों 2:1)। अब जबकि प्रेरितों को ध्यान में रखकर यह बात हो रही है इसलिये यहां इस प्रकार से बोला गया है कि जब पिन्तेकुस्त का दिन आया 'वो' यानि प्रेरित एक समय पर, एक जगह इक्ट्ठे थे। और फिर लिखा है, ''और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया'' (प्रेरितों 2:2)। जिस घर में यह सब हुआ वहां कौन बैठा था? इसका उत्तर है वहां प्रेरित लोग बैठे थे। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं। किन्हें? प्रेरितों को, जिनसे पवित्र आत्मा की सामर्थ भेजने का वायदा किया गया था।

और वे पवित्र आत्मा से भर गए और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे अन्य भाषा बोलने लगे। कौन पवित्र आत्मा से भर गए? और कौन अन्य भाषा बोलने लगे? प्रेरित लोग (प्रेरितों 2:3, 4)। तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि ''हे यहुदियों, और हे यरूशलेम के सब रहने वालों यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, यह नशे में नहीं है, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह बात है जो योएल भविष्यदूक्ता के द्वारा कही गई है, कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे पुरनिए स्वपन देखेंगे'' (प्रेरितों 2:14-17)। क्या उसने ऐसा किया? हां उसने सबको भिन्न रूप से आत्मा दिया है। उसने प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया था। उसने प्रेरितों को यह अधिकार भी दिया था कि वे चुने हुए चेलों पर अपने हाथ रखें; ताकि उन्हें भी पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके जैसा कि प्रेरितों 6 में हुआ था।

आज जो लोग आज्ञा मानते हैं तथा बपतिस्मा लेते हैं उन्हें भी पवित्र आत्मा का दान मिलता है परन्तु यह वो दान या सामर्थ नहीं है जिसके द्वारा वे अद्‌भुत कार्य कर सकें। मित्रों, यह समझने की कोशिश करें कि आश्चर्यकर्म तथा अद्‌भुत कार्य करने की सामर्थ केवल प्रेरितों को मिली थी तथा उन्हें मिली थी जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे। प्रेरितों 2 अध्याय में हम देखते हैं कि पतरस उन लोगों को प्रचार कर रहा है जो पिन्तेकुस्त के दिन वहां इक्ट्ठे हुए थे और उस दिन 3000 लोगों ने प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया था। तथा उन्हें पवित्र आत्मा का दान तथा पापों की क्षमा मिली थी। इसी अध्याय में यह भी लिखा है कि जिन्होंने बपतिस्मा लिया था वे प्रेरितों से शिक्षा पाने में लगे रहे तथा प्रेरितों के हाथों से आश्चर्यकर्म होते थे। (प्रेरितों 5:12)। यहां हम देखते हैं कि इस बात पर ज़ोर दिया जा रहा

है कि प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। तथा उनके द्वारा अद्‌भुत कार्य हुए थे। वहां जो 120 लोग इक्ट्ठे थे तथा 3000 लोगों ने प्रभु की आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लिया था प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिलाया था। यदि उन 120 लोगों को तथा 3000 बपतिस्मा पाये लोगों को अद्‌भुत कार्य करने की सामर्थ मिली होती तो फिर क्यों प्रेरितों ने यह आवश्यक समझा कि उनमें से सात पुरुष चुने जाये जिन पर वे सामर्थ देने के लिये हाथों को रखें। इसके विषय में हम प्रेरितों 6 अध्याय में पढ़ते हैं। इन बातों के विषय में और अध्ययन कीजिये तथा जितना आप सीखेंगे उतना ही आपको इसके विषय में सत्य का पता चलेगा।

पाठ-8
कुरनेलियुस तथा उसके परिवार ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था

पवित्र आत्मा के विषय में अपने अध्ययन को जारी रखते हुए मैं चाहूंगा कि आप इस पाठ पर अपना ध्यान लगायें।

अपने एक पिछले अध्ययन में हमने देखा था कि प्रेरितों के अतिरिक्त कुरनेलियुस तथा उसके परिवार को भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। हम इस बात के विषय में और अधिक देखना चाहेंगे और यह भी कि क्यों केवल कुरनेलियुस और उसके घराने को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था?

हम पहिले ही इस बात को देख चुके हैं कि यीशु ने प्रेरितों की अगुवाई के लिये एक सहायक अथवा पवित्र आत्मा को भेजना था। इस सहायक ने उनको सारे सत्य के लिये बातों को याद दिलाना था जो बातें उन्हें यीशु ने सिखाई थी। उनको अन्य भाषा बोलने के लिये सामर्थ देनी थी, तथा उनका अद्भभुत कार्य करने का एक कारण यह था कि अब तक नया नियम लिखित रूप में नहीं दिया गया था, और इसीलिये प्रेरितों को यह सामर्थ दी गई थी ताकि वे लोगों को यह निश्चय दिला सकें कि वे परमेश्वर की ओर से हैं और उनके पास उसकी इच्छा को बताने के लिये भेजे गये हैं। जब नया नियम पूरा हो गया तब इन आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं थी तथा बात यह भी है कि अब प्रेरितों की मृत्यु हो चुकी थी। इसलिये आज इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है कि किसी को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिले और न ही कोई ऐसा व्यक्ति विद्यमान है जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दे सके क्योंकि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल यीशु दे सकता था।

यदि उपर लिखी बात सही है, और वास्तव में यह बात बिल्कुल

सही है तब क्यों कुरनेलियुस और उसके घराने ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था? प्रेरितों 10 तथा 11 अध्यायों को पढ़ने से हम जान सकते हैं कि क्यों उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। क्योंकि कुरनेलियुस तथा उसका परिवार गैरयहुदी थे इसलिये उन्होंने प्रभु से यह बपतिस्मा पाया था ताकि यह प्रमाणित हो सके कि प्रभु किसी का पक्षपात नहीं करता और परमेश्वर को जिस प्रकार से यहूदी स्वीकार्य हैं वैसे ही गैर यहुदी या अन्य जाति भी स्वीकार्य हैं।

प्रेरितों के 10 अध्याय में हमें कुरनेलियुस तथा उसके परिवार से परीचित कराया गया है। हमें यह बताया गया है कि वह बहुत भला मनुष्य तथा भक्तजन था, वह गरीबों को दान देता था परमेश्वर से प्रार्थना करता था। और इसी समय उसने स्वर्ग से एक स्वर्गदूत को आते देखा तथा दूत ने उसे उसके नाम से पुकारा और उससे कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं। और फिर दूत ने उससे कहा कि याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। और पतरस उसे वहां बतायेगा कि उसे क्या करना है। परन्तु एक ध्यान देने योग्य बात यहां यह है कि स्वर्गदूत ने उससे यह क्यों नहीं कहा कि उसे क्या करना हैं? सुसमाचार मिट्टी के बर्तनों में रखा हुआ है, हम मसीहीयों के पास सुसमाचार है, और इसलिये पतरस को उसके पास सुसमाचार को लेकर जाना था। मैं यहां एक बात बताना चाहता हूं कि हमने कई बार कई लोगों को कहते सुना है कि प्रभु ने सपने में उनसे बात की या कोई स्वर्गदूत आया और उसने प्रभु की इच्छा को उन्हें बातया। परन्तु बाइबल इसके बारे में कोई शिक्षा नहीं देती। यदि प्रभु मनुष्य के साथ इस तरह से बातचीत करता तब स्वर्गदूत ने कुरनेलेयुस को उसी समय कुछ करने के लिये क्यों नहीं कहा बल्कि उसने पतरस को बुलवाने के लिये कहा?

परन्तु अब हम याफा तथा शमौन की बात करते हैं जो चमड़े का कार्य करता था। पतरस छत के उपर जाकर प्रार्थना कर रहा था। इस

समय वह बहुत भूखा था तथा जब उसे भूख लगी, और वह कुछ खाना चाहता था, परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे, तो वह बेसुध हो गया। और उसने देखा, कि आकाश खुल गया और एक पात्र, बड़ी चादर के समान चारों कौनों से लटकता हुआ पृथ्वी की ओर उतर रहा है। जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। और पतरस को ऐसा शब्द सुनाई दिया, कि हे पतरस उठ, मार और खा। परन्तु पतरस ने कहा, नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है। फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह। तीन बार ऐसा ही हुआ, तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया। (प्रेरितों के काम 10:14-16)। अब जबकि पतरस इस सबके विषय में सोच ही रहा था, तब जिन मनुष्यों को कुरुनेलियुस ने भेजा था वे पतरस के विषय में पता करने आये। तब आत्मा ने उससे कहा कि जाओ इन लोगों से मिलो, और बिना सन्देह के उनके साथ जाओ।

फिर हम आगे पढ़ते हैं, ''दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुंचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इक्ट्ठे करके उनकी बाट जोह रहा था। जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरुनेलियुस ने उससे भेंट की, और पांवों पड़के प्रणाम किया परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूं। और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर गया, और बहुत से लोगों को इक्ट्ठे देखकर उनसे कहा, तुम जानते हो, कि अन्य जाति की संगति करना या उसके यहां जाना यहूदी के लिये अधर्म हैं, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूं इसीलिये मैं जब बुलाया गया तो बिना कुछ कहे चला आया: अब मैं पूछता हूं कि मुझे किस काम के लिये बुलाया गया है? कुरनेलियुस ने कहा, कि इस घड़ी पूरे चार दिन हुए कि मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था, कि देखो एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहिने हुए, मेरे सामने आ खड़ा

हुआ और कहने लगा हे कुरनेलियुस तेरी प्रार्थना सुन ली गई, और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं। इसलिये किसी को याफा भेजकर शुमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला, वह समुद्र के किनारे शमौन चमड़े के धंधा करने वाले के घर में पाहुन है। तब मैंने तुरंत तेरे पास लोग भेजे और तूने भला किया, जो आ गया, अब हम सब यहां परमेश्वर के सामने हैं ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें। तब पतरस ने मुंह खोलकर कहा, अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता वरन हर जाति में जो उससे डरता है और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है। जो वचन उसने इस्त्राएलियो के पास भेजा जब कि उसने यीशु मसीह के द्वारा (जो सब का प्रभु है) शांति का सुसमाचार सुनाया। वह बात तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरंभ करके सारे यहूदिया में फैल गई कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया, वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। और हम उन सब कामों के गवाह हैं, जो उसने यहुदिया के देश और यरुशेलम में भी किए, और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला। उसको परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है। सब लोगों को नहीं वरन उन गवाहों को जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया-पिया। और उसने हमें आज्ञा दी, कि लोगों में प्रचार करो, और गवाही दो, कि यह वही है, जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है। उसकी सब भविष्यदूक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी। पतरस यह बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सुनने वालों पर उत्तर आया और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे वे सब चकित हुए कि अन्य जातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति-भांति

की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा, क्या कोई जल को रोक सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं जिन्होंने हमारी नाई पवित्र आत्मा पाया है? और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाएं, तब उन्होंने उससे बिनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह। (प्रेरितों 10:24-48)

फिर हम देखते हैं प्रेरितों 11 अध्याय में कि पतरस यरुशलेम को जाता है और वहां लोगों से बातचीत करके बताता है कि कैसरिया में कुरनेलियुस तथा उसके परिवार के साथ क्या-क्या हुआ। और पूरी घटना को बताते हुए वह इस प्रकार से कहता है, ''जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरंभ में हम पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया, जो उसने कहा, कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था, तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता? यह सुनकर वे चुप रहें, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्य जातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है। (प्रेरितों 11:15-18)।

अब फिर से हम यह प्रश्न दोहराते हैं कि क्यों कुरनेलियुस और उसके घराने को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था? आरंभ में हमने देखा था कि केवल प्रेरितों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था और पतरस कहता है जैसे हमारा पवित्र आत्मा से बपतिस्मा हुआ है वैसे ही इनका पवित्र आत्मा से बपतिस्मा हुआ है। परन्तु उन्हें यह बपतिस्मा इसलिये मिला था ताकि यहुदी लोगों को यह निश्चय हो जाये कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता क्योंकि पहिले कभी किसी अन्य जाति या गैरयहुदी का बपतिस्मा पवित्र आत्मा से नहीं हुआ था।

क्या प्रेरितों और कुरनेलियुस तथा उसके परिवार के अतिरिक्त

किसी और का पवित्र आत्मा से बपतिस्मा हुआ था? यदि हुआ था तो कहां? हम नहीं जानते, क्योंकि हम नये नियम में इसके विषय में कुछ नहीं पढ़ते। आज बहुत से लोग ऐसा दावा करते हैं कि उनका पवित्र आत्मा से बपतिस्मा हुआ है। परन्तु यह शिक्षा बाइबल की नहीं है। उनकी कई शिक्षाएं बाइबल अनुसार नहीं है। ऐसे लोग अपने को धोखा दे रहे हैं तथा गलती कर रहे हैं। अपने इस अध्ययन को हम आगे भी जारी रखेंगे तथा इस विषय पर और सच्चाईयों को देखेंगे।

पाठ-9
हाथ रखने के द्वारा पवित्र आत्मा को देना

पवित्र आत्मा के अपने अध्ययन को जारी रखते हुए हम इस अध्ययन में **हाथ रखने के** द्वारा पवित्र आत्मा के दिये जाने के विषय में सीखेंगे। इस विषय को हम आप के साथ इसलिये डिस्कस (चर्चा) करना चाहते हैं क्योंकि कई लोगों के मनों में इसके बारे में अनुचित धारणाएं भरी हुई हैं। गलत बातों को बताया तथा सिखाया जाता है।

यूहन्ना ने यीशु के विषय में कहा था, ''क्योंकि वह आत्मा नाप-नापकर नहीं देता। पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएं उसके **हाथ में दे** दी हैं।'' (यूहन्ना 3:34-35)। अर्थात् यीशु को आत्मा की सामर्थ बिना नाप के दी गई थी। इसका अर्थ यह है कि जो आत्मा की सामर्थ उसे मिली थी उसकी कोई सीमा नहीं थी। परन्तु दूसरों के लिये इसके नाप की सीमा थी, उन्हें नाप कर यह सामर्थ दी गई थी। यहां हम देखते हैं कि यद्यपि उन लोगों के पास पवित्र आत्मा की सामर्थ थी परन्तु वे इसे इस्तेमाल करने में सीमित थे।

उदाहरण के लिये हम देखते हैं कि प्रेरितों से प्रभु ने प्रतिज्ञा की थी कि वह उन्हें पवित्र आत्मा तथा आग से बपतिस्मा देगा। (मत्ती 3:11)। इस बात को दिखाने के लिये कि उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ बिना किसी नाप तथा सीमा से मिली थी, (मत्ती 3:13-17), इस बात को ध्यान में रखें कि केवल वही इन बपतिस्मों को दे सकता था।

पवित्र आत्मा के इन बपतिस्मों के विषय में बात करते हुए हम यह देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने सबसे पहिले प्रेरितों से यह प्रतिज्ञा की थी कि वह उनके पास एक सहायक को भेजेगा, अर्थात् पवित्र आत्मा को (यूहन्ना 14:26)। इसी प्रतिज्ञा को लूका 24:49 में दोहराया गया है तथा प्रेरितों 1:8 में भी। फिर हम प्रेरितों 2:1-4 में पढ़ते हैं कि प्रेरितों

का बपतिस्मा पवित्र आत्मा से हुआ था। और यह था बपतिस्में द्वारा पवित्र आत्मा का नाप और यद्यपि उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था, और उसका एक उद्देश्य था परन्तु वे दूसरों को यह बपतिस्मा नहीं दे सकते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि वे यानि प्रेरित लोग इस सामर्थ को इस्तेमाल करने में सीमित थे।

अब एक बात हम और देखते हैं कि प्रेरित केवल बारह थे तथा उन्हें सारे जगत में सुसमाचार ले जाने के लिये कहा गया था। अर्थात उनके पास एक बहुत बड़ा कार्य करने के लिये था। केवल इतना ही नहीं, प्रेरितों के 6 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि जब लोगों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रेरित लग गए तब हम आगे पढ़ते हैं, ''तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, ''यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें। इसलिये हे भाईयों अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हो, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे। यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नाम एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस और प्रखुरूस और नीकानोर और तीमोन और परमिनास और अन्ताकीवाला नीकुलाऊस को जो यहुदी मत में आ गया था, चुन लिया।'' (प्रेरितों 6:2-5)।

अब प्रेरितों ने जो इस विषय में बातें कहीं थी उन्हें हम देखेंगे। बहुत से ऐसे लोग हैं जो यह कहते हैं कि सब मसीहीयों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है, या उनका बपतिस्मा, पवित्र आत्मा से होना आवश्यक है। परन्तु वास्तव में हम यह देखते हैं कि प्रेरितों 6 अध्याय तक जिन्होंने भी प्रभु की आज्ञा को माना था उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला था तथा प्रभु की यह योजना भी नहीं थी कि वे सब लोग जिन्होंने उसकी आज्ञा को माना है पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लें तथा उसकी सामर्थ को प्राप्त करें।

प्रेरित यह जानते थे कि मसीही लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला है तथा इसलिये उनके पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं है। यदि उन मसीहीयों के पास यह सामर्थ होती तो प्रेरितों के लिये उनमें से सात पुरुषों को चुनना अनावश्यक होता जो कि आत्मा से भरपूर थे।

यह बात बड़ी दिलचस्प है कि प्रेरितों ने कहा था सात पुरुष चुने जायें जो आत्मा से भरपूर हों। इसका अर्थ यह हुआ कि आत्मा से भरपूर होना तो सम्भव है, परन्तु फिर भी आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ होना सम्भव नहीं हैं। परन्तु पवित्र आत्मा से भरपूर होना तथा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ होने में क्या अन्तर है? अन्तर यही है कि पवित्र आत्मा प्राप्त करने के भिन्न-भिन्न नाप होना। प्रेरितों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लेकर इस प्रकार से सामर्थ प्राप्त की थी कि वे अद्भभुत कार्यों को कर सकें तथा अन्य भाषाएं बोल सकें। परन्तु जो चुने गये थे वे पवित्र आत्मा से भरपूर थे और उन्हें पवित्र आत्मा का दान मिला था जिसका वर्णन प्रेरितों 2:38 में हुआ है तथा यह पवित्र आत्मा का वो दान हैं जो आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं है।

परन्तु हम यह देखना चाहेंगे कि किस प्रकार का आत्मा का नाप यह चेले प्राप्त करने जा रहे थे? जब यह सात पुरुष लोग चुन लिये गये तब हम पढ़ते हैं, ''और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और **उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखें**'' (प्रेरितों 6:6)। यह सब क्या था? यह **सिर पर हाथ रखकर** पवित्र आत्मा को देना था। प्रेरितों ने **उनके उपर हाथ रखें थे और इसलिये केवल प्रेरितों को यह अधिकार था कि वे हाथ रख कर पवित्र आत्मा की सामर्थ को दूसरों को दें**। परन्तु क्या यह सात पुरुष जिन्हें **प्रेरितों द्वारा हाथ रखने** से पवित्र आत्मा की सामर्थ मिली थी इसे दूसरों को दे सकते थे? नहीं। परन्तु यह सात लोग जिन्हें सामर्थ मिली थी क्या करने के योग्य हो सके? हम पढ़ते हैं, ''स्तिफनुस अनुग्रहं और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्भभुत काम और चिन्ह दिखाया

करता था।'' (प्रेरितों 6:8)। अब दूसरों के विषय में क्या है? वे भी आश्चर्यकर्म करने के योग्य थे। परन्तु इस बात को ध्यान में रखें कि जब तक प्रेरितों ने उन **लोगों पर हाथ** नहीं रखें थे तब तक वे आश्चर्यकर्म करने के योग्य नहीं थे। आश्चर्यकर्म करने की शक्ति उन्हें तब मिली जब प्रेरितों ने उन पर हाथ रखें।

एक बड़ी आवश्यक बात जो हमें समझनी चाहिये कि यद्यपि यह सात लोग आश्चर्यकर्म करने तथा अन्य भाषा बोलने के योग्य थे परन्तु वे इस सामर्थ को दूसरों को नहीं दे सकते थे। उदाहरण के लिये फिलिप्पुस यीशु का प्रचार करने सामरिया गया। हम वचन में पढ़ते हैं, ''और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। और जो बातें फ़ुलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई, और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए। और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ। (प्रेरितों 8:7-8) इसको जारी रखते हुए हम आगे पढ़ते हैं, ''जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। और उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। ध्यान दीजिये, तब उन्होंने उन पर **हाथ रखे** और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। (प्रेरितों 8:14-17)।

जैसा कि हमने पहिले बताया था, कि यद्यपि उन सात पुरुषों को प्रेरितों के **हाथ रखने के द्वारा पवित्र आत्मा** की सामर्थ मिली थी परन्तु वे इस सामर्थ को दूसरों को नहीं दे सकते थे। यदि वे ऐसा कर सकते तब वे अपने मित्रों तथा जिन्हें भी वे चाहते यह सामर्थ दे देते और वहां मैं सोचता हूं कि स्थिति काफ़ी खराब हो जाती। प्रेरितों के लिये यह आवश्यक था कि वे सामरिया जाकर कुछ मसीहीयों पर

हाथ रखें ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके और वे आश्चर्यकर्म कर सकें। परन्तु सब लोग जिन्होंने बपतिस्मा लिया था आश्चर्यकर्म नहीं कर सकते थे। उदाहरणार्थ हम देखते हैं कि शमौन जो कि जादू-टोने करता था, बपतिस्मा लेने के बाद जब प्रेरितों के अद्भभुत कार्य देखता था तो वह बड़ा चकित होता था और उसने पैसे के द्वारा पवित्र आत्मा की सामर्थ को खरीदना चाहा और प्रेरितों ने उसके **ऊपर हाथ नहीं रखे बल्कि उसके इस पाप के लिये उसे डांटा।** शमौन इस शक्ति को गलत उद्देश्य के लिये इस्तेमाल करना चाहता था। इसके द्वारा वह पैसे कमाना चाहता था।

फिर हम प्रेरितों के 19 अध्याय में आते हैं यहां पौलूस इफिसुस नामक स्थान पर कुछ चेलों से मिलता है जिन्होंने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था तथा जिन्होंने पवित्र आत्मा के विषय में सुना भी नहीं था। पौलूस ने उन्हें सिखाकर यीशु के नाम से बपतिस्मा दिया। तब हम पढ़ते हैं, ''और जब पौलूस ने उन पर **हाथ रखे तो उन पर** पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे।'' (प्रेरितों 19:6)।

वास्तव में प्रेरितों ने कई चेलों पर **हाथ रखें थे** तथा वे लोग बड़े ईमानदार और पवित्र आत्मा प्राप्त करने के योग्य थे। तथा इसके द्वारा वचन का बहुत प्रचार हुआ।

परन्तु जब प्रेरित लोगों की मृत्यु हो गई तथा वे लोग भी मर गए जिन पर प्रेरितों ने **हाथ रखें थे** तब अद्भभुत कार्य और आश्चर्यकर्म समाप्त हो गए। अब नया नियम हमारे पास लिखित रूप में है इसलिये आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है। आज कोई हमारे बीच में ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अद्भभुत कार्य या आश्चर्यकर्म कर सके। क्या आज कोई प्रेरितों की तरह मृतकों को जीवित कर सकता है? क्या आज कोई अन्धे को नई आखें दे सकता है? क्या कोई जन्म से लंगड़े व्यक्ति को ठीक कर सकता है? ज़रा सोचिये! वचन को पढ़िये, इसका अध्ययन कीजिए तथा धोखे में न आईये।

पाठ-10
शमौन जादू-टोना करने वाले को पवित्र आत्मा की सामर्थ क्यों नहीं दी गई?

अब हम पवित्र आत्मा के अपने इस अध्ययन के बीच में हैं। यह अध्ययन हमारे लिए बहुत महत्व रखता है और हमें इन बातों के विषय में बड़े ही ध्यान से विचार करना चाहिए।

अपने इस अध्ययन को आगे बढ़ाते हुए और पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में बात करते हुए हम एक प्रश्न पूछ रहे हैं, कि शमौन जादू टोना करने वाले को पवित्र आत्मा की सामर्थ क्यों नहीं दी गई? या प्रेरितों ने उसे यह सामर्थ देने को क्यों मना कर दिया था?

पिछली बार अपने पाठ में हमने देखा था कि फिलिप्पुस किस प्रकार से सामरिया को गया ताकि वहां यीशु का प्रचार करे। हम इस विषय में इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई, और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ। इससे पहिले उस नगर में शमौन नामक एक मनुष्य था, जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बनाता था। और सब छोटे से बड़े तक उसे मान कर कहते थे कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है। उसने बहुत दिनों से अपने टोने के कामों से उन्हें चकित कर रखा था, इसीलिये वे उसकी बात मानते थे। परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे। तब शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ

रहने लगा और चिन्ह और बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था। जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरिया ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। और उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। यहां हम देखते हैं कि इन लोगों ने हाथ रखने के द्वारा पवित्र आत्मा पाया था। जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर कहा कि यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पाएं। पतरस ने उससे कहा, तेरे रुपये तेरे साथ नाश हो, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया। इस बात में न तेरा हिस्सा है न बांटा, क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। क्योंकि मैं देखता हूं, कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बंधन में पड़ा है। शमौन ने उत्तर दिया, कि तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं उन में से कोई मुझ पर न आ पड़े। सो वे गवाही देकर और प्रभु का वचन सुनाकर यरूशलेम को लौट गए और सामरियों के बहुत गांवों में सुसमाचार सुनाते गए''। (प्रेरितों 8:6-25) हमने एक काफ़ी बड़े अध्याय को पढ़ा है परन्तु यह इसलिये पढ़ना आवश्यक था ताकि इसके विषय में हमें पूरी साफ़ तस्वीर मिल जाये।

सबसे पहिले हम यह देखते हैं कि फिलिप्पुस जो कि सुसमाचार का प्रचारक था वो सामरिया के लोगों को यीशु का प्रचार करने गया। यह उन सातों पुरुषों में से एक था जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, ताकि उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके। अपने प्रचार के साथ उसने बहुत से आश्चर्यकर्म भी किये थे।

इस सब का परिणाम यह हुआ कि बहुत से लोगों ने उसके सुसमाचार पर विश्वास किया और परमेश्वर के राज्य की बातों को सुनकर उसमें विश्वास किया जिससे कई स्त्रियों और पुरुषों ने बपतिस्मा लिया।

एक और व्यक्ति था जिसको सामरी लोग बहुत मानते थे। उसका नाम था शमौन जो जादू टोना करता था। लोगों को यह पता भी नहीं था कि वह अपनी चलाकियों से उन्हें बेवकूफ बनाता है, बल्कि वे उसे बहुत बड़ा आदमी मानते थे और अब तक धोखे में थे। जब उसने यह देखा कि प्रेरित लोग यीशु के नाम से बड़े अद्‌भुत कार्य करते हैं, तब उसने भी सुसमाचार को मानने की इच्छा प्रगट की और कहा कि मैं भी विश्वास करके परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहता हूं।

सुसमाचार की खबर पूरे यरूशलेम में फैल गई और वहां भी जहां प्रेरित लोग पहिले से थे। तब पतरस और यूहन्ना सामरिया को गये ताकि वे वहां उनके लिये प्रार्थना करें और उन पर हाथ रखें ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके। परन्तु जिन्हें सामर्थ मिली थी उनमें शमौन शामिल नहीं था। उसने यह सब होते हुए देखा तथा प्रेरितों को पैसे दिखाये और कहा कि मुझे भी यह सामर्थ दे दो। मुझे ऐसा लगता है कि रिश्वत देने की उसकी आदत सी थी क्योंकि प्रेरितों को भी उसने रिश्वत देनी चाही थी और वह प्रेरितों को रुपये देकर कहने लगा, ''कि यह अधिकार मुझे भी दे दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए।'' (प्रेरितों 8:19)। वह केवल इस शक्ति को लेने को नहीं बल्कि इसे दूसरों को भी देने की सोच रहा था। इसीलिये यह सामर्थ ऐसे लोगों को नहीं दी गई थी जिनकी नियत सही नहीं थी। शायद वे भी इस सामर्थ को शमौन की तरह दूसरों को देने का प्रयास करते।

परन्तु शमौन की यह कोशिश सफ़ल नहीं हुई। पतरस ने उसे उत्तर दिया और कहा, कि ''तू और तेरे रुपये तेरे साथ नाश हो, क्योंकि तूने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया'' (प्रेरितों 8:20)। प्रेरित पतरस ने उसे अच्छी तरह से समझाया कि उसने

परमेश्वर के कार्य तथा उसके दान को गलत तरह से समझा है। उसने उसे डांटा और उससे कहा तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं है। तथा उससे यह भी कहा कि उसे इस बुराई से अपना मन फिराना चाहिए तथा परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए ताकि उसे क्षमा मिल सके। पतरस ने उससे एक और बात कहीं, ''क्योंकि मैं देखता हूं, कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बंधन में पड़ा है।'' (प्रेरितों 8:23)। अर्थात दूसरे शब्दों में हम इसे ऐसे कह सकते हैं कि वह बहुत नीचे गिर गया था। वह बिल्कुल गलत था।

पतरस....यह बात शमौन से इसलिये कह सका क्योंकि उसने सुसमाचार को सुनकर उसे माना था यानि वह एक मसीही था और कलीसिया का एक सदस्य था, और उसने गलती की थी इसलिये उसके पास क्षमा, मांगने का सुअवसर था। क्योंकि वह परमेश्वर की संतान था इसलिये अब वह मन फिराकर उससे क्षमा मांग सकता था। शमौन ने पतरस की बात को सुनकर बुरा नहीं माना बल्कि उसने कहा, ''तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े'' (प्रेरितों 8:24)।

इसके पश्चात पतरस और यहून्ना यरूशलेम चले गये तथा फिलिप्पुस कहीं और चला गया। परन्तु शमौन का क्या हुआ? क्योंकि पतरस ने उसे समझाया था तथा उससे कहा गया था कि परमेश्वर से प्रार्थना करके मन फिराकर क्षमा मांगे और उसने ऐसा किया होगा तथा वह एक अच्छा मसीही बनकर रहा होगा।

क्या इसका अर्थ यह हुआ कि बाद में प्रेरितों ने उसके सिर पर हाथ रखे होंगे ताकि उसे सामर्थ मिल सकें? नहीं, हम कहीं भी ऐसा नहीं पढ़ते। वह इस योग्य नहीं था कि उसे यह सामर्थ दी जाये। जैसा किसी ने कहा है कि ''यदि किसी व्यक्ति ने किसी बैंक में डकैती डाली है और बाद में उसे क्षमा कर दिया गया हो क्योंकि उसने मन फिराकर क्षमा मांगी है परन्तु कोई भी उसे बैंक में अब खजांची की नौकरी नहीं देगा।''

प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा मसीहियों को सामर्थ दी जाती थी परन्तु इसका उद्धार से कोई मतलब नहीं था। उस समय में कुछ प्रभु के लोगों को चुना जाता था ताकि प्रेरित उन पर अपना हाथ रखें और वे पवित्र आत्मा की सामर्थ को प्राप्त कर सकें। यह सामर्थ इसलिये दी जाती थी कि लोग अद्भभुत कार्यों को देखकर यीशु में विश्वास ला सकें। आज हमारे पास नया नियम लिखित रूप में उपलब्द्ध है तथा परमेश्वर मनुष्य से क्या चाहता है उसकी इच्छा को इसमें प्रगट किया गया है। अद्भभुत कार्यों की आवश्यकता हमें आज नहीं है क्योंकि ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है''। (रोमियों 10:17)। आज इस बात की आवश्यकता है कि हम लोगों को यीशु का सुसमाचार बतायें और उन्हें यह खुशी की खबर दें कि यीशु उनके पापों के लिये क्रूस पर मारा गया, गाड़ा गया तथा तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। (1 कुरि. 15:1-4)। यीशु ने बहुत पहिले यह भविष्यवाणी की थी, ''क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यदूक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह, और अद्भभुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुनों हुओं को भी भरमा दें (मत्ती 24:24)।

पाठ-11
पवित्र आत्मा का दान

हमने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के विषय में अध्ययन किया है तथा यह भी देखा था कि प्रेरितों द्वारा हाथ रखने से किस प्रकार से पवित्र आत्मा का दान दिया जाता था परन्तु अब हम यह देखना चाहेंगे कि पवित्र आत्मा का वो दान क्या है जो आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं है।

हमने देखा था कि प्रेरितों का बपतिस्मा पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था तथा कुछ मसीहीयों को हाथ रखने के द्वारा यह दान मिला था और जिन्हें यह दान हाथ रखने के द्वारा मिला था वे इसे दूसरों को नहीं दे सकते थे। तमाम लोग जिन्होंने बपतिस्मा लिया है तथा प्रभु की कलीसिया में मिलाये गये हैं उन्हें पवित्र आत्मा का दान मिला है परन्तु यह आश्चर्यकर्म करने वाला दान नहीं है।

जब हम प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय की ओर आते हैं, यहां हम देखते हैं कि किस प्रकार से प्रेरित पिन्तेकुस्त के दिन यरुशलेम में ठहरे हुए थे, क्योंकि यह यहुदियों का एक त्यौहार था इसलिये आस-पास के इलाकों से यहूदी लोग वहां इक्ट्ठे हुए थे। और इसी समय पवित्र आत्मा उन पर प्रगट हुआ तथा उनका पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा हुआ और वे अन्य भाषा बोलने लगे और वे लोग अपनी-अपनी भाषा में उनके प्रचार को सुन रहे थे। प्रेरित पतरस तथा अन्य प्रेरित वहां प्रभु यीशु का प्रचार कर रहे थे। हम इस घटना के विषय में इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''तब सुनने वालों के हृदय छिद गए और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे कि है भाईयों, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा मन फिराओं और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। (प्रेरितों 2:37, 38)। इन पदों में हम देखते

हैं कि जो लोग विश्वासी बने थे, उन्होंने अपने पापों से मन फिराया, तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया और उन्हें पवित्र आत्मा का दान प्राप्त हुआ। याद रखिये, यह दान आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं था।

पवित्र आत्मा के दान को हमें पवित्र आत्मा के बपतिस्में तथा हाथ रख कर दी जाने वाली सामर्थ में अन्तर समझना चाहिए। यदि हम इन बातों को इनके संदर्भ से देखें तो हमें पता चलेगा कि इनमें क्या अन्तर है? उदाहरण के लिये हम प्रेरितों 2:1-4 में पढ़ते हैं कि प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। प्रेरितों 6 तथा 8 अध्यायों में हम पढ़ते हैं कि प्रेरितों ने कुछ चेलों के ऊपर हाथ रखें थे ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिले और फिर प्रेरितों 2:38 में हमने देखा था कि वे सब लोग जो प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेंगे उन्हें पवित्र आत्मा का दान मिलेगा।

फिर हम प्रेरितों के 6 अध्याय में देखते हैं कि सात चेले जो चुने गये थे और जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला था, उनके ऊपर हाथ इसलिये रखे गये थे ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके। यहां इनके विषय में यह भी कहा गया है कि यह सुनाम पुरुष थे तथा पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण थे। तब इस बात का क्या अर्थ हुआ कि वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे? अर्थात हम यह कह सकते हैं कि उन्हें पवित्र आत्मा का दान मिला था परन्तु आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं। इन्हें यह दान कब मिला था? जब उन्होंने प्रभु की आज्ञा को मान कर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया था। जिसके विषय में प्रेरितों 2:38 में हम पढ़ते है। और इस प्रकार से यह दान उन सब लोगों को मिला था जिन्होंने प्रभु की आज्ञा को माना था। यानि यह पवित्र आत्मा का वो नाप है, जो उन सब को मिलता है जो प्रभु की आज्ञा को मानते हैं।

जब पतरस तथा दूसरे प्रेरितों को महासभा के सामने लाया गया यह पूछने के लिये कि वे मना करने के बावजूद भी यीशु का प्रचार क्यों

कर रहे हैं? परन्तु उन्होंने महायाजक तथा जो लोग उसके साथ थे, उन्हें इस प्रकार से समझाया कि, ''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करना ही कर्त्तव्य कर्म है। हमारे बापदादाओं के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया जिसे तुम ने क्रूस पर लटका कर मार डाला था। उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्ता ठहराकर, अपने दहिने हाथ से सर्वोच्च कर दिया कि वह इस्त्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। और हम इन बातों के गवाह हैं और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते हैं।'' (प्रेरितों 5:29-32) हम इसे इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा तथा हाथ रखने के द्वारा सामर्थ उन लोगों को दिया गया था जिन्होंने प्रभु की आज्ञा का पालन किया था, और यह पवित्र आत्मा का दान था। यह पवित्र आत्मा का वो दान है जो आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं हैं, और यह उन सबको मिलता है जो परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं। जिन्होंने अपना मन फिराकर बपतिस्मा लिया है (प्रेरितों 2:38), अर्थात जिन्होंने प्रभु की आज्ञा को माना है उनको यह दान मिला है और उनमें पवित्र आत्मा वास करता है। थिस्सलुनीकियों नामक स्थान पर मसीहीयों को लिखते हुए पौलूस कहता है, ''निदान, हे भाईयों हम तुम से बिनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुमने हम से योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है और जैसा चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन-कौन सी आज्ञा पहुंचाई। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो अर्थात व्यभिचार से बचे रहो। और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना जाने। और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों की नाई जो परमेश्वर को नहीं जानतीं कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे और न उस पर दांव चलाए क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेने वाला है; जैसा कि हम ने पहिले तुम से कहा

और चिताया भी था। क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है। इस कारण जो तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है।'' (1 थिस्स 4:1-8)।

इन आयतों में प्रेरित पौलूस मसीहों को सिखाने का यह प्रयत्न कर रहा है कि वे अपने को शुद्ध तथा पवित्र रखें। क्योंकि उनका संबंध पवित्र परमेश्वर से है तथा उन्हें पवित्र आत्मा दिया गया है। यदि हम संदर्भ में देखें तो पता चलता है कि पौलूस मसीहियों से बात करते हुए कह रहा है कि उन्हें भी पवित्र आत्मा मिला है। अर्थात पवित्र आत्मा का दान जो कि आश्चर्यकर्म करने वाली सामर्थ नहीं है। मैं इस बात को बार-बार इसलिये दोहाराता हूं कि आप इस बात को समझें कि प्रेरितों के पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ थी तथा जिन पर उन्होंने हाथ रखे थे वे भी अद्‌भुत कार्य करते थे परन्तु आम मसीही लोगों के पास पवित्र आत्मा का वो दान था जो आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं था।

प्रेरित पौलूस कुरिन्थ में मसीहियों से कहता है, ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।'' (1 कुरि. 3:16-17)। फिर वह इस विषय में एक और बात कहता है कि, ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है; और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हों, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।'' (1 कुरि. 6:19-20)। अब हम पक्की तरह से इस बात को जानते हैं कि सारे वे जो कुरिन्थ में थे उन सब को हाथ रखने के द्वारा पवित्र आत्मा की सामर्थ नहीं मिली थी। इसलिये वे आश्चर्यकर्म करने के योग्य नहीं थे। पौलूस किन से बात कर रहा था? मसीही लोगों से तथा मसीहियों से

उसने यह भी कहा था कि पवित्र आत्मा तुम्हारे अन्दर वास करता है। परन्तु किस प्रकार से वास करता है? दान के रूप में, यह दान आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं है।

क्या आप जानते हैं कि एक मसीही में पवित्र आत्मा किस प्रकार से वास करता है? हमें यह समझना चाहिए कि पवित्र आत्मा हम में इस तरह से वास नहीं करता कि हम अद्भभुत कार्य कर सकें। परन्तु जिस प्रकार से यीशु हम में वास करता है उसी प्रकार से पवित्र आत्मा भी हममें वास करता है। (कुलीस्सियों 1:27)। परमेश्वर हमारे में वास करता है। (इफिसियों 4:6)। और हम यीशु में तथा यीशु हमारे में रहता है। (रोमियों 6:3,4; गलतियों 3:26-27)। जो बात मैं यहां बताने का प्रयत्न कर रहा हूं वो यह है सब मसीहीयों में पवित्र आत्मा वास करता है परन्तु आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं। क्या आपने बपतिस्मा लेकर प्रभु की आज्ञा को माना है?

पाठ-12
क्या पवित्र आत्मा का दान आश्चर्यकर्म करने के लिये था?

पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में हमारा यह अध्ययन चल रहा है। और इसके साथ जुड़े हुए कई विषयों को हमने अपने पिछले अध्ययनों में देखा है।

कई लोगों का ऐसा विचार है कि पवित्र आत्मा से जुड़ी प्रत्येक बात आश्चर्यकर्म से संबंधित होनी चाहिए। उदाहरण के लिये वे सोचते हैं कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा तथा सिर पर हाथ रखने से जो दान मिलता है उसके द्वारा आश्चर्यकर्म किये जाते थे और यह बात बिल्कुल सही है। प्रेरित लोग तथा वे लोग जिनके उपर हाथ रखे गये थे आश्चर्यकर्म करने के योग्य थे। परन्तु हमें यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि केवल वही लोग थे जिन्हें अद्भभुत कार्य करने की सामर्थ मिली थी। आज इस पृथ्वी पर कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला हो क्योंकि केवल प्रेरित तथा कुरनेलियुस और उसके घराने को यह बपतिस्मा मिला था तथा उनकी मृत्यु हुए कई सौ साल हो चुके हैं, और अब कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखें हों क्योंकि केवल प्रेरित लोग ही इस सामर्थ को हाथ रखने के द्वारा देते थे। आज वे प्रेरित हमारे बीच में नहीं है, उनकी मृत्यु हो चुकी है।

परन्तु एक और विशेष बात है जिसके विषय में हम देखना चाहेंगे कि पवित्र आत्मा का दान जिसका वर्णन प्रेरितों 2:38 में हुआ है, आज कई लोग कहते हैं कि वो दान भी आश्चर्यकर्म करने के लिये है। यह बात सत्य है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्में को भी, पवित्र आत्मा का दान कहा गया है। जैसे कि कुरनेलियुस और उसके परिवार को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था परन्तु पतरस ने प्रेरितों के

विषय में भी कहा था कि उन्हें भी पवित्र आत्मा का दान मिला था जब उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था। उसने इस प्रकार से कहा था, ''सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था, तो मैं कौन था, जो परमेश्वर को रोक सकता?'' (प्रेरितों 11:17)। पतरस यहां यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि कुरनेलियुस तथा उसके परिवार को बपतिस्मा मिलने का अर्थ यह था कि जिस प्रकार से यहुदी लोग परमेश्वर को स्वीकार्य है उसी प्रकार से ग़ैर यहुदी भी उसे स्वीकार्य हैं।

हां, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक दान था। हाथ रखने के द्वारा जो सामर्थ मिली थी वो भी एक दान था। परन्तु प्रेरितों 2:38 में कहा गया है कि पवित्र आत्मा का दान आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं था। परन्तु हम कैसे जानते हैं कि यह बात इस प्रकार से है? यदि हम संदर्भ के साथ इसे पढ़े तो हमें पता चलेगा कि जिन लोगों ने प्रेरितों 2:38 के अनुसार बपतिस्मा लिया था, क्या वे इस योग्य थे कि आश्चर्यकर्म कर सकें तथा अन्य भाषा में बात कर सकें? अब इस बात को ध्यान में रखिये कि कई हज़ार लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लिया था तथा पवित्र आत्मा का दान प्राप्त किया था, और जब हम प्रेरितों 6 अध्याय की ओर आते हैं जहां प्रेरितों ने सात सुनाम पुरुषों को चुनकर उन पर हाथ रखे थे ताकि उन्हें भी आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि यह पवित्र आत्मा का दान आश्चर्यकर्म करने के लिये होता तब उन सात पुरुषों को क्यों चुना गया था? तथा प्रेरितों ने उन पर हाथ क्यों रखे? इस बात पर भी ध्यान दें कि जो सात पुरुष चुने गये थे उन्हें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना था, यदि वे पवित्र आत्मा से भरपूर थे तब प्रेरितों को कोई आवश्यकता नहीं थी कि उन पर हाथ रखें। यहां एक बात साफ़ दिखाई देती है कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का अर्थ यह नहीं है कि वे आश्चर्यकर्म कर सकते थे। तब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने

का क्या अर्थ है? इसका साधारण सा अर्थ है कि उन्हें पवित्र आत्मा का दान मिला था या पवित्र आत्मा उन्हें दिया गया था जिन्होंने प्रभु की आज्ञा को माना था।

पवित्र शास्त्र में कई ऐसे पद हमें मिलते हैं जो बताते हैं कि जो लोग प्रभु की आज्ञा मानते हैं उन्हें पवित्र आत्मा मिलता है, अर्थात पवित्र आत्मा उनमें वास करता है, हमारी देह परमेश्वर का मन्दिर है और परमेश्वर उसमें रहता है। (प्रेरितों 5:22; 1 कुरि. 3:16-17; 1 कुरि. 6:19, 20; कुलु. 3:27)।

किसी का नया जन्म किस प्रकार से होता है? प्रभु यीशु का लहू हमारे पापों को किस प्रकार से धोता है? यीशु का अनुग्रह हमें किस प्रकार से बचाता है? हमारे मनों में विश्वास किस तरह से कार्य करता है? कुछ लोग है जो इन सब बातों में आश्चर्यकर्म देखने की कोशिश करते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि बच्चे का जन्म होना आश्चर्यकर्म है, कार या बाईक दुर्घटना से बच जाना आश्चर्यकर्म है या ऑपरेशन सफ़ल होना एक आश्चर्यकर्म है या किसी बीमारी से ठीक हो जाना आश्चर्यकर्म है। इन बातों का आश्चर्यकर्म से कोई मतलब नहीं है। वास्तविकता यह है कि परमेश्वर ने सब बातों का आरंभ चाहे वे भौतिक हो या आत्मिक आश्चर्यजनक रूप से किया था। फिर उसने प्रकृति के कुछ नियमों को बनाया जिससे आश्चर्यकर्मों का कोई संबंध नहीं है। आज बच्चे जन्म लेते हैं तथा यह परमेश्वर ने जो प्रकृति में नियम बनाया है उसके अनुसार होता है, इसका आश्चर्यकर्म से कोई संबंध नहीं है। तथा आत्मिक बातों के विषय में भी यही बात सत्य है। प्रभु यीशु तथा उसके प्रेरितों ने आश्चर्यकर्म किये थे तथा कुछ लोगों को चुना गया था जो अद्भभुत कार्यो को कर सके क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें सामर्थ दी थी। परन्तु आज मनुष्य की अगुवाई करने के लिये लिखा हुआ परमश्वेर का वचन है।

अब हमारे प्रतिदिन के जीवन में कई प्रकार की बातें होती है और कई बार हम नहीं समझ पाते कि इसका क्या अर्थ है? कुछ लोग इन

बातों को आश्चर्यकर्मों की तरह देखते हैं, लेकिन ऐसा होता नहीं है। क्योंकि हम समझ नहीं पाते कि हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ है इसलिये हम इसे आश्चर्यकर्म कहते हैं। यह सब कुछ इसलिये होता है क्योंकि परमेश्वर ने कुछ प्राकृतिक नियम बनाये हैं। यही बात आत्मिक बातों पर भी लागू होती है, और हम समझ नहीं पाते, और कुछ लोग कहते हैं कि यह आश्चर्यकर्म है। कुछ लोग इतने आगे बढ़ जाते हैं कि वे कहते हैं कि एक मसीही में पवित्र आत्मा वास ही नहीं करता, और न ही परमेश्वर और यीशु मसीह उसमें रहते हैं। वे प्रार्थना में भी विश्वास नहीं करते तथा इस बात से भी इन्कार करते हैं कि कई बार परमेश्वर ऐसा ज़रिया बनाता है कि हम अपनी समस्या से बाहर निकल जाते हैं। कई ऐसा मानते हैं कि पवित्र आत्मा वास करने का अर्थ है कि वे आश्चर्यकर्म कर सकते हैं। इस प्रकार के लोग बातों को भली भांति समझ नहीं पाते तथा उनके दिमाग एक ही बात पर घूमते रहते हैं कि पवित्र आत्मा आश्चर्यकर्म करेगा।

जबकि हमें पवित्र आत्मा का दान मिलता है जो कि आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं है, और प्रत्येक वो व्यक्ति जिसने प्रभु की आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लिया है उसे पवित्र आत्मा मिलता है। उस उद्धार को प्रमाणित करने के लिये परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा देता है। पौलुस कहता है, ''जिसने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया है।'' (2 कुरि. 1:22)। फिर वह इसे इस प्रकार से कहता है, ''और जिसने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।'' (2 कुरि. 5:5)।

इसलिये हम विश्वास करते हैं कि हम प्रभु में है और प्रभु हम में है। हम यह विश्वास भी करते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है तथा उनका उत्तर देता है तथा कठिनाईयां आने पर उनमें से निकलने का रास्ता निकालता है।

हमारा यह विश्वास है कि आत्मा, प्रार्थना, तथा परमेश्वर की

सहायता यह सब बातें पवित्र है, तथा इन सब बातों को हम परमेश्वर के अनुसार मानते हैं जिस प्रकार से नये नियम में इनका वर्णन हुआ है। परमेश्वर हमारे में कार्य करता है परन्तु केवल अपने वचन अनुसार।

क्या आप एक मसीही हैं? आप परमेश्वर में विश्वास करके अपने पापों से मन फिराकर, तथा प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर और पानी में बपतिस्मा लेकर एक मसीही बन सकते हैं। यदि आप ऐसा करेंगे तो परमेश्वर आपका उद्धार करेगा, और अपनी आत्मा आपको देगा तथा अपनी कलीसिया में आपको मिलाएगा। (प्रेरितों 2:41-47)।

पाठ-13
आत्मिक वरदान

पवित्र आत्मा के विषय में अपने इस अध्ययन में हम आत्मिक वरदानों के विषय में देखेंगे। हमने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और हाथ रखकर सामर्थ देने के विषय में पहिले ही देखा है। हमने पवित्र आत्मा के दान के विषय में भी देखा था। और यह समझाने का प्रयत्न किया था कि आश्चर्यकर्म करने वाली परमेश्वर की सामर्थ तथा सब आज्ञा मानने वालों को जो पवित्र आत्मा का दान मिलता है उसमें क्या अन्तर है।

हमने देखा था कि प्रेरितों के पास तथा प्रेरितों ने जिन पर हाथ रखे थे उनके पास, आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ थी। तथा केवल प्रेरितों के पास ही यह अधिकार था कि वे किसी विश्वासी पर हाथ रखकर उसे यह सामर्थ दें। प्रेरित पौलुस रोम में मसीही भाईयों को लिखते हुए कहता है, ''क्योंकि मैं तुमसे मिलने की लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं जिससे तुम स्थिर हो जाओ।'' (रोमियों 1:11)। दूसरे शब्दों में वह ऐसा अवसर चाहता था ताकि उनके पास जाकर उन पर हाथ रखे और उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके। इसके द्वारा परमेश्वर का कार्य आगे बढ़ना था तथा प्रभु के कार्य को और मजबूती मिलनी थी।

प्रेरित पौलुस कौरिन्थ में मसीहीयों को लिखते हुए कहता है, ''हे भाईयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अनजान रहो। तुम जानते हो कि जब तुम अन्य जाति थे, तो गूंगी मूर्तियों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे। इसलिये मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है वह नहीं कहता कि यीशु स्त्रापित है, और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है। वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु

आत्मा एक ही है, और सेवा भी कई प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के है, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। किन्तु सबके लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को इसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। किसी को उसी आत्मा से विश्वास और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के कार्य करने की सामर्थ और किसी को भविष्यवाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना परन्तु यह सब प्रभावशाली कार्य एक ही आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है। (1 कुरि. 12:1-11)।

अभी जिन पदों को हमने देखा उनमें प्रेरित पौलुस सामर्थ के कार्यों के विषय में बोल रहा है जो पवित्र आत्मा द्वारा कराये जाते थे। वह आत्मिक वरदानों के विषय में बात कर रहा था, जैसे ज्ञान, विश्वास, चंगाई, सामर्थ के कार्य, भविष्यवाणी, तथा अन्य भाषाओं में बात करना। यह ध्यान देने योग्य बात है कि इन वरदानों के लिये अलग-अलग लोग चुने गये थे तथा सबको यह वरदान नहीं दिये गये थे। प्रत्येक व्यक्ति को वरदान उसकी योग्यता अनुसार दिया गया था, यह देखते हुए कि किसके लिये क्या उचित रहेगा।

भिन्न-भिन्न वरदानों का उद्देश्य भिन्न था। पौलुस कहता है, ''प्रेम का अनुसरण करो और आत्मिक वरदान की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यवाणी करो। क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है इसलिये कि उसकी बातें कोई नहीं समझता क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है। परन्तु जो भविष्यवाणी करता है वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शांति की बातें कहता है। जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है, परन्तु जो भविष्यवाणी

करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है। मैं चाहता हूं कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो परन्तु इससे अधिक यह चाहता हूं कि भविष्यवाणी करो: क्योंकि यदि अन्य भाषाएं बोलने वाला कलीसिया की उन्नति के लिये अनुवाद न करे तो भविष्यवाणी करने वाला उससे बढ़कर है। (1 कुरि. 14:1-5)। पौलुस यहां पर यह दिखाने का प्रयत्न कर रहा है कि वरदानों में भविष्यवाणी करने का वरदान बड़ा है क्योंकि इसके द्वारा लोगों पर परमेश्वर की इच्छा प्रगट की जाती है। अन्य भाषा इसलिये आवश्यक है क्योंकि सुनने वालों को इसके द्वारा प्रभु की इच्छा सुनने को मिलती है।

पहिली शताब्दी की कलीसिया में कई बार ऐसे लोग होते थे जिनके पास वरदान होता था परन्तु उनके बीच में कोई ऐसा जन भी आ जाता था जिसके पास कोई भी वरदान नहीं होता था और इसलिये प्रेरित पौलुस ने उनसे कहा, ''अत: यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सबके सब अन्य भाषाएं बोलें, अनपढ़े या अविश्वासी भीतर आ जाएं तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे? परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें और कोई अविश्वासी या बाहर वाला मनुष्य भीतर आ जाए तो सब उसे दोषी ठहरा देगें और परख लेंगे और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है। इसीलिये हे भाईयो क्या करना चाहिए जब तुम इक्ट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन या उपदेश या अन्य भाषा या प्रकाश या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है। सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिए। यदि अन्य भाषा में बातें करनी हो तो दो या बहुत हो तो तीन जन बारी-बारी से बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। परन्तु यदि अनुवाद करने वाला न हो तो अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया में शांत रहे और अपने मन से और परमेश्वर से बातें करें। भविष्यदूक्ताओं में से दो या तीन बोलें और शेष लोग उनके वचन को परखें। परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो तो पहला चुप हो

जाए। क्योंकि तुम सब एक-एक करके भविष्यवाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें और शांति पाएं। और भविष्यदूक्ताओं की आत्मा भविष्यदूक्ताओं के वश में है। क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शांति का परमेश्वर है।'' (1 कुरि. 14:23-33)।

इन सब बातों को देखते हुए हमें यह पता चलता है कि प्रेरित पौलुस यहां लोगों को यह बताने का प्रयत्न कर रहा है कि कलीसिया में भिन्न-भिन्न वरदान है और उन्हें कैसे इस्तेमाल करना है ताकि दूसरों को उससे लाभ पहुंच सके। दूसरे शब्दों में हम इसे इस प्रकार से देखते हैं कि यदि कोई कलीसिया में अन्य भाषा बोल रहा है और यदि वहां किसी के पास अनुवाद करने का वरदान नहीं है तो अच्छा होगा कि वह चुप रहे। आत्मिक वरदान आत्मिक उन्नति के लिये थे, गड़बड़ी फैलाने के लिये नहीं।

इन वरदानों का उद्देश्य वचन को दृण करना था। तथा कलीसिया की उन्नति के लिये था। हमें यह बात समझनी चाहिए कि उस समय नया नियम लिखित रूप में नहीं था और इसीलिये उस समय कलीसिया में इन वरदानों का होना आवश्यक था। यीशु ने भी जो सामर्थ के कार्य किये थे वे भी वचन को दृढ़ करने के लिये थे। इसके विषय में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के सामने दिखाएं जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए, परन्तु यह इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। (यूहन्ना 20:30-31)। यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने तथा जी उठने के पश्चात वह अपने पिता के पास स्वर्ग में चला गया तथा हम पढ़ते हैं कि प्रेरित लोग प्रचार करने लगे। लिखा है, ''और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा।'' (मरकुस 16:20)।

इब्रानियों का लेखक कहता है, ''इस कारण चाहिए कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी है और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहककर उनसे दूर चले जाएं। क्योंकि जो वचन स्वर्ग दूतों के द्वारा कहा गया था। जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते है? जिसकी चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई और सुनने वालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ। और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों और अद्‌भुत कामों और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा''। (इब्रानियों 2:1-4)। प्रेरित पौलुस लिखते हुए कहता है, ''पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है। (इफिसियो 4:7)। कलीसिया में मसीहीयों को अलग-अलग वरदान इसलिये दिये गये थे ताकि पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह अर्थात कलीसिया उन्नति पाए (इफि. 4:11-16)। इसलिये हमें यह जानने की आवश्यकता है कि यह वरदान कुछ समय के लिए थे, परन्तु अब हमारी अगुवाई के लिये हमारे पास यीशु का नया नियम है।

पाठ-14
दुष्टात्माओं को निकालना

पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में देखते हुए अपने इस पाठ में हम दुष्टात्माओं को निकालने के विषय में देखेंगे।

आज संसार में बहुत सारे लोगों का विचार है कि दुष्ट आत्माएं तथा बुरी आत्माएं लोगों में वास करती है। वे यह भी विश्वास करते हैं कि यह दुष्ट आत्मायें लोगों में प्रवेश करके उनके पूरे जीवन को कंट्रोल करती हैं। तथा फिर वे यह भी विश्वास करते हैं कि किसी विश्वासी की सहायता से उसे निकाला जा सकता है। परन्तु क्या बाइबल ऐसी शिक्षा देती है?

हम जानते हैं कि यीशु मसीह तथा प्रेरितों के दिनों में लोगों में दुष्ट आत्मायें होती थीं। यीशु ने कई बार कई स्थानों पर लोगों में से दुष्टात्माओं को निकाला था। उदाहरण के लिये हम एक घटना के विषय में देखते हैं जब यीशु ने दुष्टआत्मा को निकाला था, ''और वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुंचे। और जब वह नाव पर से उतरा तो तुरंत एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी कब्रों में से निकल कर उसे मिला। वह कब्रों में रहा करता था। और कोई उसे सांकलों से भी न बांध सकता था। क्योंकि वह बार-बार बेड़ियों और सांकलों से बांधा गया था पर उस ने सांकलों को भी तोड़ दिया, और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था। वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा और उसे प्रणाम किया। और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, हे यीशु परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र मुझे तुझसे क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं कि मुझे पीड़ा न दे। क्योंकि उसने उससे कहा था, हे अशुद्ध आत्मा इस मनुष्य में से निकल आ। उसने उस से पूछा, तेरा

क्या नाम है? उसने उससे कहा, मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत है। और उसने उस से बहुत बिनती की, हमें इस देश से बाहर न भेज। वहां पहाड़ पर सुअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। और उन्होंने उससे बिनती करके कहा कि, हमें उन सुअरों में भेज दे, कि हम उनके भीतर जाएं। सो उसने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सुअरों के भीतर पैठ गई और झुण्ड जो कोई दो हज़ार का था कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा, और डूब मरा। और उन के चरवाहों ने भागकर नगर और गांवों में समाचार सुनाया। और जो हुआ था लोग उसे देखने आए। और यीशु के पास आकर, वे उस को जिसमें दुष्टात्माएं थीं, अर्थात जिसमें सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर डर गए। और देखने वालों ने उसका जिस में दुष्टात्माएं थीं, और सुअरों का पूरा हाल उनको कह सुनाया। और वे उस से बिनती कर के कहने लगे कि हमारे सिवानों से चला जा। और जब वह नाव पर चढ़ने लगा, तो वह जिसमें पहिले दुष्टत्माएं थीं, उस से बिनती करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे। परन्तु उसने उसे आज्ञा न दी, और उससे कहा अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं। वह जाकर दिकपुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिए कैसे बड़े काम किए, और सब अचम्भा करते थे।'' (मरकुस 5:1-20)।

वास्तव में यह एक ऐसी घटना थी जब यीशु ने दुष्टात्माओं को निकाला था। परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि प्रेरितों का बपतिस्मा पवित्र आत्मा से हुआ था और इसलिये वे भी दुष्टात्माओं को निकालते थे। (मरकुस 16:17)।

जिन विश्वासियों पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे उनके पास भी पवित्र आत्मा की सामर्थ थी कि वे दुष्टात्माओं को निकाल सकें। उदाहरण के लिये जब फिलिप्पुस सामरिया में प्रचार करने गया तब हम पढ़ते हैं, ''और लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह् वह दिखाता था उन्हें देख

देखकर एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए। (प्रेरितों 8:6, 7)।

ऐसा लगता है कि यीशु और प्रेरितों के दिनों मे शैतान को शायद कोई विशेष स्वतंत्रता मिली हुई थी। क्योंकि दुष्टात्माएं खुले आम लोगों में प्रवेश करती थीं। जब तक यीशु, प्रेरित लोग तथा वे लोग जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे वहां विद्यमान थे तब तक परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि दुष्टात्माएं लोगों में प्रवेश करें। क्योंकि यीशु और प्रेरित लोग सामर्थ के द्वारा उन्हें निकाल देते थे। यह दिखाता है कि परमेश्वर का पूरा अधिकार शैतान पर था।

परन्तु कुछ ऐसे लोग भी थे जो यीशु पर यह आरोप लगाते थे कि वह बालजबूल या शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है। इसके विषय में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''तब लोग एक अंधे-गूंगे को जिसमें दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए, और उसने उसे अच्छा किया, और वह बोलने और देखने लगा। इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, ''यह क्या दाऊद की सन्तान है'' परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, ''यह तो दुष्आत्माओं के सरदार बालजबूल की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।'' उसने उनके मन की बात जानकर उनसे कहा, ''जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिसमें फूट होती है, बना न रहेगा। और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य कैसे बना रहेगा? भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो तुम्हारे वंश किसकी सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे। पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवंत के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले वह उस बलवंत को न बांध ले? तब वह उसका

घर लूट लेगा। जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में हैं, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता है।'' (मत्ती 12:22-30)।

वास्तविकता यह है कि यीशु ने परमेश्वर की सामर्थ द्वारा दुष्टात्माओं को निकाला तथा प्रेरितों ने भी ऐसा ही किया था और जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे उन्होंने भी दुष्टात्माओं को निकाला था। यदि वे शैतान के साथ होते तो कभी भी ऐसा नहीं होता कि वे दुष्टात्माओं को निकाल सकते। इस बात को हमें ध्यान में रखना चाहिए जबकि हम अपने इस अध्ययन को जारी रखते हैं।

हमें समझना चाहिए कि प्रेरित लोगों की मृत्यु हो चुकी है तथा जिन पर उन्होंने हाथ रखें थे वे भी मर चुके हैं। अब शैतान या दुष्टात्मा लोगों में प्रवेश नहीं कर सकते। हम इसे इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि अब दुष्टात्माएं लोगों में प्रवेश नहीं करती। जिस प्रकार से यीशु के समय में तथा प्रेरितों के दिनों में होता था। आज बहुत से लोग दावा करते हैं कि लोगों में आज भी दुष्टात्माएं रहती हैं तथा ऐसे भी लोग हैं जो यह दावा करते हैं कि उनके पास उन्हें निकालने की सामर्थ है। परन्तु यह लोग कौन हैं? यह इस प्रकार के लोग है जो ऐसे नामों से जाने जाते हैं जिनके विषय में हम बाइबल में नहीं पढ़ते। ऐसे प्रचारक हैं जो लोगों को बेवकूफ़ बनाते हैं। वे ऐसी ऐसी शिक्षाएं देते हैं जो बाइबल के विपरीत है।

आज लोगों में दुष्टात्मायें नहीं होती जैसे प्रेरितों और यीशु के समय में होती थी। शैतान आज लोगों के बीच में रहकर कार्य कर रहा है। लोग यदि अनुचित बातों से अपना मन फिरायें तथा परमेश्वर की आज्ञा को मानें तो वे शैतान से छुटकारा पा सकते हैं।

जिन्हें परमेश्वर के वचन का ज्ञान नहीं है तथा जो झूठे प्रचारकों के धोखे में आ जाते हैं वे यह विश्वास कर लेते हैं कि दुष्टात्मा आज भी लोगों में वास करता है। कई बार कुछ लोग मानसिक रोग से ग्रसित होते हैं तथा उनके विषय में कहा जाता है कि उनमें दुष्टात्मा प्रवेश कर गई है। यह बात सत्य नहीं है। अंधविश्वास लोगों में इतनी बुरी

तरह से जड़ पकड़ जाता है कि वे झूठे प्रचारकों के धोखे में बड़ी आसानी से आ जाते हैं। कई ऐसे धार्मिक गुरु होते हैं जो लोगों से कहते हैं कि इस व्यक्ति में दुष्टात्मा प्रवेश कर गई है तथा हम इसे निकाल देंगे। आप देखेंगे कि आपके आस-पास ऐसी बातें अक्सर देखी जाती हैं। और टी.वी. पर तो अक्सर ऐसी बातें प्रतिदिन दिखाई जाती हैं।

हमें शैतान से तथा उसकी चालाकियों से डरना नहीं चाहिए तथा पूरा भरोसा हमारा परमेश्वर में होना चाहिए। हमारा पूर्ण भरोसा यदि परमेश्वर में है तो शैतान हमें अपने धोखे में नहीं फंसा सकता। यदि आपने अभी तक सुसमाचर को नहीं माना है तो आज ही प्रभु यीशु में विश्वास कीजिये, अपने पापों से मन फिरायें, यीशु का अंगीकार करें कि वह परमेश्वर का पुत्र है तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लीजिये। शैतान आपसे दूर भागेगा तथा प्रभु यीशु आपके मन पर राज्य करेगा। वह आपके जीवन का प्रभु होगा।

पाठ-15
ईश्वरीय चंगाई

हमारे अध्ययन में अपने इस पाठ में हम ईश्वरीय चंगाई के विषय में देखेंगे।

आज बहुत सारे लोग जो यीशु में विश्वास करते हैं यह कहते हैं कि आश्चर्यकर्म आज भी किये जाते हैं। इस प्रकार का दावा करने वाले प्रचारक बड़े भावुक होते हैं, वे यीशु के आश्चर्यक्रमों की बात करते हैं तथा बाइबल से यह दिखाने का प्रयत्न करते हैं कि वे भी इन आश्चर्यक्रमों को कर सकते हैं। उनकी एक मनपसंद आयत है कि, 'यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है।' (इब्रानियों 13:8)। यह बात बिल्कुल सही है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु आज भी आश्चर्यकर्म कर रहा है। पहली स्त्री तथा पुरुष आश्चर्यकर्म द्वारा बनाये गये थे तथा उस रचना में प्रभु यीशु भी शामिल था, जिस प्रकार से हम उत्पत्ति 1:26, 27 में पढ़ते हैं, परन्तु आज वह ऐसा नहीं कर रहा है। इसलिये हमें कभी भी अपनी शिक्षा को प्रमाणित करने के लिये बाइबल की आयतों को तोड़-मरोड़ कर इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। क्योंकि हम किसी शिक्षा को सिखाना चाहते हैं इसलिये किसी आयत को दिखाकर उस शिक्षा को सही ठहराना चाहते हैं। हमें यह देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि यह आश्चर्यकर्म किसने किये थे तथा इन्हें करने का उद्देश्य क्या था और क्या प्रभु चाहता था कि इन्हें आज भी किया जाये?

फिर हम देखते हैं कि जो लोग कहते हैं कि आज आश्चर्यकर्म होते हैं वे बीमारों तथा अपाहिज़ लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिये मजबूर करते हैं कि अब वे केवल आश्चर्यकर्म से ही बच सकते हैं। कई प्रचारक तो आज रेडियो तथा टी.वी. पर भी लोगों को दिलासा देते हैं कि वे उन्हें आश्चर्यकर्म से ठीक कर देंगे तथा उनसे अधिक

से अधिक दान भेजने के लिए भी कहा जाता है। आज कई प्रचारक इसके द्वारा बहुत धनी हो गये हैं। उनका प्रचार केवल आश्चर्यकर्मों पर ही आधारित होता है। तौ भी इस सबके बावजूद हमारे अस्पताल बीमारों से भरे हुए हैं, डॉक्टरों द्वारा बड़े-बड़े ऑपरेशन किये जाते हैं, लाखों रुपयों की दवाईयां खरीदी तथा बेची जाती है, तथा लोग प्रतिदिन मरते भी हैं। यदि आज भी यीशु की तरह आश्चर्यकर्म किये जाते तो यह संसार बिल्कुल बदला हुआ संसार होता।

यीशु के समय में भी हम कह सकते हैं कि सारी बीमारियां तथा मृत्यु समाप्त नहीं हुई थी जबकि इतने सारे आश्चर्यकर्म उस समय में किये गये थे। हमें यह समझना चाहिए कि यीशु इसलिये जगत में नहीं आया था कि सारी बीमारीयों और पीड़ाओं को समाप्त कर दे। वो इसलिये नहीं आया था कि सारे अंधों, लंगड़ों तथा बहिरों को चंगा कर दें और मरे हुओं को ज़िन्दा कर दे। वह इसलिये नहीं आया था कि संसार में कोई बीमार और दुखों से पीड़ित न हो। यदि वह इसी उद्देश्य के लिये आता तो वह यही करता। परन्तु वह पाप में खोये हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया था। (लूका 19:10)। उसने लोगों को इसलिये चंगा किया था ताकि वह उन्हें निश्चय दिला सके कि उसे परमेश्वर ने भेजा है, और वह परमेश्वर का पुत्र है। मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों को यदि आप पढ़ेंगे तो आप देखेंगे कि बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि लोग आश्चर्यकर्मों को देखकर उसमें विश्वास करें। उदाहरण के लिये हम पढ़ते है, ''जब वह यरूशलेम में फ़सह के समय पूर्व में था तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया।'' (यूहन्ना 2:23)।

बाद में हम देखते हैं कि यूहन्ना ने फिर से लिखा कि, ''यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके

नाम से जीवन पाओ।'' (यूहन्ना 20:30, 31)। यीशु ने आश्चर्यकर्म इसीलिये किये थे ताकि लोग उसमें विश्वास लायें। अंधे, लंगड़े, बहिरे सब उसके द्वारा चंगे किये गये। परन्तु उसका उद्देश्य केवल लोगों को शारीरिक रूप से चंगा करना नहीं था और न ही वह लोगों से यह कहता था कि अब तुम अगली बार आना क्योंकि अभी तुम्हारे विश्वास में कमी है। जो उसके पास आते थे वे सब चंगे होकर जाते थे। आजकल के प्रचारकों की यह धारणा है कि यीशु का उद्देश्य केवल चंगाई देना था। ऐसा लगता है कि उनकी सोच यही है कि कोई भी बीमार न रहे और यदि बीमार पड़ भी जाये तो चंगा हो जाये और किसी की भी मृत्यु न हो और किसी के पास कोई समस्या न आये और सब बिना किसी दु:ख मुसीबत के रहें। वे शायद यह भूल जाते हैं कि बीमारी तथा दु:ख मुसीबत हमारे जीवन का एक भाग है। उनके दावों के बावजूद अभी भी यह संसार उन लोगों से भरा हुआ है जो शारीरिक रूप से विकलांग हैं।

जब यीशु ने आश्चर्यकर्म किये थे तब उसने मृतकों को भी जीवित किया था। क्या आज कोई ऐसा व्यक्ति विद्यमान है जो किसी मृतक व्यक्ति को ज़िन्दा कर दे? हमारे कई प्रसिद्ध नेताओं की जब मृत्यु हुई तो ऐसे लोगों के पास यह सुअवसर था कि वे उन्हें ज़िन्दा कर दें और यदि वे ऐसा कर सकते तो ज़रा सोचिये कि पूरे संसार में एक हलचल सी मच जाती और सारे टी.वी. चैनलों पर रात दिन यह बात दिखाई जाती। और लाखों-करोड़ों लोग यीशु के अनुयायी बन जाते। परन्तु क्या कभी आपने सोचा है कि वे मृतकों को जीवित करने की बात क्यों नहीं करते? इसका साधारण सा उत्तर यही है कि वे किसी मृतक को जीवित ही नहीं कर सकते। इसके लिये शायद वे बहुत से बहाने बनाये। वे कहते हैं कि यह आश्चर्यकर्म हम नहीं कर रहे बल्कि यीशु कर रहा है। वे यह तो कहते हैं कि यीशु उनके द्वारा कार्य करता है। परन्तु जब हम उनसे मृतक को जीवित करने की बात करते हैं तब वे कहते हैं कि प्रभु की परीक्षा मत लो। वे जानते हैं कि वे ऐसा नहीं कर

सकते। और इसीलिये कहते हैं कि प्रभु की परीक्षा मत लो।

हां, कुछ दावे उनके बड़े पक्के होते हैं जैसे सिर का दर्द, पीट का दर्द, बुखार, ट्यूमर, डायबिटिज़, दिल की बीमारी इत्यादि परन्तु डॉक्टर कहते हैं कि कुछ ऐसी बीमारियां, मनुष्य के दिमाग़ में समाई हुई होती हैं तथा कुछ के मन में इतना दृढ़ विश्वास होता है कि वे ठीक हो जाएंगे। परन्तु क्या कभी आपने देखा है कि किसी का हाथ सूखा हुआ है और उसे नया हाथ मिल गया हो? नये पैर अथवा नई आंखें मिल गई हो? यीशु के जब आश्चर्यकर्म होते थे तो लोगों को उसी समय नये हाथ पैर और नई आंखें मिल जाती थीं।

परन्तु क्या कभी आपने विचार किया है कि आश्चर्यकर्म है क्या? इसका अर्थ है कुदरत के विपरीत कुछ करना। कोई जन्म से अंधा हो उसे नई आंखें दे देना, किसी का हाथ या पैर कट गया हो उसे नया हाथ या पैर दे देना। किसी की मृत्यु हो गई हो उसे जीवित कर देना। आश्चर्यकर्म कोई ऐसी बात नहीं है जिसे हम नहीं समझ सकते।

प्रभु यीशु और उसके प्रेरितों ने आश्चर्यकर्म किये थे तथा प्रेरितों ने जिन पर हाथ रखे थे उन्होंने भी इन कार्यों को किया था और हम इसके विषय में नये नियम में पढ़ते हैं। वे इसलिये आश्चर्यकर्म करते थे क्योंकि उनके पास लिखित रूप में प्रभु का वचन नहीं था। लोगों को विश्वास दिलाने के लिये वे इन अदभुत कार्यों को किया करते थे। अब जबकि हमारे पास परमेश्वर का वचन लिखित रूप में आ गया है तब आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रेरित पौलुस ने कहा था, ''क्योंकि विश्वास सुनने से और सुनना, मसीह के वचन से होता है।'' (रोमियों 10:17)। यदि आप प्रभु के वचन को पढ़कर और सुनकर उसमें विश्वास नहीं करते तब आप आश्चर्यकर्म देखकर भी उसमें विश्वास नहीं करेंगे।

हम यह नहीं कह रहे कि प्रभु आज आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता, या अपने दासों के द्वारा उन्हें नहीं करवा सकता। और यह भी बात नहीं है कि उसमें अब सामर्थ नहीं है। दोस्तो, वास्तविकता तो यह है कि

प्रभु के पास अब एक अच्छा तरीका है जो अपने लोगों को सुसमाचार प्रचार करने के लिये उसने दिया है और यह एक बहुत अच्छा और सरल तरीका है और यह है उसका वचन अर्थात बाइबल। आश्चर्यकर्म एक थोड़े समय के लिये थे। अब परमेश्वर का वचन बाइबल हमारे पास है, इसे पढ़ें, इसमें विश्वास करके प्रभु की आज्ञा को मानें। यदि हम ऐसा करेंगे तो प्रभु हमारा उद्धार करेगा। क्योंकि लिखा है कि, ''विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' (रोमियों 10:17)

पाठ-16
अन्य भाषाओं में बात करना

पवित्र आत्मा के कार्य की इस श्रृंखला में हम इस पाठ में ''अन्य भाषाओं में बात करने के विषय में देखेंगे''। आज के युग में अक्सर यह बात कही जाती है कि सारे विश्वासियों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लेना आवश्यक है या सारे प्रभु में विश्वास करने वाले पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लेते हैं। यह बात अधिकतर पैन्टीकॉस्टल लोगों द्वारा कही जाती है। और इसलिये वे यह भी कहते हैं कि इसका चिन्ह है अन्य भाषाओं में बात करना। अन्य भाषाओं में बात करने का उनका तरीका है मुँह से तरह-तरह की आवाज़ें निकालना तथा उनके अनुसार यह अवाज़ें स्वर्ग से हैं तथा परमेश्वर इन्हें समझता है। कई बार वे ऐसा कहते हैं कि आत्मा मिलने के पश्चात् यदि कोई अन्य भाषा बोलने में असमर्थ है तो वह व्यक्ति आवाज़ निकाल रहे हैं, लोगों की आवाज़ की नकल करने की कोशिश करता है। मैं यहां इन लोगों की नुक्ताचीनी नहीं कर रहा परन्तु इस सत्य को यहाँ इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि उनके अपने ही लोग जो उनको छोड़कर आये हैं उन्होंने हमें इसके विषय में बताया है। परन्तु आईये अब हम परमेश्वर के वचन से देखते हैं कि वचन इस विषय पर क्या कहता है? आपको याद होगा कि हमने अपने पिछले पाठों में देखा था कि यीशु ने अपने प्रेरितों पर पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा की थी। (यूहन्ना 14:26)। जब प्रेरितों का पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा हुआ था, तब हमने देखा था कि वे अन्य भाषा बोलने लगे, ''वे सब (प्रेरित) पवित्र आत्मा से भर गए और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने लगे।'' (प्रेरितों 2:1-4) और आगे हम पढ़ते हैं, ''आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रह रहे थे। जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए,

क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।'' (प्रेरितों 2:5-6)।

इसी घटना के विषय में हम आगे देखते हैं कि कई राष्ट्रों से वहाँ लोग आए हुए थे तथा यह सब देखकर वे बहुत चकित थे और साथ ही उनको यह सारा माहोल बड़ा गड़बड़ी वाला लग रहा था। तथा वे ऐसा सोच रहे थे कि यह कुछ गरीब, अनपढ़ गलीली पुरुष इस प्रकार से बोल रहे हैं, जैसे इन्होंने मदिरा पी रखी है। (प्रेरितों 2:7-13)। परन्तु प्रेरित पतरस ने उन्हें समझाया कि उन्होंने कोई नशा नहीं किया है जैसा कि लोग उनके विषय में सोच रहे थे, क्योंकि पतरस ने उनसे कहा अभी तो सुबह हो रही है, और यह मदिरा पीने का समय थोड़ी है, परन्तु यह सब इसलिये हो रहा है क्योंकि योएल भविष्यदूक्ता ने भविष्यवाणी करके कहा था कि परमेश्वर कहता है कि ''अन्त के दिनों में मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूंगा''। (प्रेरितों 2:7-17)। दूसरे शब्दों में प्रेरितों का पवित्र आत्मा से बपतिस्मा होना था। कुछ उन विश्वासियों को भी यह बपतिस्मा मिलना था जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे।

क्योंकि प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था इसलिये वे अन्य भाषाओं में बात कर सकते थे। प्रभु जानता था कि वे कई भाषाओं के जानने वाले लोगों से बात कर सकेंगे और इसीलिये उसने उन्हें अन्य भाषाओं में बोलने की योग्यता दी थीं और यह इसलिये भी किया गया था ताकि लोगों को यह निश्चय दिलाया जा सके कि वे परमेश्वर की ओर से भेजे गये हैं और परमेश्वर का वचन शीघ्रता से फैलाया जा सके। उन्हें किसी भाषा का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उन्हें अन्य भाषा बोलने का वरदान मिला था।

प्रेरितों ने कुछ पर हाथ रखे थे ताकि उन्हें यह दान मिल सके कि वे अन्य भाषा में बात कर सकें। हम प्रेरितों 19 अध्याय में पढ़ते हैं जहाँ प्रेरित पौलुस कुछ लोगों को प्रभु के पास लाया था और यहाँ इस प्रकार से लिखा है, ''जब पौलूस ने उन पर हाथ रखे तो पवित्र आत्मा

उन पर उतरा और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे। (प्रेरितों 19:6) प्रभु यह जानता था कि प्रेरित केवल 12 हैं तथा प्रेरित पौलूस बाद में आया था तथा उसे मिलाकर यह 13 होंगे। प्रभु यह भी जानता था कि इन्हें कई स्थानों पर प्रचार के लिये जाना होगा तथा इन्हें सहायता की आवश्यकता होगी। इसीलिये उसने कुछ चुने हुओं पर हाथ रखने का अधिकार दिया था ताकि उन्हें भी पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके, और हम देखते हैं कि जिन पर हाथ रखे गये थे वे आश्चर्यकर्म कर सके तथा अन्य भाषा में भी बात कर सके।

परन्तु उनके विषय में क्या है जिन्हें साधारण रूप से पवित्र आत्मा का दान मिला है जिसके विषय में हम प्रेरितों 2:38 में पढ़ते हैं? क्या ये लोग अन्य भाषा बोल सकते थे? नहीं! और कहीं भी हमें नये नियम में इसका उदाहरण नहीं मिलता कि इन लोगों ने अन्य भाषा बोली। क्योंकि प्रेरितों की मृत्यु हो चुकी थी और आज हमारे बीच में प्रेरित नहीं है तथा जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे वे भी मर चुके हैं इसलिये आज कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो ऐसा करने के योग्य है। आज बहुत से लोग हैं जो ऐसा करने का दावा करते हैं परन्तु वे केवल मुँह से आवाज़ें निकालते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता और न ही कोई उन्हें समझ सकता है। जब वे संसार के किसी और भाग में जाते हैं जहाँ दूसरी भाषा बोली जाती है तो उन्हें वहाँ की भाषा सीखनी पड़ती है ताकि वहाँ पर बात कर सकें या कोई व्यक्ति उनके लिये अनुवाद करे। तमाम वे प्रचारक जो अन्य भाषाएँ बोलने का दावा करते हैं, जब दूसरे स्थानों पर जाते हैं तो उन्हें अनुवादक की आवश्यकता होती है। यह बात इस बात को भी प्रमाणित करती है कि उनका बपतिस्मा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं है और इसलिये वे प्रेरितों की तरह अन्य भाषा में बात नहीं कर सकते।

परन्तु यह अन्य भाषा है क्या? इसका अर्थ है एक ऐसी भाषा जिसे हम जानते नहीं। यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह भाषा बोल नहीं सकता तथा उसका अनुवाद नहीं किया जा सकता तब उस व्यक्ति को

चुप रहना चाहिए। पौलूस ने कहा था, ''मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सब से अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ। परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हज़ार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि दूसरों को सिखाने के लिये बुद्धि से पाँच ही बातें कहूँ''। (1 कुरि. 14:18, 19)। पौलूस यहाँ यह कह रहा है कि उसके पास, कई भाषायें बोलने की सामर्थ है परन्तु इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह कहता है कि, ''मैं बुद्धिमानी से यदि पाँच शब्द बोल दूं तो यही काफ़ी है बज़ाय इसके कि मैं बिना समझे दस हज़ार शब्दों को बोलूँ।'' इस बात में तर्क लगता है और यह बात सही भी है।

प्रेरित यह भी कहता है कि अन्य भाषाएँ विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये चिन्ह है। वह कहता है, ''इसलिये अन्य भाषाएँ विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये चिन्ह हैं, ओर भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु विश्वासियों के लिये चिन्ह है।'' (1 कुरि. 14:22)। हम पहिले ही देख चुके हैं कि प्रेरितों को तथा जिन पर उन्होंने हाथ रखे यह सामर्थ देने का कारण था ताकि वे अन्य भाषा में बात कर सकें और लोगों को यह निश्चय दिला सकें कि उन्हें परमेश्वर ने भेजा है और इसके द्वारा दूसरों को प्रभु के पास ला सकें। परन्तु आज यदि इस आधुनिक युग में हम किसी ऐसी आराधना में जाते हैं जहाँ लोग अन्य भाषा बोलने का दावा करते हैं तो अक्सर वहाँ केवल विश्वासी ही होते हैं।

आखिर में हम यह देखते हैं कि पौलूस कहता है कि अन्य भाषाएँ एक दिन समाप्त हो जाऐंगी। लेकिन यह कब होगा? यह तब हुआ जब नया नियम पूरा लिखित रूप में दे दिया गया था। पौलूस ने कहा था, ''प्रेम कभी टलता नहीं, भविष्यवाणियाँ हो, तो समाप्त हो जाएगी; भाषाएँ हों तो जाती रहेंगी, ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी; परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा तो अधूरा मिट जाएगा।'' (1 कुरि. 13:8-10)। यहाँ वह किस

सर्वसिद्ध की बात कर रहा है? याकूब इसे स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था कहता है, जो कि नया नियम है। (याकूब 1:25)। जब तक नया नियम नहीं दिया गया था तब तक आश्चर्यकर्म, अन्य भाषा बोलना यह सब बातें प्रचार करने में सहायता करती थीं। परन्तु अब जबकि प्रचार के लिये हमारे पास प्रभु का नया नियम उपलब्ध है तब हमें दूसरी वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है।

इस बात को दिमाग़ में रखिये कि जो लोग पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का दावा करते हैं तथा कहते हैं कि वे आश्चर्यकर्म कर सकते हैं तथा अन्य भाषा बोल सकते हैं वे आपस में ही बँटे हुए हैं, वे एक-दूसरे का विरोध करते हैं। तथा ऐसी बातों में विश्वास करते हैं जिनके विषय में हम बाइबल में कहीं नहीं पढ़ते। यह सब होते हुए वे कैसे कह सकते हैं कि उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया है? वे खुद भी धोखे में है तथा दूसरों को भी धोखा दे रहे हैं। इन बातों की सच्चाईयों को जानने के लिये अपनी बाइबल का अध्ययन कीजिये।

पाठ-17
आज परमेश्वर मनुष्य से किसके द्वारा बात करता है?

पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में अपने अध्ययन को जारी रखते हुए हम देखेंगे कि परमेश्वर आज किसके द्वारा मनुष्य से बातचीत करता है?

बहुत से लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि परमेश्वर सीधे मनुष्य से बातचीत करता है। वे कहते हैं कि परमेश्वर ने उनसे बात की है और उसने उन्हें बताया है कि उनके साथ क्या-क्या होने वाला है। परमेश्वर मेरे से तो कभी इस तरह से बात नहीं करता, परन्तु क्या वह आपसे इस तरह से बात करता है? यदि वह किसी से सीधे प्रगट होकर बात करता है और किसी से इस प्रकार से बात नहीं करता तो क्या यह परमेश्वर को पक्षपात करने वाला नहीं बना देगा? इससे पहिले कि इस बात के विषय में हम आगे बढ़ें आईये देखें कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है?

यह बात सत्य है कि परमेश्वर ने अलग-अलग युग में लोगों से भिन्न-भिन्न तरीके से बात की थी। आरंभ में उसने पूर्वजों से सीधे बातचीत की थी तथा घर के मुखिया से वह सीधे बात करता था। जो भी बात परमेश्वर परिवार के मुखिया से करता था वो बातें मुखिया परिवार को बताता था कि परमेश्वर ने इस प्रकार से कहा है। बाद में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने भविष्यदूक्ताओं के द्वारा भी बातचीत की थी। तथा वो लोगों को परमेश्वर द्वारा दिये गये संदेश को देते थे। अन्त में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु के द्वारा बातें की। इब्रानियों का लेखक कहता है, ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा करके भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं

का वारिस ठहराया। (इब्रानियो 1:1-2)।

पतरस ने इस प्रकार से कहा था, ''क्योंकि जब हमने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं था वरन हमने आप ही उसके प्रताप को देखा था। क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से आदर और महिमा पाई और उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं।'' तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी। हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो, जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अंधियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से, बोलते थे'' (2 पतरस 1:16-21)।

सबसे पहिले ध्यान देने योग्य बात यह है कि पतरस उस समय की बात कर रहा है जब प्रभु का रूपानत्रण हुआ था और स्वर्ग से आवाज़ आई थी, कि, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं, अत्यंत प्रसन्न हूं इसकी सुनो (मत्ती 17:5) यूहन्ना ने यीशु को वचन बताते हुए कहा था, ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही, आदि में परमेश्वर के साथ था। (यूहन्ना 1:1-2)। बाद में वह कहता है, ''यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के सामने किए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे है कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।'' (यूहन्ना 20:30-31)।

दूसरी बात पतरस बताता है कि पवित्र जन पवित्र आत्मा के द्वारा

उभारे जाकर बोले। पौलुस इस प्रकार से कहता है, ''सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश समझाने और सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' (2 तीमु. 3:16-17)। जब पौलुस कहता है कि परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा सारा पवित्र शास्त्र रचा गया है तो वह पवित्र आत्मा की बात कर रहा है जिसने अपनी अगुवाई द्वारा इसे लिखवाया था। यह परमेश्वर का वचन है मनुष्य का वचन नहीं है। इसलिये यह मनुष्य को हर भले कार्य के लिये तत्पर करता है। परमेश्वर जानता था कि मनुष्य को क्या जानने की आवश्यकता है। पतरस ने इसके विषय में यह लिखा था, ''क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सदगुण के अनुसार बुलाया है। (2 पतरस 1:3)। इस बात पर ध्यान दीजिये कि प्रभु ने जीवन और भक्ति से सम्बंधित सारी बातों को हमें दे दिया है। उसने यह किस प्रकार से किया है? अपने पवित्र वचन के द्वारा।

प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था, तथा उन्होंने कुछ चुने हुए चेलों पर हाथ रखे थे ताकि उन्हें भी यह सामर्थ मिले। यह सब कुछ उनकी अगुवाई करने के लिये दिया गया था क्योंकि अभी तक नया नियम पूरा तैयार होकर मनुष्य को नहीं दिया गया था। प्रेरित पौलुस ने कहा था जब वह सर्वसिद्ध आयेगा अर्थात नया नियम तब आश्चर्यकर्म समाप्त हो जाएंगे। अन्त में नया नियम मनुष्य को पूर्ण रूप से दे दिया गया जिसके विषय में याकूब कहता है, ''पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही करता है।'' (याकूब 1:25)।

यीशु ने कहा था कि उसका वचन कभी टलेगा नहीं। उसने यह शब्द कहे थे, ''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी

न टलेगी'' (मत्ती 24:35)। पतरस कहता है, ''परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है।'' (1पतरस 1:25)। परमेश्वर के वचन में न हमें कुछ बढ़ाना है और न ही उसमें से कुछ घटाना है और इसी बात को यहून्ना ने इस प्रकार से कहा था, ''मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस पुस्तक में लिखी है, उस पर बढ़ाएगा। यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले तो परमेश्वर उस जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा। (प्रकाशित 22:18-19)।

यीशु के सुसमाचार के विषय में प्रेरित पौलुस कहता है, ''मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह में बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे हो। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते हैं, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो। (गलतियो 1:6-9)।

इन सब आयतों से हमें यह ज्ञात होता है कि यह सब परमेश्वर की ओर से उसका वचन है, यह मनुष्य को पूरा होने के पश्चात दिया गया है। प्रेरित पौलुस कहता है, ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' (रोमियों 10:17)। कौन से परमेश्वर के वचन की बात कर रहा है वह? यह लिखा हुआ उसका वचन है जो आज हमारे पास है, जो नये नियम के रूप में हमें दिया गया है।

क्या आज परमेश्वर लोगों पर प्रगट होकर उन्हें नया वचन दे रहा है? क्या वह जो औरों पर प्रकट होकर कुछ बोल रहा है, दूसरों को उससे दूर रख रहा है? नहीं ऐसा नहीं है। यदि वह अभी भी लोगों पर प्रकट होकर उन्हें अपना प्रकाशन दे रहा है तब इसका अर्थ क्या यह

है कि हमारे पास अभी पूर्ण रूप से परमेश्वर का वचन नहीं है? तब बाइबल का क्या फ़ायदा है? जब वह लोगों से सीधे बात कर रहा है तब उसकी इच्छा जो हमारे लिये नये नियम में है उसका क्या होगा? मेरे मित्र, इस सबसे हमें यह जान लेना चाहिए कि परमेश्वर किसी मनुष्य से आज सीधे बात नहीं करता बल्कि उसने अपना नया नियम हमें दिया है ताकि हम उसकी इच्छा को जान सकें।

मेरे मित्रो! धोखा न खाओ। यदि आप परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं तो बाइबल की तरफ जाइये। आप अपने नये नियम को पढ़िये, तब आप जानेंगे कि परमेश्वर आप से कहता है कि उद्धार पाने के लिये आपको क्या करना है?

पाठ-18
प्रचार के लिये बुलाहट

पवित्र आत्मा के कार्य के इस अध्ययन में हम प्रचार के लिये बुलाहट के विषय में देखेंगे। आपने कई बार लोगों को कहते सुना होगा कि प्रभु ने उन्हें सपने में दिखाई देकर प्रचार करने के लिये कहा है। या हमें परमेश्वर से प्रचार के लिये बुलाहट आई है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या परमेश्वर इस प्रकार से लोगों को प्रचार के लिये बुलाता है?

जब हम मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों को पढ़ते है तो वहां हम देखते हैं कि किस प्रकार से प्रभु ने अपने बारह चेलों को प्रचार करने के लिये बुलाया था। यह लोग बाद में यीशु के प्रेरित कहलाये। यीशु ने उन्हें स्वयं प्रचार करने के लिये बुलाया था और उन्होंने उसके आश्चर्यकर्मों को देखा था तथा उसकी शिक्षाओं को सुना था और अपने आपको उन्होंने तैयार किया था ताकि, वह उसके जाने के पश्चात प्रचार के कार्य को आगे बढ़ा सकें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने केवल सच्चाई का ही प्रचार किया क्योंकि यीशु ने उनसे वायदा किया था कि वह उनकी अगुवाई के लिये एक सहायक भेजेगा अर्थात पवित्र आत्मा जो उन्हें सब बातें याद दिलायेगा। वह उनकी सहायता करेगा ताकि वे आश्चर्यकर्म कर सकें तथा अन्य भाषाओं में बात कर सकें। यह सब इसलिये सम्भव था ताकि लोगों को यह विश्वास हो सके कि वे परमेश्वर द्वारा भेजे गए है तथा उसकी इच्छा को लोगों पर प्रकट कर सकें। (यूहन्ना 14:26; मरकुस 16:20)।

बाद में हम देखते हैं कि प्रेरितों ने सात लोगों को चुना कि उन पर प्रेरितों द्वारा हाथ रखे जायें और उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ दी जाए ताकि वे भी आश्चर्यकर्म कर सकें। इस सबका उद्देश्य यह था कि

इससे प्रभु का कार्य आगे बढ़ सके। बाद में और भी लोगों को प्रेरितों ने चुना था ताकि उनके द्वारा प्रभु के कार्य को आगे बढ़ाया जा सके।

यीशु ने संसार से वापस जाने से पहिले एक आज्ञा अपने चेलों को दी थी जिसे हम महान आज्ञा भी कहते हैं, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जायेगा।'' (मरकुस 16:15-16), फिर हम पढ़ते हैं कि इसी बात को यीशु ने फिर से कहा था, ''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें, आज्ञा दी है, मानना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।'' (मत्ती 28:19-20)। अब यहां ध्यान दीजिये कि उसकी आज्ञा है: ''जाओ और प्रचार करो।'' किसे प्रचार करो? सारे जगत के लोगों को। किसे जाना है प्रचार के लिये? प्रेरितों को तथा उन लोगों को जो बपतिस्मा लेकर मसीही बने हैं। इसलिये हमें भी जाना है और यीशु के सुसमाचार को लोगों को बताना है।

कहीं पर भी हम यह नहीं पढ़ते कि लोगों को कोई निशान दिखाया गया था या सपने में उनसे कहा गया कि जाकर प्रचार करो। परमेश्वर की बुलाहट इस प्रकार से नहीं है। उसने अपने लोगों से पहिले कह दिया है कि जाओ और सुसमाचार का प्रचार करो। परमेश्वर को इसकी कोई आवश्यकता नहीं है कि वह किसी को व्यक्तिगत रूप से सपने में कहे कि जाओ और जाकर सारे लोगों को प्रचार करो। उसे इसकी आवश्यकता क्यों होगी?

परमेश्वर हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाता है, जिस प्रकार से उसके वचन में लिखा हुआ है कि वह सुसमाचार के द्वारा लोगों को बुलाता है और हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और

मन में दीन हूँ, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।'' (मत्ती 11:28-29)। प्रेरित पौलूस ने मसीहीयों से कहा था, ''जिस के लिये उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।'' (2 थिस्स. 2:14)। सुसमाचार धन की तरह, मिट्टी के बरतनों में रखा हुआ है (2 कुरि. 4:7) और हम मसीही वे बरतन हैं जिन्हें सुसमाचार को दूसरों तक ले जाना है। पौलूस ने कहा था कि यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो श्रापित हो। (गलतियों 1:6-9)। इसलिये हम यह कहते हैं कि परमेश्वर ने अपने सुसमाचार को वचन में प्रगट किया है और हमें इसे दूसरों के पास ले जाना है। जो इसे सुनते है और मानते हैं वे सुसमाचार के द्वारा बुलाए गए हैं और वे भी दूसरों के पास इस सुसमाचार को ले जाते हैं।

अब हमें इस बात को इस तरह से नहीं समझना चाहिए कि सब लोगों को खड़े होकर सबके सामने प्रचार करना है। स्त्रियां सबके सामने जहां पुरुष भी बैठे हैं प्रचार नहीं कर सकती क्योंकि बाइबल इसके विषय में मना करती है। स्त्रियां अलग से दूसरी स्त्रियों तथा बच्चों को सिखा सकती है परन्तु कलीसिया में जहां पुरुष भी हैं उन्हें चुप रहने के लिये कहा गया है। (1 कुरि. 14:34, 1 तीमु. 2:11-12)। आज बहुत सी स्त्रियां सबके सामने खड़े होकर प्रचार करती है जबकि बाइबल इसके लिये मना करती है, परन्तु चाहे वे बाइबल से सत्य का भी प्रचार कर रही हों, वे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघंन कर रही है।

परन्तु पुरुषों के बारे में क्या है? सब पुरुष सबके सामने खड़े होकर प्रचार नहीं कर सकते क्योंकि उनके पास योग्यता या प्रशिक्षण नहीं है। यदि योग्यता नहीं है तो उन्हें सबके सामने खड़े होकर प्रचार नहीं करना चाहिए। परन्तु फिर भी जब कोई परमेश्वर की आज्ञा मानकर बपतिस्मा ले लेता है तब उसकी यह जिम्मेदारी है कि वह

दूसरों को प्रचार करे तथा उन्हें यीशु और उसके उद्धार के विषय में बतायें।

आज ऐसे, भी लोग है जिन्हें कुछ आता नहीं है और न ही उन्हें बाइबल का ज्ञान है, लेकिन वे कहते हैं कि हमें प्रचार के लिये परमेश्वर की बुलाहट आई है तथा परमेश्वर उन्हें बताएगा कि उन्हें क्या प्रचार करना है। ऐसा कहकर वे गलत बोल रहे हैं तथा वे झूठ का प्रचार करते हैं और परमेश्वर कभी भी झूठ का प्रचार करने में उनकी अगुवाई नहीं करेगा। ये लोग ऐसी बातों का प्रचार करते है जिनके विषय में हम बाइबल में कहीं नहीं पढ़ते। वे ऐसी कलीसियाओं में है, जिनके विषय में हम बाइबल में कहीं नहीं पढ़ते। वे शायद अपने को प्रचारक तो कहते हैं परन्तु वे झूठ का प्रचार करते हैं। यूहन्ना ऐसे लोगों के विषय में कहता है, ''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीती न करो, वरन आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यदूक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1) झूठे प्रचारक उस समय में भी थे और आज भी हैं। परन्तु हमें उन्हें परखना चाहिए। उनकी शिक्षा को वचन से मिलाकर देखें। यदि उनकी शिक्षा बाइबल अनुसार नहीं हैं तब वे झूठे प्रचारक है। यूहन्ना इसी बात के विषय में आगे कहता है, ''जो आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी। यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में साझी होता है।'' (2 यूहन्ना 9-11)।

हाँ, आज हमें प्रचारकों की आवश्यकता है, और ऐसे प्रचारक जिन्हें अच्छा ज्ञान है जो केवल सत्य का प्रचार करते हैं। हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो प्रभु से प्रेम करते है। हमें ऐसे प्रचारकों की आवश्यकता नहीं है जो पैसे के लिये काम करते हैं। जवान प्रचारक

तीमुथियुस को प्रेरित पौलूस इस प्रकार से लिखता है, ''परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, उसे और उसके प्रगट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे चिताता हूँ, कि तू वचन को प्रचार कर, समय असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा कि लोग ख़रा उपदेश न सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेगें। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा कहानियों पर लगाएगें। पर तू सब बातों में सावधान रह, दु:ख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर। (2 तीमु. 4:1-5)।

पाठ-19
मन परिवर्तन में पवित्र आत्मा का कार्य

पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में हमारा अध्ययन चल रहा है। यह जानना हमारे लिये आवश्यक है कि पवित्र आत्मा कौन है तथा वह किस प्रकार से कार्य करता है?

मन परिवर्तन का अर्थ है किसी के जीवन में बदलाव आना। बाईबल अनुसार मन परिवर्तन तब होता है जब कोई परमेश्वर में विश्वास करता है, अपने पापों से मन फिराता है, यीशु को परमेश्वर का पुत्र अंगीकार करता है तथा अपने पापों को धोने के लिये बपतिस्मा लेता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम लगभग ग्यारह ऐसी घटनाओं के विषय में पढ़ते हैं जिनमें लोगों का मन परिवर्तन हुआ था और आप इन घटनाओं में देखेगें कि सब लोगों ने उद्धार पाने के लिये प्रभु की एक सी आज्ञा को माना था। परन्तु हम यह देखना चाहेंगे कि इन सब घटनाओं में पवित्र आत्मा ने क्या कार्य किया?

आइये इसके लिये यूहन्ना का तीसरा अध्याय देखें तथा जानें कि यीशु ने नये जन्म के विषय में क्या सिखाया था? यहां पर इस प्रकार से लिखा है, ''फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहुदियों का सरदार था। उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है; यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकेदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्यों कर जनम ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य

जल और आत्मा से न जन्मे वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा; कि तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है। नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया, कि यह बातें क्यों कर हो सकती है? यह सुनकर यीशु ने उस से कहा, तू इस्त्राएलियों का गुरू हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता? मैं तुझ से सच-सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हमने देखा है, उस की गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते। अब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं, तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे? और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।'' (यूहन्ना 3:1-13)।

यीशु तथा नीकेदेमुस के बीच जो बातचीत हुई उस पर ध्यान दीजिये। यहां एक व्यक्ति है जो फरीसी है तथा बहुत धार्मिक भी है तथा यीशु में उसका बहुत विश्वास भी है। वह आसपास के अपने लोगों से भयभीत था इसलिये यीशु को मिलने के लिये वह रात को आया। इसके विषय में दो और स्थानों पर हम पढ़ते हैं, जब एक बार वह यीशु के पक्ष में बोला था तथा दूसरी बार जब यीशु की मृत्यु हुई थी तब वह गंधरस और एलवा लेकर गया था जो दफ़न करने के समय इस्तेमाल किया जाता था। परन्तु नीकेदेमुस ने अपने विश्वास को यीशु में इस प्रकार से प्रकट किया, ''हे रब्बी हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।''

इस बात को जारी रखते हुए यीशु निकेदेमुस से कहता है कि

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है। अभी इस समय राज्य या कलीसिया की स्थापना नहीं हुई थी, परन्तु इसकी स्थापना शीघ्र होने वाली थी तथा इसमें प्रवेश करने का केवल एक ही रास्ता था कि आत्मिक रूप से जन्म लिया जाए।

निकेदेमुस का विचार था कि यीशु शारीरिक जन्म के विषय में बात कर रहा है तथा वह यह जानना चाहता था कि बूढ़ा होने के पश्चात किस प्रकार से कोई व्यक्ति जन्म ले सकता है? तब यीशु ने उसे समझाया कि वह किस प्रकार के जन्म के विषय में बात कर रहा है? यीशु यहां शारीरिक जन्म के विषय में बात नहीं कर रहा था क्योंकि इस राज्य अथवा कलीसिया में शारीरिक रूप से जन्म नहीं लेते। यीशु यहां आत्मिक जन्म की बात कर रहा था और यह जन्म पानी में बपतिस्मा लेकर होना था। आज्ञा मानने का एक कार्य है जिसके साथ जल जुड़ा हुआ है और वो है बपतिस्मा लेना। हम पढ़ते है कि यूहन्ना जहां लोगों को बपतिस्मा देता था वहां पानी बहुत अधिक था। (यूहन्ना 3:23)।

यीशु ने पानी में बपतिस्मा लिया था। (मत्ती 3:13-17)। शाऊल को कहा गया था कि ''उठ खड़ा हो और बपतिस्मा ले।'' (प्रेरितों 22:16)। पौलूस यह भी कहता है कि बपतिस्में के द्वारा हम यीशु में प्रवेश करते हैं। (रोमियों 6:3,4)। तथा यीशु में आने पर हम नई सृष्टि बन जाते हैं। (2 कुरि. 5:17)। इसका अर्थ है जल से जन्म लेना।

दूसरी बात हम देखते हैं कि यीशु जिस जन्म के विषय में बात कर रहा है उसमें आत्मा का कार्य शामिल है। उसने कहा था, ''जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।'' (यूहन्ना 3:5)। जैसा कि हम देख चुके हैं कि जल से जन्म लेने का अर्थ है बपतिस्मा लेना, परन्तु आत्मा इसमें किस प्रकार से कार्य करता है? वास्तव में आत्मा तथा जल से जन्म लेना ऐसी क्रिया है जो आपस में जुड़े हुए हैं। यह बात एक दूसरे के

बिना अधूरी है। इस बात को समझने के लिये हम 1 पतरस 1:22, 23 पढ़ेंगे जहां मसीहीयों से बात करते हुए वह कहता है, ''सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।'' सो इसका अर्थ यह हुआ कि फिर से जन्म लेने के लिये जनम लेना आवश्यक है और वो भी नाशमान नहीं परन्तु अविनाशी बीज के द्वारा। अब यह वचन हमे किसने दिया है? हम देखते हैं कि आत्मा ने हमें वचन दिया है। यीशु ने कहा था, ''आत्मा तो जीवन दायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैंने तुम से कहीं है वे आत्मा है, और जीवन भी (यूहन्ना 6:63)। फिर यीशु ने अपने चेलों को यह आज्ञा दी कि सुसमाचार, अर्थात वचन का प्रचार सारे संसार में किया जाये। (मरकुस 16:15)।

जब कोई इस वचन को सुनता है तो वह इस पर विश्वास करता है। (रोमियो 10:17) तथा वचन के इस ज्ञान पर फिर वह कार्य करता है तथा वचन को मानकर वह बपतिस्मा लेता है और तब प्रभु उस व्यक्ति का उद्धार करता है। यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जायेगा।'' (मरकुस 16:16)।

प्रश्न फिर वही हमारे सामने आता है कि जल और आत्मा से जन्म लेने का क्या अर्थ है? इसका साधारण सा उत्तर है कि आत्मा वचन के द्वारा एक व्यक्ति को यीशु में विश्वास दिलाने के लिये अगुवाई करता है, ताकि वह विश्वास करके, अपना मन फिराये, यीशु का अंगीकार करे कि वह परमेश्वर का पुत्र है तथा पानी की कब्र में बपतिस्मा ले, और ऐसा करने पर वह जल और आत्मा से जनम लेता है। इस क्रिया में जल और आत्मा दोनों शामिल है। अब क्या इसका अर्थ यह हुआ कि आत्मा किसी आश्चर्यजनक तरीके से किसी का

उद्धार देने में सहायता करता है? इसका उत्तर नहीं में है। यहां उद्धार किसी आश्चर्यजनक तरीके से नहीं बल्कि परमेश्वर के आत्मिक नियम अनुसार होता है। जब कोई प्रभु की आज्ञा को सुनता है तथा उसका पालन करता है तब उसका उद्धार होता है। जो लोग उसकी आज्ञा को नहीं मानते उनका उद्धार नहीं होता।

बाद में हम यह भी पढ़ते हैं कि जो शरीर से जन्मा वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा वो आत्मा है। अर्थात इसका अर्थ यह है कि आत्मिक जन्म के नियम है तथा शारीरिक जन्म के भी नियम हैं। इन दोनों में जन्म होता है यानि एक जन्म आत्मिक है और दूसरा शारीरिक है। हम कई बार नहीं समझ पाते कि यह कैसे होता है परन्तु यह इसी प्रकार से होता है। वह उदाहरण देकर कहता है कि हम हवा को देख नहीं सकते परन्तु उसके परिणाम को देख सकते हैं। और ऐसे ही हम आत्मा तथा उसके कार्य को नहीं देख सकते कि वह किस प्रकार से कार्य करता है, किस प्रकार से जब कोई व्यक्ति वचन को सुनता है तो उसे विश्वास होता है परन्तु उसके परिणाम को हम देख सकते है। यह होता है नया जन्म और यह सब कार्य आत्मा द्वारा होता है। क्या आपका नया जन्म हुआ है? यदि नहीं तो प्रभु में विश्वास करके उसकी आज्ञाओं को मानकर बपतिस्मा लीजिये।

पाठ-20
''और विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे''

हमारा अध्ययन पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में चल रहा है। इस पाठ में यीशु के इन शब्दों के विषय में हमारा अध्ययन होगा जब उसने अपने प्रेरितों से कहा था, कि ''विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे।''

यीशु अपनी मृत्यु, गाड़े जाने तथा जी उठने के पश्चात स्वर्ग में जाने से पूर्व अपने 11 चेलों के साथ एक स्थान पर दिखाई दिया और वहां उसने उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलहाना दी तथा उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा; परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। और विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेगें। नई-नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं, तो भी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बिमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे। निदान प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दहिनी ओर बैठ गया। और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, प्रभु उन के साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।'' (मरकुस 16:15-20)।

आज कुछ ऐसे लोग हैं जो यह विश्वास करते हैं कि सब मसीही या कुछ मसीही लोग दुष्ट आत्माओं को निकाल सकते हैं, नई-नई भाषा बोल सकते हैं, ज़हरीले सांपों को उठा सकते हैं और उन्हें कुछ भी हानि नहीं होगी, विष पी सकते हैं और तौभी उन्हें कुछ हानि नहीं

होगी तथा बिमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा कर सकते हैं। अपनी इस बात को उचित ठहराने के लिये वे मरकुस 16:17, 18 का वर्णन करते हैं। परन्तु जब यीशु इस बात को कह रहा था तो क्या वह सारे मसीहीयों के विषय में बोल रहा था?

मैं सोचता हूं कि बहुत सी बातें हैं जिन्हें हमें मध्य नज़र रखकर इन बातों या आश्चर्यकर्मों के विषय में विचार करना चाहिए अर्थात इसका क्या अर्थ है, जब वह कहता है कि विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे? सबसे प्रथम हमें याद रखना चाहिए कि यीशु ने अपने प्रेरितों से यह वायदा किया था कि वह उनके लिये एक सहायक भेजेगा तथा पवित्र आत्मा द्वारा उनका अर्थात प्रेरितों का बपतिस्मा होगा। (यहून्ना 14:26; लूका 24:49; प्रेरितों 1:8)। प्रेरितों को यह अधिकार तथा सामर्थ दी गई थी कि वे कुछ चुने हुए मसीहीयों के उपर हाथ रखें ताकि उन्हें भी यह सामर्थ मिल सके। (प्रेरितों 6; प्रेरितों 19)। परन्तु पूरे नये नियम में हम कहीं पर भी नहीं पढ़ते कि सब मसीहियों को पवित्र आत्मा की सामर्थ दी गई थी। इसका अर्थ यह हुआ कि आज ऐसे मसीही विद्यमान नहीं है जो आश्चर्यकर्म कर सकने के योग्य हो सकें। आज बहुत से हैं जो यह सामर्थ रखने का दावा करते हैं परन्तु आज तक उन्होंने एक भी आश्चर्यकर्म नहीं किया है। ऐसे लोग धोखे में हैं तथा वे उन्हें भी धोखा देते हैं जो उनके पीछे चलते हैं।

दूसरी बात यह है कि यदि यीशु की यह बात ''कि विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे'' सब मसीहीयों पर लागु होती हैं, तब प्रेरितों ने क्यों कुछ मसीहीयों पर हाथ रखें ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके? क्योंकि जब वे मसीही बने थे तब उनके पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं थी परन्तु प्रेरितों के हाथ रखने पर उन्हें यह सामर्थ मिली थी। इसके पश्चात उदाहरण के लिये हम देखते हैं कि फिलिप्पुस सामरिया नगर में गया ताकि वहां यीशु का प्रचार करें। और हम यह भी पढ़ते हैं कि लोगों ने उसकी बातों को ध्यान से

सुना। हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, ''और जो बातें फिलिप्पुस ने कही थी उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई, और बहुत से झोले के मारे हुए और लगड़े भी अच्छे किए गए और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ।'' (प्रेरितों 8:6-8)। अब फिलिप्पुस को जो कि एक प्रचारक था यह सामर्थ कब मिली थी? जब प्रेरितों ने उस पर तथा 6 और अन्य मसीहीयों पर हाथ रखे थे। इससे पहिले जब उन्होंने बपतिस्मा लिया था तब उन्हें पवित्र आत्मा का दान मिला था, (प्रेरितों 2:38), अर्थात उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं मिली थी और यह लोग पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण भी थे (प्रेरितों 6:3) तथा प्रेरितों द्वारा हाथ रखने से इन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिली थी।

तीसरी बात यह है कि यीशु की यह बात कि ''विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे'' यदि सब विश्वासियों के लिये हैं तब इसका अर्थ यह हुआ कि उस समय के विश्वासियों से लेकर अब तक जो विश्वासी हैं उन सबके पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ होनी चाहिए। यानि उनके अनुसार आज सब विश्वासी नई-नई भाषा बोल सकते हैं, जहरीले सांपों को उठा सकते हैं, ज़हर भी पी सकते हैं और उन्हें कोई हानि नहीं होगी, दुष्टात्माओं को निकाल सकते हैं तथा आश्चर्यकर्मों को कर सकते हैं। जो ऐसा दावा करते हैं वे धोखे में हैं क्योंकि वे स्वयं जानते हैं कि वे ऐसा नहीं कर सकते। कई बार वे यह कहकर बात को टाल देते हैं कि तुम्हारा विश्वास बहुत कमज़ोर है। वे कहते हैं कि यह चमत्कार हम नहीं कर रहे परन्तु प्रभु इसे कर रहा है। जब वे चमत्कार करने में असमर्थ होते हैं तब वे यह भी कहते हैं कि प्रभु की परीक्षा मत लो। परन्तु बाइबल कहां इन बातों को सिखाती है? यदि प्रभु सब विश्वासियों को यह सामर्थ देता तो सब इन कार्यों को कर सकते थे। हां, प्रेरितों ने यह अद्भुत कार्य किये थे और जिन पर उन्होंने हाथ रखे थे वे भी यह कार्य कर सकते थे। एक बार प्रेरित

पौलुस को सांप ने काट लिया था, और जो लोग इस घटना को देख रहे थे वे सोच रहे थे कि वह अवश्य मर जाएगा। परन्तु उसे कुछ नहीं हुआ, अर्थात सांप के काटने से वह नहीं मरा।

उसने झटके से सांप को आग में फेक दिया। (प्रेरितों 28:1-10)। कई स्थानों पर लोगों ने अपनी ही चंगाई की सभाओं में सांपों से छोड़खानी करने की कोशिश की थी परन्तु वे मर गए। ऐसे भी हैं जिन्होंने ज़हर पीने की कोशिश की थी परन्तु वे मर गए।

चौथी बात यह है कि इन सब बातों को ध्यान में रखकर यदि आप मरकुस 16 अध्याय को संदर्भ के साथ देखें तो आपको पता चलेगा कि यीशु यहां अपने प्रेरितों से बात कर रहा था। उन्हें बता रहा था कि उनका क्या कार्य होगा? जब उसने कहा था कि, ''विश्वास करने वालों में'' उसका अर्थ था प्रेरितों के बारे में। सारे मसीही विश्वासियों के विषय में वह बात नहीं कर रहा था। और यदि वह सब विश्वासियों की बात कर रहा था तो सबको यह कार्य करने चाहिए। सब विश्वासी यह कार्य क्यों नहीं करते? फिर भी यीशु ने सुसमाचार प्रचार करने के विषय में कहा था कि ''जो विश्वास करेंगे और बपतिस्मा लेंगे उनका उद्धार होगा और जो विश्वास नहीं करगें तथा उसकी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे वे नाश होंगे।'' (मरकुस 16:16)। हमें यह समझना चाहिए कि यीशु ने जब कहा था विश्वास करने वालों में तो वह अपने प्रेरितों से बात कर रहा था क्योंकि उसके जी उठने के पश्चात भी उनमें से कई अविश्वास से भरे हुए थे। वह उनके विषय में नहीं बोल रहा था जो विश्वास करके बपतिस्मा लेंगे।

मेरे मित्रों हमें यह समझना चाहिए कि आज कहीं पर भी कोई ऐसा विश्वासी मसीही नहीं है जो इन आश्चर्यकर्मों को कर सके जिस प्रकार से प्रेरितों ने किया था। प्रेरितों ने जिन अद्भुत कार्यों को किया था वे थे मृतकों को जीवित करना, अंधों को दृष्टि देना, नये हाथों और पैरों को देना, जन्म के लंगड़े को खड़ा कर देना। यदि किसी के पास प्रेरितों जैसी शक्ति है तो वह अस्पताल में जाकर रोगियों को चंगा

क्यों नहीं कर देता? इसका साधारण सा उत्तर यह है कि प्रभु ने यह सामर्थ अपने प्रेरितों को देने की प्रतिज्ञा की थी, सारे विश्वासियों से यह प्रतिज्ञा नहीं की गई थी।

आज प्रभु ने अपना वचन बाईबल हमें दी है। उसकी इच्छा को हम इसके द्वारा जान सकते हैं। उसकी इच्छा को जानिये और उसमें विश्वास करके बपतिस्मा लीजिये और उसने वायदा किया है कि वह आपका उद्धार करेगा। इससे अधिक और आपको क्या चाहिए? अनन्त जीवन से बढ़कर और क्या वस्तु बड़ी हो सकती है? शारीरिक चंगाई से बढ़कर आत्मिक चंगाई कई अधिक महत्त्वपूर्ण है। मेरे मित्रो, धोखा न खाओ। अपनी बाईबल को पढ़िये, इसकी शिक्षाओं को मानिये।

पाठ-21
ईश्वरीय चंगाई

काफ़ी समय से हम पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में अध्ययन कर रहे हैं। हमारे इस अध्ययन में हम ईश्वरीय चंगाई के विषय में देखेंगे। कई लोग केवल चंगाई के विषय में ही सोचते रहते हैं तथा उनका ऐसा विश्वास है कि पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा अभी भी आश्चर्यकर्म होते हैं। उनका विषय केवल पवित्र आत्मा ही होता है।

अक्सर लोग यह प्रश्न करते हैं कि, ''क्या आप ईश्वरीय चंगाई में विश्वास करते हैं?'' मेरा उत्तर ऐसे लोगों के लिये यह होगा कि ''हां मैं ईश्वरीय चंगाई में विश्वास करता हूं परन्तु आश्चर्यचकित रूप में नहीं।'' लेकिन इसमें क्या भिन्नता है? तमाम चंगाई ईश्वर की ओर से होती है परन्तु आश्चर्यचकित रूप में नहीं। यदि हम केवल यही सोचते हैं कि परमेश्वर केवल आश्चर्यकर्म ही करता है तो हम गलती पर है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि परमेश्वर ने पिछले युग में बहुत से आश्चर्यकर्म किये। जैसे कि हमने अपने पिछले पाठों में देखा था कि प्रेरितों पर पवित्र आत्मा भेजा गया था ताकि वे आश्चर्यकर्मों को कर सकें तथा उनके पास यह सामर्थ थी कि वे दूसरों पर हाथ रखकर इस सामर्थ को उन्हें दे सकें। परन्तु नया नियम जब हमारे पास लिखित रूप में आ गया है तब आश्चर्यकर्मों का यह युग समाप्त हो गया।

जब आश्चर्यकर्म होते थे तब भी आवश्यकता अनुसार होते थे। क्योंकि प्रेरित तथा जिन पर प्रेरितों द्वारा हाथ रखे गये थे वे ही इन आश्चर्यकर्मों को करते थे और यह इसलिये होता था क्योंकि वे तमाम स्थानों पर नहीं जा सकते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि अधिकतर लोगों को ईश्वरीय चंगाई पर निर्भर होना पड़ता था तथा प्रकृति के नियम अनुसार वे चंगे होते थे।

ईश्वरीय चंगाई का अर्थ है परमेश्वर द्वारा चंगाई, परन्तु यह सब

प्रकृति के नियम अनुसार होता है। लोग अपना इलाज कराते हैं तथा परमेश्वर सहायता करता है। क्योंकि परमेश्वर ने इस संसार को तथा इसमें सारी वस्तुओं को बनाया है। उसने जड़ी बूटियों को बनाया तथा ऐसी वस्तुओं को बनाया है जिनसे विभिन्न प्रकार की औषधियां इत्यादि बनती हैं। उसकी आशीष तथा कृपा के द्वारा डॉक्टर तथा नर्सेस और बड़े अस्पताल बने हैं और वहां हम अपना इलाज करा सकते हैं। आज बड़े-बड़े ऐसे संस्थान हैं जहां डाक्टरी शिक्षा दी जाती हैं तथा ऐसे अनुसंधान है जहां दवाईयां तैयार की जाती हैं और यह सब परमेश्वर की कृपा तथा आशीष के द्वारा होता है। डॉक्टरों द्वारा बड़े-बड़े ऑपरेशन होते हैं तथा परमेश्वर की कृपा और आशीष से वे सफ़ल होते हैं। क्या यह सब ईश्वर की ओर से नहीं है? हम बिना किसी सन्देह के कह सकते हैं कि यह सब परमेश्वर की आशीष के द्वारा होता है।

यीशु ने कहा था कि वैध भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को अवश्य है।'' (मत्ती 9:12)। लूका जिसने कि प्रेरितों के काम की पुस्तक को भी लिखा था एक बहुत अच्छा वैध था (कुलु. 4:14)।

यीशु ने एक दृष्टान्त देकर कहा था कि एक यहुदी यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, और मार्ग में डाकुओं ने घेरकर उसके कपड़े उतार कर और उसे मारपीटकर उसे अधमरा छोड़ दिया। जब उस मार्ग से दो धार्मिक गुरु गुज़रे वे उसे देखकर कतराकर चले गये। परन्तु वहां से एक सामरी व्यक्ति गुज़र रहा था उसने उस पर तरस खाया और उसके घावों पर तेल मला और दाख रस लगाकर पट्टियां बांधी और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया और उसकी सेवा टहल की। परन्तु प्रश्न यहां यह उठता है कि उसने उसके घावों पर तेल और दाखरस क्यों लगाया? यह उसने इसलिये किया क्योंकि इसके द्वारा उसके घाव ठीक हो सकते थे। जब आश्चर्यकर्मों का युग था तब प्रेरित पौलूस ने तीमुथियुस से कहा था कि ''भविष्य में केवल जल ही का पीने वाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार-बार बीमार

होने के कारण थोड़ा-थोड़ा दाखरस भी काम में लाया कर। (1 तीमु. 5:23)। पौलुस ने तिमुथियुस को आश्चर्यकर्म करके सही क्यों नहीं कर दिया? प्रभु यीशु तथा प्रेरितों ने सबकों चंगा नहीं किया अर्थात उनका कार्य केवल चंगाई करना नहीं था। वे जगह-जगह घूमकर चंगाई सभायें नहीं करते थे। लोग उनके द्वारा चंगे होते थे तथा आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य था लोगों में विश्वास उत्पन्न करना और जैसा हम मरकुस 16:20 में पढ़ते हैं कि यह वचन को दृण करने के लिये किये जाते थे। अब जबकि, प्रभु का वचन दृण हो चुका है तथा अब लोगों में विश्वास प्रभु का वचन सुनने से होता है (रोमियों 10:17) इसलिये आश्चर्यकर्मों की अब कोई आवश्यकता नहीं है।

अब हम यह देखते हैं कि इसमें प्रार्थना का क्या योगदान है? क्या हम बीमारों के लिये इसलिये प्रार्थना करते हैं क्योंकि हम आश्चर्यकर्म देखना चाहते हैं? यदि आश्चर्यकर्म आज नहीं होते तब प्रार्थना करने का क्या उद्देश्य है? मैं यहां बताना चाहता हूं कि हमारा प्रार्थना में बहुत भरोसा है। मेरा यह पूरा विश्वास है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है तथा उनका उत्तर भी देता है। परन्तु वह यह किस प्रकार से करता है? क्या वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर आश्चर्यकर्म करके देता है? अब एक पिता और बच्चों में क्या तालमेल होता है? जब बच्चे अपने पिता से कुछ मांगते हैं तो पिता क्या आश्चर्यकर्म करके उन्हें उत्तर देता है? हम जानते हैं कि ऐसा नहीं होता। तब किस प्रकार से वह अपने बच्चों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है? वह प्राकृतिक तरह से प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। वह हमारी ऐसी विनतियों का जवाब देता है जिनकी हमें आवश्यकता है। परमेश्वर हमारा पिता है। वह हमसे प्रेम करता है। वह यह भी जानता है कि कौन सी वस्तु या बात हमारे लिये सही नहीं है। यदि किसी बात में हमारी अच्छाई है तो वह अवश्य हमारी सहायता करेगा।

यीशु ने कहा था, ''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूढ़ों तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई

मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है? और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे तो वह उसे पत्थर दे? वा मछली मांगे तो उसे सांप दे? सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?'' (मत्ती 7:7-11)। अब क्या प्रभु को अपने बच्चों की प्रार्थनाओं का जवाब देने के लिये हर बार क्या कोई आश्चर्यकर्म करने की आवश्यकता है? बिल्कुल नहीं।

हम रोटी के लिये दुआ करते हैं और परमेश्वर हमें बदले में अच्छा स्वास्थ देता है तथा बुद्धि देता है कि हम काम कर सकें और अपने परिवारों का पालन-पोषण कर सकें। परमेश्वर हमारे हाथ में आश्चर्यकर्म करके रोटी नहीं रख देता। वह सामर्थी है और ऐसा कर सकता है परन्तु वह ऐसा नहीं करता। यदि हम या हमारा कोई प्रियजन अथवा मित्र बीमार पड़ जाता है तो हम परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं कि वह उसे चंगा कर दे। परन्तु याद रखें कि उसने हमें दिमाग दिया है ताकि हम डॉक्टर के पास जायें और अपना इलाज करवायें, जब हम ऐसा करते हैं तो हम ठीक हो जाते हैं परन्तु बात यह है कि हमें किसने चंगा किया? क्या परमेश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं का जवाब दिया? क्या यह सब अपने आप हो गया? हम जानते हैं, ''कि परमेश्वर ने ठीक होने में हमारी सहायता की और अपनी आशीष के द्वारा हमें भला चंगा किया।''

यीशु ने कहा था, परमेश्वर हमारे मांगने से पहिले जानता है कि हमें किस वस्तु की आवश्यकता है? (मत्ती 6:8)। यूहन्ना कहता है, ''और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है वह यह है, कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है। और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है''। (यूहन्ना 5:14-15)।

हाँ, परमेश्वर चंगा होने में हमारी सहायता करता है परन्तु आश्चर्यकर्म करके नहीं। उसे अपनी सामर्थ दिखाने के लिये कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। उसने कई बार कई लोगों पर अपनी सामर्थ को दिखाया है। परन्तु आज वह प्राकृतिक नियमों द्वारा हमें चंगाई देता है जैसा उसने अपने वचन में बताया है। उसने हमसे प्रतिज्ञा की है यदि हम उसके सुसमाचार को मानें, तथा बपतिस्मा लें तो वह हमारे सब पापों को क्षमा करेगा और हमें अनन्त जीवन देगा। हम परमेश्वर पर अपनी इच्छा को थोप नहीं सकते बल्कि उसके सामने नम्र बनकर उसकी इच्छा को पूरी होने दें।

पाठ-22
आत्मा की एकता

पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में हमारा यह अध्ययन चल रहा है और अपने इस अध्ययन में हम पवित्र आत्मा की एकता के विषय में देखेंगे।

प्रेरित पौलूस ने इफिसुस में मसीहीयों को यह शब्द लिखे थे, ''सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूँ तुम से बिनती करता हूँ, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सबके ऊपर और सबके मध्य में, और सबमें है। (इफिसियों 4:1-6)।

यहां पौलूस आत्मा की एकता के विषय में बात कर रहा है। वह कहता है कि एक ही आत्मा हैं। आत्मा एक व्यक्ति है, परमेश्वरत्व का एक भाग है। (रोमियों 1:20), परमेश्वर पिता तथा परमेश्वर पुत्र एक साथ जुड़े हुए हैं। अर्थात इनमें एकता है।

परमेश्वरत्व में प्रत्येक का अपना एक भाग है अर्थात प्रत्येक का अपना एक कार्य है। जब पवित्रशास्त्र लिखा जा रहा था तब पवित्र आत्मा ने लिखने वालों की इसे लिखवाने में अगुवाई की थी। इसलिये हमारे पास आज परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा लिखवाया गया वचन है। (2 पतरस 1:20, 21; 2 तीमुथियुस 3:16-17)।

पवित्रशास्त्र आत्मा द्वारा लिखवाया गया वचन है या आत्मा द्वारा दिया गया सत्य है। (यूहन्ना 14:17, 15:26, 16:13)। पौलुस ने इसे आत्मा की तलवार भी कहा है। (इफिसियों 6:17) इब्रानियों का

लेखक इसके विषय में कहता है, ''सो हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो कि कोई जन उन की नाईं आज्ञा न मानकर गिर पड़े। क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, गाँठ, और गूदे-गूदे को अलग-अलग करके वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।'' (इब्रानियों 4:11-12)।

आत्मा का वचन जो परमेश्वर का वचन है पूर्णतया एकता में है। परमेश्वर का वचन बाइबल पूर्ण रूप से पूरा है तथा हमारे लिये यह उसका फाइनल अधिकार है। इसके द्वारा परमेश्वर जो हमसे कहना चाहता था उसने कहा। उसके अपने शब्द आपस में विरोधाभाष नहीं करते। और न ही यह किसी को कुछ करने को कहेगा और किसी को कुछ और करने को कहेगा। न ही इस वचन में हमें कुछ जोड़ना है और न घटाना है। (प्रकाशितवाक्य 22:18,19; 2 यूहन्ना 9-11)। प्रेरित पौलूस ने कहा था कि उसने एक सच्चे सुसमाचार का प्रचार किया है और यह पवित्र आत्मा की अगुवाई के द्वारा हुआ है तथा वह कहता है कि यदि कोई किसी दूसरे सुसमाचार का प्रचार करता है तो वह स्रापित हो चाहे वो कोई स्वर्गदूत भी हो। (गलतियों 1:6-9)।

आत्मा ने इस वचन में अपना स्वास फूंका है और इसलिये जब कोई अपने मन में इसे ग्रहण करता है, अर्थात इस पर विश्वास करता है, तथा इसकी आज्ञाओं को मानता है तब उसका उद्धार होता है तथा उसके पाप क्षमा हो जाते हैं। पतरस ने इस बात को बड़ी सुन्दर तरह से कहा था, वह कहता है, ''सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है तो तन-मन लगाकर एक-दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। (1पतरस 1:22-23)।

यीशु ने बीज बोने वाले का दृष्टान्त देकर कहा था कि किस प्रकार से बीज जो कि परमेश्वर का वचन है अलग-अलग प्रकार की भूमि

पर गिरा था। कुछ तो अच्छी भूमि पर गिरा, अर्थात अच्छे मन के लोगों ने वचन को ग्रहण किया। तथा इसका परिणाम यह हुआ कि यह अच्छा फल लाया। (मत्ती 13) हम जानते हैं कि इस बीज में जीवन था, और इसको जीवन आत्मा के द्वारा मिला था और यह परमेश्वर का वचन है।

प्रेरित पौलूस ने कहा था, ''क्योंकि हम सबने क्या यहुदी हो क्या यूनानी, क्या दास क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सबको एक ही आत्मा पिलाया गया।'' (1 कुरि. 12:13)। पौलूस यहां पवित्र आत्मा के बपतिस्में की बात नहीं कर रहा है, परन्तु वह यह सिखाने का प्रयास कर रहा है कि आत्मा अपनी शिक्षा के द्वारा हमारी अगुवाई करता है ताकि हम उसकी आज्ञा को मान सकें और इस आज्ञा का एक भाग है एक देह होने के लिये बपतिस्मा लेना अर्थात प्रभु की कलीसिया का एक अंग बनना। अब हमें यह बात समझने की आवश्यकता है कि आत्मा वचन के द्वारा इस प्रकार से किसी की अगुवाई नहीं करेगा कि किसी को कहेगा पानी में डूब का बपतिस्मा लो और किसी से कहेगा कि सिर पर पानी का छिड़काव करवा लो। मसीहीयत के नाम में आज बहुत सी ऐसी बातें की जाती है जिन्हें आत्मा ने करने का अधिकार नहीं दिया है।

परन्तु वचन कहता है कि जब हम देह अर्थात कलीसिया में प्रवेश करते हैं तब हम सबको एक ही आत्मा पिलाया जाता है। (1 कुरि. 12:13)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की आज्ञा मानने के पश्चात हम आत्मा में से पीते रहते हैं अर्थात आत्मा के चलाए चलते हैं जो उसका वचन है। यीशु ने कहा था कि वह जीवन का जल है तथा जीवन की रोटी है और इनमें भाग लेने से हम न प्यासे रहेंगे न भूखे रहेंगे।

अब जब तक आत्मा ने इस वचन को मनुष्य को देने का कार्य पूरा नहीं किया उसने प्रेरितों को तथा जिन पर प्रेरितों द्वारा हाथ रखे गये थे उन्हें यह सामर्थ दी कि वे आश्चर्यकर्म करें ताकि लोग परमेश्वर में विश्वास करें और उन्हें यह निश्चय हो जायें कि परमेश्वर ने उन्हें

भेजा है ताकि उसका सुसमाचार लोगों तक पहुँचाया जा सके। परन्तु जब परमेश्वर ने विभिन्न लोगों को प्रेरित किया ताकि वे उसकी इच्छा को लिख सकें, और नया नियम पूर्ण रूप से तैयार होकर कर लोगों के हाथों में जा सके और तब आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं होगी। प्रेरित पौलूस ने इस बात को बड़ी अच्छी तरह से 1 कुरिन्थियों 13 अध्याय में बताया है। आप इस अध्याय को अवश्य पढ़ें।

आत्मा की एकता को देखते हुए हमें पता चलता है कि किस प्रकार से आत्मा ने सत्य को प्रकट किया है, जिसमें पूर्णतया एकता है। मेरे मित्रों, परमेश्वर बंटा हुआ नहीं है। यीशु मसीह बंटा हुआ नहीं है। और न ही आत्मा बंटा हुआ है। परमेश्वर, यीशु तथा आत्मा एक है। वे एकता में रहकर कार्य करते हैं। और यह हमें एकता में बांधेगे और हमें एक करेंगे।

आत्मा हमें यह भी बताता है कि एक ही सुसमाचार है और उद्धार पाने का एक ही मार्ग है। यीशु ने कहा था, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकूस 16:15-16)। यदि सब लोग इस सुसमाचार को सुनेंगे, इस पर विश्वास करेंगे तथा इसको मान कर बपतिस्मा लेंगे तो सब का उद्धार एक ही तरह से होगा। प्रभु का आत्माओं का उद्धार करने का केवल एक ही मार्ग है। अर्थात एक ही तरीका है। उसने उद्धार के अलग-अलग तरीके नहीं बनायें हैं।

आत्मा हमें यह भी बताता है कि केवल एक ही बपतिस्मा है। (इफिसियों 4:5)। संसार शायद यह कहे कि बहुत सारे विभिन्न प्रकार के बपतिस्मे हैं, परन्तु आत्मा कहता है कि केवल एक बपतिस्मा है और वो है गाड़े जाना। (रोमियों 6:3, 4, तथा कुलुस्सियों 2:12)। और यह है पापों की क्षमा के लिये (प्रेरितों 2:38) मेरे मित्रों, चाहे लोग कुछ भी कहें परन्तु आत्मा कहता है कि बपतिस्मा केवल एक ही है।

आत्मा यह भी कहता है कि केवल एक ही देह यानि एक ही कलीसिया है। (इफिसियों 4:4) परन्तु मनुष्य यह कहता है कि बहुत सारी कलीसियाएँ हैं, और यह कोई अनुचित बात नहीं है। ऐसे भी लोग है जो यह दावा करते हैं कि वे पवित्र आत्मा की अगुवाई से चलते हैं, परन्तु वे ऐसी कलीसियाओं में हैं जिनके विषय में हम पवित्रशास्त्र में नहीं पढ़ते। आत्मा ने वचन में यह बात प्रगट की है कि केवल एक कलीसिया है जिसे यीशु ने बनाया था। (मत्ती 16:18) और आत्मा कभी भी लोगों को अलग-अलग कलीसियाओं में नहीं भेजेगा जिनके विषय में हम बाइबल में नहीं पढ़ते। आत्मा कभी भी लोगों को बांटने की बात नहीं करेगा। इसका अर्थ यह है कि जो लोग मनुष्यों द्वारा बनाई हुई कलीसियाओं में है वे आत्मा अनुसार नहीं चलाये गये हैं और न ही आत्मा ने उनकी अगुवाई की है कि वे इन कलीसियाओं के सदस्य बनें।

आगे हम देखते जायें तो हम आत्मा की एकता की बहुत सी बातों को देख सकते हैं तथा यह भी कि आत्मा वचन के द्वारा किस प्रकार से अगुवाई करता है। जब हम वचन अनुसार चलते हैं तब आत्मा हममें वास करता है। और केवल इसके द्वारा हम मसीह के साथ एक हो सकते हैं तथा मृत्यु तक विश्वास योग्य बने रहकर स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं। (प्रकाशित 2:10) प्रेरित पौलूस ने कहा था, ''धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।'' (गलतियों 6:7)

पाठ-23
आत्मा के फल

पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में हमारा अध्ययन चल रहा है। अभी तक इसके विषय में हम बहुत कुछ सीख चुके हैं। बहुत से प्रश्नों का हल भी हमने किया है। अपने इस पाठ में हम आपका ध्यान आत्मा के फलों पर दिलाना चाहते हैं।

शरीर के कामों का वर्णन करने के पश्चात प्रेरित पौलूस आत्मा के फलों के विषय में बात करता है। उसने इस प्रकार से कहा था, ''पर आत्मा का फल प्रेम आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं; ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। और हम यदि आत्मा के द्वारा जीवित है, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को न छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।'' (गलतियों 5:22-26) इफिसुस में मसीहीयों को लिखते हुए पौलूस ने कहा था, ''क्योंकि तुम तो पहले अंधकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाई चलो। (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई और धार्मिकता और सत्य है)। और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है? (इफिसियों 5:8-10)।

अब आत्मा का हमारे मनों में होने का क्या अर्थ है? पतरस ने कहा था कि प्रभु की आज्ञा मानने के पश्चात, हमें पवित्र आत्मा का दान मिलता है। (प्रेरितों 2:38)। इसका अर्थ यह है कि यह वो दान है जिसे पवित्र आत्मा का दान कहते हैं। (प्रेरितों 5:32)। जो सात चेले चुने गये थे तथा जिनके सिर पर हाथ रखे जाने थे, उनके विषय में लिखा है कि ''वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे।'' (प्रेरितों 6:3)।

पौलूस ने इस प्रकार से कहा था, ''सो जब हम विश्वास से धर्मी

ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें। जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें। केवल यही नहीं वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि कलेश से धीरज और धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है। और आशा से लज्जा नहीं होती। क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियों 5:1-5)। फिर वह कहता है, ''क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है।'' (रोमियों 14:17)।

पौलूस मसीहीयों से कहता है, ''सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं, क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया। क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं पूरी की जाएं। क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु अध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शांति है। क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है। और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं। और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप

के कारण मरी हुई है, परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा। सो हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन कांटे। क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे। इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो परन्तु ले-पालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते है। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाह देता है, कि हम परमेश्वर की संतान है। और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस है, जब कि हम उसके साथ दु:ख उठाएं कि उसके साथ महिमा पाएं। (रोमियों 8:1-17)।

इस बात को समझते हुए कि आत्मा मसीहीयों में किस प्रकार से कार्य करता है, पौलूस कहता है, ''इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर-भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है। और मनों का जांचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है। (रोमियों 8:26, 27)।

प्रेरित पौलूस ने तीतुस को लिखते हुए कहा था, ''क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि और आज्ञा न मानने वाले और भ्रम में पड़े हुए, और रंग-रंग के अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे और बैर-भाव और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे। पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की

कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रगट हुई तो उसने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला। जिससे हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बने।'' (तीतुस 3:3-7)।

फिर से हम यह देखना चाहेंगे कि आत्मा हमारे अन्दर होने का क्या अर्थ है? अपने सारे पिछले बाइबल के पदों को हमने देखा था और उनसे हमने यह जाना था कि सब जो प्रभु की आज्ञा मानते हैं उन्हें पवित्र आत्मा का दान मिलता है। परन्तु यह पवित्र आत्मा का दान आश्चर्यकर्म करने के लिये नहीं है। जैसे कि एक मसीही के अन्दर परमेश्वर और यीशु वास करते हैं, वैसे ही आत्मा भी वास करता है। (1 कुरि. 8:6)।

प्रेरित पौलूस कहता है कि हमारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है। (1 कुरि. 3:16-17; 1 कुरि. 6:19, 20)।

आत्मा हमारे क्लेशों में हमारी सहायता करता है तथा परमेश्वर से हमारे लिये प्रार्थना करता है। यह जानते हुए कि हमने आत्मा की बातों को माना है, जैसा कि पवित्र शास्त्र में प्रगट हुआ है, तथा उसकी आज्ञा मानने के द्वारा, हम परमेश्वर की सन्तान ठहरते हैं।

आत्मा की आज्ञाओं को मानकर उसकी अगुवाई में चलकर हम आत्मा के फल अपने अन्दर, उत्पन्न करते हैं। पौलूस बताता है कि आत्मा के फल प्रेम आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं। इन फलों के विषय में हम भालि-भांति परीचित है इसलिये इन्हें समझने की आवश्यकता नहीं है। इन फलों को अपने अन्दर लाने के लिये किसी आश्चर्यकर्म की आवश्यकता नहीं है। जब हम परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं तब यह फल हमारे अन्दर उत्पन्न होते हैं तथा हम निरन्तर आत्मा की शिक्षा अनुसार चलते रहते हैं।

बाइबल हमें एक मसीही तथा आत्मा का उसके जीवन में क्या महत्व है इसके विषय में बड़ी स्पष्टता से बताती है। आज एक सबसे बड़ी गलतफ़हमी यह है कि लोग आत्मा के बारे में सुनकर आश्चर्यकर्म के विषय में सोचने लगते हैं। प्रेरितों के दिनों में पवित्र आत्मा ने किस प्रकार से आश्चर्यकर्मों द्वारा कार्य किया तथा आज मसीहीयों के जीवनों में भी वह कार्य करता है, अपने वचन के द्वारा परन्तु आश्चर्यकर्मों के द्वारा नहीं। हमारा पवित्र आत्मा में पूर्ण विश्वास है तथा हम यह भी जानते हैं कि मसीहीयों के जीवनों में यह किस प्रकार से कार्य करता है।

पाठ-24
पवित्र आत्मा के विरोध में पाप

पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में हमारा अध्ययन जारी है। और हमारा विषय होगा पवित्र आत्मा के विरोध में पाप।

बाइबल शिक्षा देती है: ''इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।'' (रोमियों 3:23)।

बाइबल यह भी बताती है, कि जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, अपने पापों से मन फिराते हैं, यीशु का अंगीकार करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है, तथा पानी में बपतिस्मा लेते है उनका उद्धार होता है। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। और जो लोग ऐसा नहीं करेंगे उनके पाप क्षमा नहीं होंगे। पवित्र-शास्त्र परमेश्वर की सामर्थ से दिया गया था। इसलिये परमेश्वर के वचन को इस्तेमाल करते समय हमें बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि यह मनुष्यों या प्रेरितों का वचन नहीं है परन्तु आत्मा द्वारा दिया गया परमेश्वर का फाईनल (अन्तिम) वचन है।

पवित्र शास्त्र पवित्र आत्मा के विरोध में पाप के विषय में हमें बताता है, और जो लोग यह पाप करते हैं वे न तो इस संसार में क्षमा के योग्य है और न ही आने वाले संसार में उन्हें क्षमा मिलेगी। यीशु ने इस प्रकार से कहा था, ''इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि, मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी पर-आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।'' (मत्ती 12:31-32)। और इसी बात को मरकुस भी मरकुस 3:28, 29 में बताता है।

परमेश्वर के वचन में और भी कई पद मिलते है। उदाहरण के

लिये हम देखते हैं कि यूहन्ना कहता है एक ऐसा पाप है जिसका फल मृत्यु है। उसने इस बात को इस प्रकार से कहा था, ''यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे जिसका फल मृत्यु न हो, तो बिनती करे और परमेश्वर, उसे उनके लिये जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिसका फल मृत्यु न हो, जीवन देगा: पाप ऐसा भी होता है, जिसका फल मृत्यु है: इसके विषय में मैं बिनती करने के लिये नहीं कहता। सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिसका फल मृत्यु नहीं'' (1 यूहन्ना 5:16-17)।

प्रेरित पौलुस ने इस प्रकार से कहा था, ''आत्मा को न बुझाओ'' (1 थिस्स 5:19)। इब्रानियों का लेखक कहता है, ''क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गऐ हैं। और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आने वाले युग की सामर्थ का स्वाद चख चुके हैं। यदि वे भटक जाएँ तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अनहोना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाते है और प्रकट में उस पर कलंक लगाते है'' (इब्रानियों 6:4-6)।

इब्रानियों का लेखक इस विषय पर फिर से कहता है, ''क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान-बुझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। जबकि मूसा की व्यवस्था का न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर बिना दया के मार डाला जाता था। तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रोंदा, और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा, ''कि पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा : और फिर यह कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवते परमेश्वर के

हाथों में पड़ना भयानक बात है।'' (इब्रानियों 10:26-31)।

प्रेरित पतरस ने इस प्रकार से लिखा था, ''और जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उन में फंसकर हार गए तो उनकी दशा पहली से भी बुरी हो गई है। क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इससे भला होता, कि उसे जानकर; इस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह कहावत ठीक बैठती है, कि ''कुत्ता अपनी छांट की ओर तथा धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है।'' (2 पतरस 2:20-22)।

मेरा ऐसा विचार है कि इन सब पदों में हम काफ़ी समानता देख सकते हैं। आत्मा के विरोध में पाप करना ऐसा पाप है जिसका फल मृत्यु है, आत्मा को बुझाना, यीशु को फिर से क्रूस पर चढ़ाना, जानबूझ कर पाप करना तथा फिर से पापमय संसार में वापस चले जाना, इन सब बातों के विषय में बाइबल की यह सारी आयतें हमें बताती है। दूसरे शब्दों में हम इसे इस प्रकार से भी कह सकते है कि पवित्र आत्मा की निन्दा करना तथा पवित्र आत्मा के विरोध में पाप करना, पवित्र आत्मा का तिरस्कार करना है। हनन्याह तथा सफ़ीरा ने जब पवित्र आत्मा से झूठ बोला था, उन्हें उसी क्षण दण्ड मिला तथा दोनों की मृत्यु हो गई, यह इस बात को दिखाने के लिये एक बहुत ही अच्छा उदाहरण है। (प्रेरितों 5), परन्तु पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को प्रगट करने आया था, और जब कोई व्यक्ति आत्मा का तिरस्कार करता है और वास्तव में कहना चाहिए आत्मा के वचन को स्वीकार नहीं करता तब वह यीशु के बलिदान को तुच्छ समझता है। तब उसके पास उद्धार पाने का कोई और मार्ग नहीं है। आज संसार में इस प्रकार के बहुत से लोग हैं, और यह बड़े ही दु:ख की बात है। आप और मैं कभी भी कोई ऐसा कार्य न करें जिसके द्वारा पवित्र आत्मा के वचन तथा उसमें दी गई यीशु की आज्ञाओं तथा उसके उद्धार का निरादार हो।

पाप का रूप बहुत बुरा होता है तथा मनुष्य पाप के कारण हमेशा के लिये खो जाता है। कई बार लोग परमेश्वर की आज्ञा को माने बिना इस संसार से नहीं जाना चाहते और उद्धार के विषय में सदा सोचते रहते हैं परन्तु सुसमाचार का पालन नहीं करते अर्थात् इसे टालते रहते है। परन्तु जब तक कोई इस पृथ्वी पर जीवित है और यीशु में विश्वास करता है अपने पापों से मन फिराता है, यीशु का अंगीकार करता है तथा अपने पापों की क्षमा, के लिये बपतिस्मा लेता है तब प्रभु उसका उद्धार करता है।

पवित्र आत्मा के विरोध में पाप करना एक ऐसा विषय है जिस पर विभिन्न लोगों ने कई प्रकार के निचोड़ निकाले हैं। कुछ ऐसा सोचते हैं कि पवित्र आत्मा के विरोध में यदि पाप हुआ है और यद्यपि वह व्यक्ति मन फिराना चाहता है तथा परमेश्वर की आज्ञा को मानना चाहता है परन्तु इसे, करने में काफ़ी देरी हो चुकी है। वास्तव में यह सत्य नहीं है। पिन्तेकुस्ते के दिन कुछ ऐसे लोग थे जिन्होंने आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया था, उनका उद्धार हुआ था तथा वे कलीसिया में मिलाये गये थे, और इन्हीं में से कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने में भाग लिया था और यदि उनका उद्धार हुआ था तो आपका और मेरा भी उद्धार होगा, चाहे हमने कैसा भी पाप किया हो, परन्तु उद्धार के लिये मन फिराना तथा परमेश्वर की आज्ञा मानना आवश्यक है।

प्रेरित पौलुस अपने समय को याद करता है जब वह कलीसिया को सताता था, और यह बात उसे अन्दर से बहुत तंग करने लगी तथा वह अपने को सबसे बड़ा पापी कहने लगा, परन्तु फिर भी उसने प्रभु की आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लिया और उसके पाप यीशु के लोहू में धोये गये तथा वह प्रभु के लिये एक बहुत बड़ा कार्यकर्त्ता बना (प्रेरितों 8, तथा 22 और 1 तीमुथियुस 1:15)। हां, इस बात में कोई संदेह नहीं कि यदि पौलुस को प्रभु ने क्षमा प्रदान की थी तो वह हमारे पाप भी क्षमा करेगा। कोई भी व्यक्ति यदि सच्चे मन से पापों से मन

फिराकर बपतिस्मा लेता है तो प्रभु उसके पाप क्षमा करके उसका उद्धार करेगा।

चाहे किसी ने कोई भी पाप किया हो, और यदि वह पाप की स्थिति में मर जाता है तो वह हमेशा उद्धार से वंचित हो जाएगा। बाइबल में हम कहीं पर भी नहीं पढ़ते कि मृत्यु के पश्चात् किसी को उद्धार का दूसरा अवसर मिलेगा। बाइबल शिक्षा देती है कि आज वो दिन है कि हम परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार हो जाएं (2 कुरि. 6:2; इब्रानियों 9:27)।

अन्त में मैं आपसे यही कहना चाहूंगा कि परमेश्वर के आत्मा तथा उसके वचन का तिरस्कार न करें। यीशु कहता है, ''और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं; आ और सुनने वाले भी कहे कि आ और जो प्यासा हो, वह आए'' (प्रकाशित 22:17)।

पाठ-25
तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो?

पवित्र आत्मा के कार्य की इस श्रृंखला में हमारा पाठ होगा, ''तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो?'' इसके विषय में कुछ विशेष बातों को हम ध्यान से देखेंगे।

इस अध्ययन में हम पवित्र शास्त्र में से कुछ पदों को पढ़ेंगे : ''यीशु यरुशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया, और मार्ग में उनसे कहने लगा। कि देखो, हम यरुशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे। और उस को अन्य जातियों के हाथ सौपेंगे, कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाए और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा। तब जबदी के पुत्रों की माता ने, अपने पुत्रों के साथ उसके पास आकर प्रणाम किया, और उनसे कुछ मांगने लगी। उसने उससे कहा, तू क्या चाहती है? वह उससे बोली यह कह कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दाहिने ओर तथा एक तेरे बाएं बैठे। यीशु ने उत्तर दिया, तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो? उन्होंने उससे कहा, पी सकते हैं। उसने उनसे कहा, तुम मेरा कटोरा तो पीओगे पर अपने दाहिने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं, पर जिन के लिये मेरे पिता कि ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिये है। यह सुनकर दसों चेले उन दोनों भाईयों पर क्रोधित हुए। यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, तुम जानते हो, कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं, और जो बड़े हैं; वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने। जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उसकी

सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करें; और बहुतों की छुड़ोती के लिये अपने प्राण दे। जब वे यरीहो से निकल रहे थे तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।'' (मत्ती 20:17-29)। मरकुस 10:35, के अनुसार जबदी के पुत्र थे याकूब और यूहन्ना और उनकी माता ने बिनती की कि उसके पुत्रों को यीशु के साथ ऊंची पदवियां मिले और उसके राज्य में उनका विशेष दर्जा हो। यीशु ने शीघ्र ही उसकी बात का उत्तर देते हुए कहा कि वह नहीं जानती कि क्या मांग रही हैं? वह उस बात को समझ नहीं पाई थी कि यीशु क्रूस पर दुख उठाकर अपने प्राणों का बलिदान देगा। यीशु ने पूछा कि क्या वे मेरे साथ उन दुखों को उठा सकेंगे जो मैं उठाऊंगा। और उसने उत्तर देते हुए कहा कि यदि वे दु:खों को उठा भी लें तो भी यह उसके हाथ में नहीं है कि वह उनकी इस बिनती को पूरा करे। ऐसा लगता है कि इन दो चेलों की मां अपने बेटों को ऊंची पदवियां दिलाने में अधिक शौक रखती थी और शायद ऐसा प्रतीत होता है कि या तो वह स्वार्थी थी या एक मां होते हुए ऐसा कर रही थी। परन्तु यीशु ने कहा कि मेरे राज्य में यदि लोग बड़ा बनना चाहते है तो उन्हें दूसरों की सेवा करनी पड़ेगी।

यहां जो मैं विशेष बात बताना चाहता हूं वो यह है कि कई लोग यह नहीं जानते कि वे प्रभु से क्या मांग रहे हैं अर्थात् ऐसी वस्तुओं को मांगने की बिनती करते हैं जिसका उसने वायदा नहीं किया है। मैं इस समय विशेषकर उन बातों के विषय में विचार कर रहा हूं जिनका सम्बंध पवित्र आत्मा से हैं।

उदाहरण के लिये हम देखते है कि बहुत से लोग पवित्र आत्मा के लिये बिनती करते हैं। प्रभु ऐसे लोगों से कहेगा ''क्या तुम जानते हो कि क्या मांग रहे हो? कई लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लेना चाहते हैं तथा वे यह नहीं जानते कि क्या मांग रहे हैं? लोग यह नहीं समझतें कि इस बपतिस्मे की प्रतिज्ञा सारे विश्वासियों से नहीं की गई थी। यह प्रतिज्ञा अर्थात् पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा केवल प्रेरितों से की

गई थी। (यूहन्ना 14:26; लूका 24:49; प्रेरितों 1:8)। कुरनेलियुस तथा उसके परिवार ने भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था और यह इसलिये हुआ था क्योंकि परमेश्वर यह दिखाना चाहता था कि जैसे यहुदी लोग उसे स्वीकार्य हैं वैसे ही गैरयहुदी भी उसे स्वीकार्य हैं। इस बात को बड़ी ही स्पष्टता से प्रेरितों के काम 10 तथा 11 अध्यायों में दिखाया गया है। यदि ये लोग ध्यानपूर्वक पवित्रशास्त्र का अध्ययन करेंगे तो वे कभी भी प्रभु से उस चीज़ को नहीं मागेंगे जो वह उन्हें नहीं देना चाहता।

अब कई लोग ऐसा भी सोचते हैं कि आग का बपतिस्मा आज भी प्रभु द्वारा दिया जाता है। अब इसके विषय में भी वे नहीं समझते तथा उनकी धारणा इसके बारे में भी अनुचित है। उन्हें यह समझना चाहिए कि आग का बपतिस्मा वो होगा जो भविष्य में दिया जाएगा। उस समय दुष्ट लोग आग की झील में डाले जाएंगे तथा उनका दण्ड होगा आग का बपतिस्मा। वास्तव में इस बपतिस्में की बिनती प्रभु से कोई भी नहीं करेगा क्योंकि वे जानते हैं कि इसके विषय में प्रकाशित वाक्य 21:8 में क्या लिखा है?

कई लोग प्रभु से बिनती करते हैं कि वह उनके लिये आश्चर्यकर्म करे। वे कहते हैं कि उनके पास पवित्र आत्मा की सामर्थ है इसलिये प्रभु उनके द्वारा अद्भभुत कार्य करेगा। परन्तु सच्चाई तो यह है कि उनके पास कोई पवित्र आत्मा की सामर्थ नहीं है। हम बाइबल में पढ़ते है कि केवल प्रेरितों को सामर्थ मिली थी कि वे आश्चर्यकर्म कर सकें तथा प्रेरितों ने जिनके ऊपर हाथ रखे थे वे आश्चर्यकर्म किया करते थे। (प्रेरितों 2:43; 8; 6, 7)। जबकि आज प्रेरित लोग नहीं है, और वे भी नहीं हैं जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, इसलिये आज कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो आश्चर्यकर्म कर सके। जब प्रेरित लोग आश्चर्यकर्मों को करते थे तथा वे लोग जिन पर प्रेरितों द्वारा हाथ रखे गये थे वे भी आश्चर्यकर्मों को करते थे तब सब लोग उस समय देखते थे कि वास्तव में सौ प्रतिशत आश्चर्यकर्म हुआ है। वे लोग हीलिंग सभाएं

नहीं करते थे। वे मरे हुओं को उसी समय जीवित कर देते थे, दुष्ट आत्माओं को उसी क्षण निकाल देते थे, और बिना किसी सन्देह के आश्चर्यकर्मों को करते थे। वे किसी को निराश नहीं करते थे। सब लोग चंगे हो जाते थे। दोस्तों, आज दावे तो बहुत किये जाते हैं परन्तु वास्तव में कोई आश्चर्यकर्म नहीं होता। जो लोग ऐसे दावे करते है वे नये हाथ नहीं दे सकते, किसी के सूखे हुए हाथ के स्थान पर उसे नया हाथ नहीं दे सकते, तथा किसी मृत व्यक्ति को जीवित नहीं कर सकते। ऐसे लोग शायद प्रभु से प्रार्थना करें, बिना इस बात को समझे हुए कि वे क्या मांग रहे हैं?

संसार में आज बहुत से प्रचारक प्रभु से प्रार्थना करके कहते हैं कि वह दुष्टात्मा को निकालने में उनकी सहायता करे परन्तु प्रभु उनसे कहता है क्या, ''शैतान, शैतान को निकाल सकता है?'' वास्तव में यदि प्रभु आज पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दे रहा होता तो वे उन सबको भी सामर्थ देता जो उसकी आज्ञा को मानते हैं तथा उसकी कलीसिया के सदस्य हैं, उसका नाम अपने ऊपर रखते हैं तथा उसके वचन अनुसार चलते हैं। वास्तव में प्रभु ने किसी से भी ऐसी प्रतिज्ञा नहीं की है कि वे ऐसे कार्य करें। आपको यह समझना चाहिए कि उसने यह प्रतिज्ञा अपने प्रेरितों से की थी जो उसके साथ प्रतिदिन रहते थे तथा वे उसके गवाह थे। ऐसे लोग जानते नहीं कि क्या मांग रहे हैं?

ऐसे भी कई लोग है जो प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह उनका उद्धार कर दे या प्रचारक भी उनसे कहते है कि उद्धार के लिये प्रार्थना करें परन्तु वे यह नहीं जानते कि क्या मांग रह हैं? बाईबल में हम कहीं पर भी यह नहीं पढ़ते कि पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिये किसी से कहा गया हो कि प्रार्थना करो। या प्रार्थना के द्वारा उद्धार प्राप्त होता है। जब कोई बपतिस्मा लेकर मसीही बन जाता है तथा उसके पश्चात् यदि वह पाप करता है तब प्रभु चाहता है कि वह व्यक्ति अपना मन फिराये तथा पापों की क्षमा के लिये प्रभु से प्रार्थना

करे जैसा कि याकूब 5:16 में लिखा है, परन्तु परमेश्वर की सन्तान बनने के लिये या मसीही बनने के लिये प्रभु ने आज्ञा दी है कि सुसमाचार को सारे संसार में ले जाओ और यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:15, 16)। यह बात सोचने में भी बड़ी अजीब सी लगती है कि जो लोग पवित्र आत्मा की सामर्थ का होने का दावा करते हैं उन्हें खुद यह नहीं पता कि पवित्र आत्मा ने अपने वचन के द्वारा क्या कहा है? वे प्रभु से यह भी कहते हैं कि आज हमसे बात कर और वे शायद यह सोचते हैं कि वह उनसे कोई विशेष बात कहेगा। मेरे मित्र, प्रभु ने जो उनसे कहना था वो अपने वचन के द्वारा उसने कह दिया है। यदि वह और कहने की आवश्यकता समझता तो अवश्य कहता। परन्तु जो उसने कहा वो सब पर प्रगट हुआ। वह किसी से कुछ कहेगा और किसी से कुछ और कहेगा, ऐसा नहीं है। बाइबल ऐसा नहीं सिखाती।

धोखे में मत आइये। परमेश्वर के सम्मुख जाने का हमारा पूरा अधिकार है, परन्तु इसे अंजाने में मत कीजिये और उसे कुछ ऐसा करने के लिये मत कहिए जिसका उसने वायदा नहीं किया है। बल्कि हमें यह समझना चाहिए कि प्रभु ने क्या कहा है, तथा उसकी आज्ञा माननी चाहिए। प्रभु ने वायदा किया है कि हमारी प्रार्थना को वह सुनेगा तथा उसका उत्तर देगा, परन्तु वो उसकी इच्छा अनुसार होनी चाहिए। (1 यूहन्ना 5: 14-15)।

क्या आप एक मसीही हैं? यदि नहीं तो प्रभु आपकी प्रार्थना को नहीं सुनेगा। आपको परमेश्वर की सन्तान बनने की आवश्यकता है। यदि आप उसके बच्चे नहीं है तो वह आपकी प्रार्थना को क्यों सुनेगा?

पाठ-26
''परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा''

''पवित्र आत्मा का कार्य'' की श्रृंखला के इस अन्तिम पाठ को हम देखेंगे। इस अंतिम पाठ में इससे बढ़िया और क्या बात होगी यदि प्रेरित पौलूस के इन शब्दों पर ध्यान लगाया जाये जो उसने कुरिन्थ में मसीहीयों से कहे थे, ''परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा तो, अधूरा मिट जाएगा।'' उसके अनुसार, कुछ सिद्ध आने वाला था तथा उसके आने पर जो अधूरा है वो समाप्त हो जाएगा। इस वाक्य में जिस सर्वसिद्ध की बात वह कर रहा है वो क्या है? और उसका अर्थ इस बात से क्या है जो उसने कहा था, ''कि अधूरा मिट जाएगा''? इसी विषय पर हमारा यह अध्ययन होगा।

बार-बार हमने एक बात को देखा था कि यीशु एक सहायक या पवित्र आत्मा को भेजेगा ताकि वह चमत्कारी रूप में प्रेरितों की अगुवाई कर सके तथा बिना किसी गलती के लोगों को सुसमाचार सुनाया जा सके। हमने यह भी देखा था कि कुछ चेलों को इसलिये चुना गया था ताकि उन पर हाथ रखकर उन्हें चंगा करने की सामर्थ दी जा सके। और वे परमेश्वर के इस महान कार्य को कर सकें जो परमेश्वर ने उन्हें करने को दिया था। यह सब इसलिये किया गया था ताकि लोगों को निश्चय हो सके कि वे परमेश्वर द्वारा भेजे गए हैं। और अंत में लोगों को विश्वासी बनाया जा सके जो उनके प्रचार को सुन रहे थे। अन्त में जब नया नियम पूर्ण रूप से पूरा हो गया तथा मनुष्य को दे दिया गया तब वो युग समाप्त हो गया जब आश्चर्यकर्म किये जाते थे तथा उस समय से लेकर अब तक जो लोग परमेश्वर तथा उसकी इच्छा को जानेंगे उन्हें यह सब जानने के लिये नये नियम की ओर जाना पड़ेगा। प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि विश्वास सुनने से आता है। (रोमियों 10:17)। इसलिये यीशु ने आज्ञा दी थी कि

सुसमाचार सारे संसार में ले जाया जाये। (मरकुस 16:15) परन्तु अब हम 1 कुरिन्थियो के 13 अध्याय को देखेंगे और देखना चाहेंगे कि पौलूस सर्वसिद्ध आने के विषय में क्या कहता है? और यह भी देखेंगे कि उसके आने के पश्चात आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यहां वह इस प्रकारसे कहता है, ''यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं झनझनाता हुआ पीतल और झुनझुनाती हुई झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यवाणी कर संकू, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं और प्रेम न रखूं तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है, प्रेम डाह नहीं करता, प्रेम अपनी बढ़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, कुकर्म से आनंदित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यदूणियां हो तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हों तो जाती रहेगी ज्ञान हो तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है। और हमारी भविष्यदूाणी अधूरी। परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा तो अधूरा मिट जाएगा। जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाई बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी, परन्तु जब सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं। अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है परन्तु उस समय आमने सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूंगा जैसा मैं पहिचाना गया हूं। पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।'' (1 कुरि. 13)।

इस अध्याय में प्रेम के ऊपर अधिक ज़ोर दिया गया है और

विशेषकर इसमें यह बात बोली गई है कि ''अब विश्वास आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई है, पर इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।'' परन्तु इसमें कुछ और भी वाक्य हैं जिन पर हम विशेष रूप से ध्यान देना चाहेंगे।

इस बात पर ध्यान दें जब पौलुस ने कहा था, ''प्रेम कभी टलता नहीं, भविष्यदूणियां हों, तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी, ज्ञान हो तो मिट जाएगा। प्रेरित पौलूस एक ऐसे युग में रहता था जो आश्चर्यकर्मों का युग था। वह एक प्रेरित था तथा पवित्र आत्मा द्वारा उसका बपतिस्मा हुआ था। इसलिये वह आश्चर्यकर्मों को कर सकता था। परन्तु बाद में वही प्रेरित कहता है कि प्रेम कभी नहीं टलेगा या समाप्त नहीं होगा तथा ज्ञान मिट जाएगा दूसरे शब्दों में वह यह कह रहा था कि आश्चर्यकर्मों का युग समाप्त हो जाएगा।

पौलूस आगे बढ़ते हुए इस बात को फिर कहता है, ''हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यदूणी अधूरी है।'' उसका अर्थ था कि आश्चर्यकर्मों के युग से भविष्यदूणियों के युग तक सब अधूरा था। वह कहता है कि यह अधूरी बातें थीं। अर्थात वे बातें कुछ समय के लिये थीं। यानि वे इस तरह से थीं जैसे इमारत बनाते समय लकड़ियों या लोहे के ढांचों की सपोर्ट दी जाती है। प्रभु की कलीसिया अभी हाल ही में बनी थीं। कलीसिया नई-नई बनी थी तथा बढ़ रही थी। इसके पास अभी नया नियम भी पूर्ण रूप से नहीं था जो इसके लोगों की अगुवाई कर सके। इसलिये यह आश्चर्यकर्म सहायता के रूप में कलीसिया को दिये गये थे ताकि उसकी अगुवाई हो सके।

प्रेरित पौलुस उन्हें लिखता है, ''परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा तो अधूरा मिट जाएंगा'' जिन बातों के विषय में वह कह रहा था कि अधूरी है वे आश्चर्यकर्मों से जुड़ी हुई बातें थीं जो कि थोड़े समय के लिये थीं, जब तक कि स्वतंत्रता की नई व्यवस्था नहीं आ जाती। (याकूब 1:25)। कुछ लोग शायद इसे इस प्रकार से समझाएं कि यह यीशु के आने के विषय में कहा गया है परन्तु यदि ऐसा होता तो वह यह क्यों कहता है कि सब मिट जाएगा या समाप्त हो जाएगा। और

वास्तव में यदि यह बात यीशु के आने के विषय में होती तो इसका अर्थ यह होता कि यीशु के आने के बाद यह बातें समाप्त हो जाती। परन्तु हमें समझना चाहिए कि वह यीशु के आने के विषय में नहीं बोल रहा था, परन्तु वह यह बताने की कोशिश कर रहा था कि परमेश्वर अपना नया नियम देगा। वह कह रहा था कि नया नियम आने के पश्चात इन आश्चर्यकर्मों को कोई आवश्यकता नहीं होगी, इसलिये वे समाप्त हो जाएगें। याकूब इसके विषय में कहता है, ''पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशिष पाएगा कि सुनकर, भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है।'' (याकूब 1:25)।

फिर पौलुस एक और बात का उदाहरण देता है, वह कहता है, ''जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाईं बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दी। (11 पद)। यहां पौलूस बता रहा है जब कलीसिया का बचपन था तब उसे इन आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता थी, परन्तु यह सब बालकों जैसी बातें थीं। परन्तु जब कलीसिया बड़ी हो गई तथा सियानी हो गई और उसे नया नियम अगुवाई के लिये मिल गया तब इन आश्चर्यकर्मों तथा बालकों जैसी बातों की कोई आवश्यकता नहीं है।

वह एक और बात कहता है, ''अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय आमने सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूंगा जैसा मैं पहिचाना गया हूं।'' वह यहां यह बता रहा है कि आश्चर्यकर्मों के युग में ऐसा था जैसे एक दर्पण पर धुंध जमी होती है अर्थात उसमें चेहरे को देखा ही नहीं जा सकता। पर जब नया नियम आएगा तब मैं आमने-सामने सफ़ाई से देख सकूंगा और यही बात वास्तव में याकूब बता रहा है याकूब 1:22-25 में। वह कहता है अभी हम थोड़ा जानते हैं पर समय आने पर सब कुछ जान लेंगे।

मित्रों, यीशु का नया नियम आने के पश्चात आश्चर्यकर्मों का युग समाप्त हो गया है। परमेश्वर ने पूर्णरूप से अपनी इच्छा को मनुष्य पर प्रगट कर दिया है, और यदि कोई उसकी इच्छा को जानना चाहता है तो उसे नये नियम की ओर जाना चाहिए। परमेश्वर मनुष्य से अलग से बात नहीं करता तथा अपनी इच्छा से अलग होकर बात नहीं करता। आज बहुत से यह प्रचार करते हैं कि उद्धार पाने के लिए उनके पीछे-पीछे प्रार्थना को बोलें जबकि बाइबल में हम कहीं पर भी ऐसा नहीं पढ़ते।

क्या आप बाइबल में कहीं पर ऐसा पढ़ते हैं कि पतरस, पौलुस या कोई और प्रचारक लोगों से कहता है कि उद्धार पाने के लिये सामने आओ तथा मेरे पीछे यह प्रार्थना बोलो। परमेश्वर के वचन में ऐसी कोई भी प्रार्थना या उदाहरण नहीं है। जो मसीही नहीं हैं उनसे कहीं भी यह नहीं कहा गया था कि उद्धार के लिये प्रार्थना करें।

मेरी आपसे बिनती है कि धोखे में न आयें। परमेश्वर में तथा यीशु में विश्वास करें तथा पवित्र आत्मा द्वारा दिये गये वचनों में विश्वास करें। अपने नये नियम को पढ़िये। अपने पापों से मन फिरायें, यीशु का अंगीकार करें, तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। प्रभु आपका उद्धार करेगा। आपको अपनी कलीसिया में मिलायेगा। वह आपसे यही चाहता है।

अन्त में, मैं यह कहना चाहुंगा कि पवित्र आत्मा के विषय में इन पाठों का अध्ययन करना मुझे बहुत अच्छा लगा। आत्मा अपना कार्य करता है, परन्तु केवल वचन के द्वारा। पवित्र आत्मा आश्चर्यकर्मों के द्वारा आज कार्य नही कर रहा है। परमेश्वर तथा यीशु की इच्छा को जानने के लिये हमें नये नियम की ओर जाना है। आईये पवित्र आत्मा द्वारा दिये गये वचनों को पढ़कर हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करें।